नाहटाजी रै माध्यम सूं श्री पू ँ जबो मल। प्रभावित हुया अर वरी बखत वां राजस्थानी पोथ्यां रै प्रकासण सारू रु) प्रदान करया अर भविस्य मे भी पूरो सहयोग देवण रो आस्वासन दियो।

श्री श्रीलाल नथमलजी जोसी री ग्रन्थ 'सबड़का' इण रूप सूं प्रकासित हुवण मायली पैली पोथी है। 'सबड़का' खासतौर सूं हास्यरस री पोथी है। हास्यरस रो इण हिन्दी मे भी प्रभाव है, इण कारण परिषद ने इण बात रो पूरो भरोसो है के जोसीजी री आ रचना राजस्थानी समाज तो घणी चाव अर कोड सूं पढसी ई पण राजस्थानी सूं नेडी दूजी भासावां, (हिन्दी गुजराती पंजाबी आदि) बोलणियां लोगां में भी दाय आसी।

'सबड़का' पछै एक और मोवणी पोथी पाठकां री सेवा मे परिषद हाजर करसी— 'दर्शनमाळा' जिण मे प्रसिद्ध साहित्यकार श्री मुरलीधरजी व्यास री लेखणी सूं कोरयोडी काव्यमो कहाणी रचनावां है।

परिषद रो उद्देस्य राजस्थानी भासा रो प्रचार मात्र है इणी कारण प्रकासणां रो मोल कम-सूं कम राख्यो गयो है। आसा है के राजस्थानी पाठक भी प्रकासणां रो घणो आदर करसी अर बीजी पोथ्यां प्रकासित करण सारू परिषद नै प्रोत्साहित करसी।

भंवरलाल नाहटो
मंत्री
राजस्थानी साहित्य परिषद
कलकत्तो

प्रस्तावना

अंगरेजी मे जिण नै 'स्केच' कैवै उणी नै हिन्दी मे 'रेखा-चित्र' अर राजस्थानी में रेखाचित्तर कैवै। साहित में रेखाचित्तर लिखारा अपणा आपरै बणाव आली ई बीजरा रै केई मन रो बरणन उणी तरीकै सू करै जिणो चितारो आपरै चितराम मे चितारै। रेखाचित्तर रो विसै कोई भी होय सकै है। इण में केई मिनख, लुगाई जिनावर, पंखेरू, रू ख, हवेली गांव अथवा सैर रो बरणन करयो जा सकै है। रेखाचित्तर मे सबदां सू इसो चित्तर मांडयो जावै कै पढ़ार रै सामनै वांचते थका बरणित विसै री मूरती साकार हुजावै। लिखार आपरै थोड़ै-सै बरणन में विसै रो इसो अबरो परभाव ग्रांगें कै वींनै सहजां ई विसरयो नईं जावै। लिखार जावै बरणन ना करो पण विसै आसार उण री गुमगोडी सहानुभूति भी पढ़ारा मे अवई हुय ई जावै।

रेखाचित्तर रो विसै असली भी हु सकै अर कल्पित भी हु सकै। रेखाचित्तर-कार आपरै विसै नै देख'र जावै तो उण रो साच ई बरणन कर सकै अर जावै तो दो-च्यार बरस ठैर'र कर सकै है। रेखाचित्तर मांडण मे सधड़ो बो ई'ज लिखार हु सकै जिको आपरै च्यारू-मेर री जिनगाणी आंख्यां उघाड़'र देखै जिको गुर

नाहटैजी रै माध्यम सूं भी हूं इत्ती घणा प्रभावित हुया अर इणी बगत वां राजस्थानी पोथ्यां रै प्रकासण सारू ४ ( ) प्रदान करया अर भविस्य मैं भी पूरो सहयोग देवण रो आस्वासन दियो।

श्री मोतीलाल नथमलजी जोशी रो ग्रन्थ 'लवरको' इण रूप सूं प्रकासित हुवण आळी पैली किती है। 'लवरको' खासतौर सूं हास्यरस री पोथी है। हास्यरस रो हाल हिन्दी में भी अभाव है, इण कारण परिवार नै इण बात रो पूरो भरोसो है कै जोशीजी री आ रचना राजस्थानी समाज तो घणी चाव अर कोड सूं पढसी है वण राजस्थानी सूं मिळती जुळती भासावां (हिन्दी गुजराती पंजाबी आदि) बोलणियां लोगां मैं भी चाव पासी।

'लवरको' पछै एक और सावली पोथी पाठकां री सेवा मे परिवार हाजर करसी- 'धर्मवाळो' जिण मैं प्रसिद्ध साहित्यकार श्री मुरलीधरजी व्यास री लिखली सूं ओरयोडी कहाणी छपसी रचनावां है।

परिवार रो उद्देस राजस्थानी भासा रो प्रचार मात्र है, इणी कारण प्रकासणां रो मोल कम-सूं कम राख्यो गयो है। आसा है कै राजस्थानी पाठक आं प्रकासणां रो घणो आदर करसी अर बीजी पोथ्यां प्रकासित करण सारू परिवार नै प्रोत्साहित करसी।

भंवरलाल नाहटो
मंत्री
राजस्थानी साहित्य परिवार
कलकत्तो

प्रस्तावना

अंगरेजी मे जिण नै 'स्केच' कैवै उणी नै हिन्दी मे 'रेखा-
चित्र' अर राजस्थानी मे रेखाचित्तर कैवै। साहित मे रेखाचित्तर
लिखण वाळा आपरै भराव वाली रै जीवण रै कैई अंग रो बरणन
खरी तरीकै सू करै जिया चितारो आपरै चित्राम में चितारै।
रेखाचित्तर रो विसै कोई भी होय सकै है। इण में कैई मिनख,
लुगाई, जिनावर, पंखेरू, कूवा, हवेली, गांव अथवा सैर रो बरणन
करयो जा सकै है। रेखाचित्तर मे सब्दा सू इसो चित्तर मांड्यो जावै
कै पढ़ार रै सामनै बांचते थका वरणित विसै री मूरती साकार
हुजावै। लिखार आपरै कोई-से बरणन मे विसै रो इस्यो अबरो
परभाव न्हांखै कै बींनै सहजां ई बिसरयो नीं जावै। लिखार चावै
परगट ना करो पण विसै खातर उण री मुळकोड़ी सहानुभूति भी
बढारो मे बणई हुय ई जावै।

रेखाचित्तर रा विसै मानखो भी हु सकै अर कल्पित भी
हु सकै। रेखाचित्तर-कार आपरै चित्त मे देख'र चावै तो कठा रो
साच ई बरणन कर सकै अर चावै तो दो-च्यार बरस ठैर'र कर
सकै है। रेखाचित्तर माथळ मे लखक को हीण लिखार हु सकै जिको
आपरै च्याक-मेर री जिनगाणी आंख्यां पतवाड़'र देखै जिको पुर

प्रकाशक
राजस्थानी साहित्य परिषद
४ जगमोहन मल्लिक लेन,
कलकत्तो

पैलीवार एक हजार

मोल तीन रुपिया

मुद्रक
श्री साधना प्रेस
रतनगढ़ (राजस्थान)

प्रकासकीय

आज सूं कोई पच्चीस बरसां पैली राजस्थानी भासा अर साहित्य रै प्रचार प्रसार सारू राजस्थानी साहित्य परिषद री कलकत्तै में थापना हुयी। आ पछै 'राजस्थानी ग्रन्थमाळा तथा 'राजस्थानी कहावतां' रा दो दो भाग परिषद प्रकासित करया।

बिचाळै-ली क गतिसीलता कम पड़गी। प्रचार लारलै दिनां जद भारत रा नामी सोध-विद्वान श्री अगरचन्दजी नाहटा कलकत्तै पधारया तो सेठ श्री सोहनलालजी दूगड़ री अध्यक्षता में परिषद री एक सभा हुयी।

राजस्थानी साहित्य री परिचय बतातै श्री नाहटाजी जोरदार सबदां में अपील करी कै जे आपां राजस्थान री संस्कृति नै कायम राखणी चावां हां तो आपां रो सबसूं पैलो फरज है कै आपां मायड़भासा राजस्थानी नै अपणावां। जिणै सूं राजस्थानी भारत री दूजी मानीती भासावां री गिणती में आई आसी मायड़ भासा रा प्रेमी मुख सूं साव नट नी सकसी।

श्री अगरचन्दजी बतायो कै आधुनिक राजस्थानी ग्रन्थां रो तेजी सूं निरमाण हुय रयो है अर जरूरत इण बात री है कै श्रेष्ठ ग्रन्थां नै बेगै सूं बेगा प्रकास में लाया जावै ताकि लेखकां री कलम रै काट नईं लागै अर वै मा-राजस्थानी रै भंडार नै बराबर भरता रैवै। जरूरत आ भी है कै पाठक आं ग्रन्थां नै आपरा गुरदा समझ'र अपणावै खरीद अर पढ़ै।

मारवाड़ी रै मामलां सूं श्री डूंगरजी पटा प्रकाशित हुया अर पछी बगत बां राजस्थानी ग्रंथां रै प्रकाशण साक १) प्रदान करया अर भविष्य में भी पूरो सहयोग देवण रो आश्वासन दियो।

श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी रो ग्रन्थ 'सबड़को' इण रकम सूं प्रकाशित हुवण वाळी पैली किती है। 'सबड़को' खासतौर सूं हास्यरस री पोथी है। हास्यरस री इण हिन्दी में भी प्रभाव है, इण कारण परिषद नै इण बात रो पूरो भरोसो है कै जोशीजी री आ रचना राजस्थानी समाज तो बड़ै चाव अर कोड सूं पढ़सी ई पण राजस्थानी सूं मेळ खाती भाषावां, (हिन्दी गुजराती पंजाबी आदि) बोलणियां लोगां में भी हाथ आसी।

'सबड़को' पछै एक और लोकली पोथी पाठकां री सेवा में परिषद हाजर करसी— 'मुळकतो मोती' जिण में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री मुरलीधरजी व्यास री लेखणी सूं जोरपोती कहाणियां छपसी रखमाया है।

परिषद रो उद्देश्य राजस्थानी भाषा रो प्रचार मात्र है इणी कारण प्रकाशनां रो मोल कम-सूं-कम राख्यो गयो है। आशा है कै राजस्थानी पाठक आं प्रकाशनां रो पूरो आदर करसी अर बीजी पोथ्यां प्रकाशित करण सारू परिषद नै प्रोत्साहित करसी।

भंवरलाल नाहटो
मंत्री
राजस्थानी साहित्य परिषद
कलकत्तो

प्रस्तावना

अंगरेजी मे जिण नै 'स्केच' कैवै उणी नै हिन्दी में 'रेखा-चित्र' अर राजस्थानी में रेखाचितर कैवै। साहित मे रेखाचितर लिखण वाळा आपरै न्यारा काणी रै जीवण रै कैई अंग रो बरणन अणी तरीकै सु करै जिण चितारो आपरै चितराम मे चितारै। रेखाचितर रो विसै कोई भी होय सकै है। इण में कैई मिनख, लुगाई जिनावर, पंखेरू घर हवेली गांव अथवा सैर रो बरणन करयो जा सकै है। रेखाचितर मे सब्दां सु इसो चितर मांडयो जावै कै पढ़ार रै सामनै बांचते पाण बरणित विसै री मूरती साकार हुजावै। लिखार आपरै थोड़ै-सै बरणन मे विसै री इसो सजरो परभाव न्हांखै कै बीनै सहजां ई चितरयो नई जावै। लिखार आपरै परगट ना करै पण विसै बाबत उण री लुक्योड़ी सहानुभूति भी पढ़ारां मे बखरी हुय ई जावै।

रेखाचितर रो विसै असली भी हु सकै अर कळपित भी हु सकै। रेखाचितर-कार आपरै विसै नै देख'र जावै तो उण रो ध्यान ई बरणन कर सकै, अर चावै तो दो-च्यार बरस ठैर'र कर सकै है। रेखाचितर मांडण मे सफळ वो ही'ज लिखार हु सकै जिको आपरै च्यारूं-मेर री जिनगाणी आंख्यां उघाड़'र देखै जिको खुद

काम आपणै देस सूं बारला लोक भी जाणै है। बंगला में श्री परशुराम (राज शेखर बोस) जिसा रेखा चित्तर मांड्या है, जिका लायक ई नईं चीजां लिखार लिख्या हुवेला। उर्दू में फिरत सौकत थानवी पर जमताई रै सिवाय मौलवी अब्दुल हक रो नांव भी लियो जा सकै है। गुजराती में श्रीमती लीलावती मुंशी चोखा चित्तर लिख्या है।

हिन्दी मे रेखा चित्तर लिखार मोकळा है। केई विदवान श्री पदमसिंह शर्मा सू रेखा चित्तर री सरूआत मानै। हिन्दी मे रेखा-चित्तर रै सरूप अर विकास में हुस रै 'रेखा-विधान' रो भी योग रैयो है। आजकाल रेखाचित्तर लिखारां मे श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, श्रीमती महादेवी वर्मा श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त, श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी श्री प्रमोद श्री पदमलाल, श्रीमती सत्यवती मल्लिक, श्री श्रीराम शर्मा आदि रा नांव लिया जा सकै है। आं लिखारां रै परताप हिन्दी रो रेखाचित्तर साहित घणो विगस्यो है।

राजस्थानी में गद्य साहित तो पुराणै जमानै सू ई मिलै पण रेखाचित्तर हाल तांई नहीं रै बरावर है। श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी रा रेखाचित्तर राजस्थानी गद्य साहित में घणै ऊंचै आसण रा हकदारी है। जे साच कैयो जावै तो रेखा चित्तर मांडण में जिसी सफळता जोशीजी नै मिली है जिसी राजस्थानी रै केई दूजै लिखार नै नहीं मिली। हिन्दी में जिसा रेखाचित्तर लिखीज्या है, वै "सवदरा" सू घणा न्यारै है। जोशीजी रा रेखाचित्तर ना तो श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त रै चित्तरां दांई भावक होवै, अर ना श्री बनारसी

घणा चोखा कलम मांयली मैं बाद करे इसा सिणगार जोड़ाई है। जोशीजी आपरी कलम सू समाज रै इणै वरग रा चितर खींच्या है जिको आज पैली अणछूयो पड़्यो हो। बिना संकीर्णता अर वरग-गत रै भेद-भाव आप मैं सिणगार रो व्यापार अर उदार दृष्टिकोण लियो है। 'सबड़का' राजस्थानी साहित में जोशीजी री अमोलक देन है। पाठक इण रचना रो भलो आदर करसी अर इणमें वरी ओड़ सू सफलता इसो पूरो भरोसो है।

०

बीकानेर
२७ जून १९६ ई

नरोत्तमदास स्वामी
नमूदान चारण

घर विध री

आज सूं कोई अबदै बरसां पैली जद प्रो० नरोत्तमदासजी स्वामी राजस्थानी साहित्य पीठ री साप्ताहिक बैठक श्री पुस्तकप्रकाशक सज्जनालय बीकानेर में बुलाया करता बठे हूं भी राजस्थानी री रचनावां सुणाया करतो। आ रचनावां में एक रचना ही 'फर्रामस' जिकी स्वामीजी रै दाय आयी अर बां 'फर्रामस' नै जोधपुर सूं छपणिय भाई श्रीमन्तकुमारजी व्यास रै "मारवाड़ी" छापै में भेज दियो। श्रीमन्तजी सूं मिल्या मालम पड़ी क 'फर्रामस' बानै घणो आछो लाग्यो अर बा कैयो किता ई लोक 'फर्रामस' माथै लट्टू है। श्रीमन्तजी मनै इणी तरै रा और चितराम लिखण री सला दी।

म्हारी सिराबाट री श्रा एक कमजोरी है कै जे हु सारो चितराम पोळासूं, तो ई श्री मे हूंसी-मसगरी री पुट श्रावणूं सूं मई रोक सकू। इण रो कारण श्रो है कै बाळपण सू ई श्रब मनैं उदकुदी जिनस्या माथैं हसो श्रावतो तो रुकतो कोनी। चौथी किलास री बात मनैं याद है। एक छोरो हंसावण मारू बात केह'र श्राप इण तरैं हसतो बंध हुयग्यो श्रागी लटका बध कर दियो हुवैं पण म्हारी मसीन थामू हुयगी। मास्टरजी सक करथा वैत मगावणा। पण वैता मू श्रब हसे पार पड़ सिमो ता बयाम गुरूजी वैत छेड़ै मेस दी श्रर मनें छूट दी— 'तू एक बार श्राप'र हसलैं।

दसवी किलास मे म्हारो एक साथी भूगोल रै वटै मे मूडो भीच'र सिव गुजावतो। (साथी रो नाव बताऊं कोनी मनैं सेठ हुयग्यो सायद रीसाणो हुजावें।) सिव गरजाम'र श्राप इसो भोळो बण'र बैठ्यो श्रागैं गरजवण श्राळो कोई बीजो है। इण सू म्हारो हंसो सरू हुय जावतो। हु रोकतो पूरी कोसीस कर-कर, पण श्राखर हम इसो लागतो कै मनैं फटाकै दई हंसो 'फट' फाटगी। निरी बार तो मास्टरजी रै डर सू बारैं निकळ जावतो पण कदेई-कदेई सीट माथै फटाको

मोल आंवतो ।

आ कमजोरी हास म्हारै में दिसी ई है । हंसो सरू हुयां पछै वीनै रोकणो हाथ री बात कोनी । एक वार एक मीत मर्ड अफसर मार्ग बासा चवडे हसो भायग्यो भर वी पूछ लियो– 'हंसो काय रो भाव है ? पे सावा चितराम बिगड्या है तो इण मैच र कारण पे व्याग में रोवकता भायी है तो इण भादत रै कारण ।

इण भादत न टाळ'र, चितराम री सिक्षा पे कठै सू ई मिली है तो म्हारा पूजनीक माजी श्रीमती केसर बाई सू । राजस्थानी भाषा मायँ भापरो सायीडो इपकार है । जद केई रै डौळ्यै रो बखाण करसी तो नैणां भाग इसो चितर मेल देसी जिसो कमरै भयवा कळाकार री कूंची सू नईं उतरै । जदपी भापरा रेखा-चितर, हास री धवी जवानी ई है, छप्या कोनी पण वानै सुणण रो मन सदेई सौभाग रैयो । इण कारण पे केई भी चितर में कठई रोचकता भायी है, तो आ पूज माता श्री सू पायोड़ी शिक्षा रै परताप ।

जद प्रो॰ नरोत्तमदासजी बीकानेर सू बदळी मायँ

उदयपुर पधारग्या तो सारै सूं राजस्थानी री बसवास कायम राखण में श्री अगरचन्दजी नाहटा रो घणो हाथ रैयो है। म्हारी नींव भी वै वगत-वगत माथै उठावता रैया है जिण तांई हूं नाहटै जी रो आभारी हूं।

श्री नरोत्तमदासजी स्वामी अर श्री चन्द्रदानजी चारण तांई सगळी सरधा चढाऊं जिणा इण पोथी री प्रस्तावना लिखण री किरपा करी।

केसर प्रकाशनालय
बीकानेर

श्रीलाल नथमलजी जोशी

लेखक रा माजी श्रीमती केसर बाई

जनम से वदी १७ १९५ बीकानेर

पूजनीक माजी रै

पावन हाथां मैं

घणै मान

भेट

★

सबड़का

-:सूची:-

फर्रामल

हूं बीमैं मोकळा दिना सूं ओळखतो हो अर नांव ई सुण्यो– फर्रामल। मन मे विचार करतो कै इसो उदबुदो नाव कदेई सुण्यो तो कोनी पण दुनिया घणी ई बडी है अर नाव ई मोकळा है। केई आदमी रो नांव राम अथवा किसन सुणनै कदेई भे भाव का उठ्याजी कै भो आदमी मरजादा परसोतम अथवा सोळ कळा रा अंवतार है'क नी पण काइ ठा क्यूं ईरो नाव सुण'र म्हारी मा जाएन री समस्या हुयी कै भो आदमी साचेई फर्रामल यानी गप्पी बाज तो का है नीक।

अक दिन भाये संजोग सागो हुयग्यो। साथमां माय सूं अक नै फर्रामल कयो– "हूं तनै डाक्टर मचारज रै बगलै मे गुमास्तो रखाय दयूं टैम पली को हुवमी– रासी सिम्या री सात सूं रात री इग्यारै बजी तागी है। पण भई देख काम जी तोडन करणो पडसा। मदनो भी तो रपियां सौ रो है। अंनै बीन है सौ रपिया!

मौसर देखनै हूं भी बोल्यो— 'इणी नोकरी पे म्हारै हात लाग जावै तो न्याल होजाऊं हूं तो।' करतिस रै ठीक कठै ही? झट बोल्यो ई— 'तनै तो काम ई रखाम हूं, हूं तो टाइप करणो आवै है जिको साब तनै कोनायो राखसी। पण हापस रो तजरबो थारो घणो कोनी ई वास्तै तनै सौ नईं तो पिचन्तर रपिया तो पक्कायत दिराय देसूं। हूं डाक्टर साब रो पी ए (निजू सहायक) हूं। म्हारी बात नै थोड़ा ई टाळसी। काम तो रात नै ग्यार बटाई करू पण महनो रुपिया दोय सौ बीस रो देवै है।

पी ये री बात सुणनै आपमा सगळा मुळकया कै डाक्टर पधारया जिको अठै पी ये नै छोडनै सगळा सू बडो है, उणरो पी ये इसो मानखी जिण रा केस तो सूखा अर बिना रयोडा दाढी बध्योडी अर मूंढै री भवा तणयोडी येक आंख तणपाव चोवै तो दूजोडी दिसणाव बरसा में तीसा सू ऊपर गई, पण लाखा मुळमोळा बापा ई क्यू कमर ई झुकयोडी आपो जिरकायरो अर पग भाटा पडै। पढ्योडो नवमी फीस भर दिन रा अठै नोकरी करै अठै सू पचीस रुपिया महनो आवै। पी. ये री बात जची तो केई ई ई कोनी, पण सगळा जीमती माखी मिटम्या।

हूं बोल्यो— तो मनै साब रै बंगलै काम सू रखाम देसो?

फर्रामस– थारै घरे साब री मोटर सेयनै भाऊ भाज तो हूं घर तू अगलो थाप जावे जद काम सू थारी साईकल माप म्हापेई भावोकरे ।

हूं – मई, म्हारे साईकल तो है ई कोनी ।

फर्रा० – घरे भाछो सोच करयो ! थारो तीन महनां रो रजगार तो हूं तन म्हारे कन सू म्हागूंच देसू । मेक तो भालीस्यान साईकल से लिये घर मई देख थारी भा ड्रस (गाभा) ठीक कोनी । हूं रुपिया देऊं जिका में तीन सागीडा सूट करा लिये ।

हूं– इत्ता करायां पछे फेर मनै काई चाईज ?

इती बात हुया पछे भो दिन तो म्हे भाप-भापर काम गया । दूसरै दिन जद भो मिल्यो तो मैं कैयो– 'उस्ताद ! रात तो हूं मिरो भडीक्यो पण थारा तो पता ई नई ?

फर्रा०– रात तो इमो भळूल्यो काम पर्यै म क दा बजी सोवण मैं बैठ्या मिसी ।

हूं– तो भवै भाज भावणो मोटर सेयनै ?

फर्रा०– हूं टम को देसकू नी थागू जद भापेई भा जासू ।

थोड़ा दिनां पछे बा मिल्यो तो झट बोल्यो ई– "मै थार गांव सू साब मैं भरजी देयरी । उनै हूं म्हारो छोटो

भाई समझनै थारै सातर इत्ती जान मड़ाऊ हूं। पण तनै तीन दिन ताणी काम री जाच (ट्रायल) करावणी पड़सी।

हूं– म्हां तीन दिना रा पइसा तो मिलसी क ?

फर्रा – ना ना था तीन दिनां री फूटी कौडी ई को मिलैनी।

हू– काम री पारख कुण करसी ?

फर्रा पारख ! पारख हू करसू भौर कुण करसी।

हू– तो मई म्हारै दफ्तर मे ई करसै।

फर्रा०– नई, नई, मठै नई, म्हाता रै बंगलै में होसी।

हू– पारख करती वेळा म्हारो काई पत तो लेसी'क नई ?

फर्रा – पण लेऊ कोनी लागी आप रो ई, तू किसी कराटी मे है ! पण भवार जे तू पूछै तो हूं तनै दुनिया भर री बाता बता सकू हूं। म्हारै सू कोई छिपा छानी कोनी।

थोड़ा दिना पछै फर्रामस मिल्यो तो बोल्यो– 'काम री पारख तीन दिन नई, पन्द्रै दिना ताणी होसी।

सवेरै-सवेरै फर्रामस रै साथी दळियै सू बीच मसूमन्न लागम्या इण कारण मैं बात बाड़ी चालनै पूछ्या– डाक्टर

महाराज र मू पैसी सू कठै काम करतो हो ? उमळो मिल्यो– "दस बरसां सूं हूं मम्बाई म टाइप री मसीनां री कपनी म बडा अपसर हो बठै आवड्यो कोनी, जद ई मूल बीकानेर सू माथो लगावणो पड़ है।

हूं– अठ है तो थारै आराम ई ?

फर्रा – आराम काई नव धूला री रात है ? अधियै–आथणियै री तो ठा ई को पडै नी। भ्रभ्रकै पाव अजी आठ दफ्तर जिकै री रात री तीन-तीम बज जाव– अठै ई राटी अर अठै ई बाटी !

हूं– तो तू बगस री दिपटी क्यूं करै काई ?

फर्रा – बगसै री दिपटी क्यूं करू ? आ ई तो थारै में माप र कमर है। हाल तई बळ-बैटी रा सस्लण सील। मुण ममसाब री हाजरी विलोज्यान सू भरू हूं। बस इत्ते म ई समझ जा। अर मैमसाब भी म्हारै माथै रीस्योड़ी है। जे करी ई साब रै बगसै काम करण मैं मई जाऊ तो दूसी आपेई सन्को मार देवै। बौत रंगबाज लुगाई है। अर पेग मैमसाब री हाजरी तर्न भी भी तोड'र भरणी पड़सी।

हूं– काई तो मैमसाब री हाजरी डाक्टर ई भरतो होसी ?

फर्रा– डाक्टर मै बापडै मै मरण नै ई वेळा कोनी बो कोरी हाजरी भरै ?

फर्रामस रो मूडो एक दिन उतरयोडो हो। मैं पूछयो– "आज काई होग्यो ? फर्रामस फीसग्यो। म धीरज बधायी तो बोल्या– "म्हारी तो कठै ई, हडमानगढ़ का चूरू कोसीस करनै बदली करवाय देवै तो ग्यास कर।

हू– बदळी हुया पछै तू डाक्टर साब रै बंगल री दिपटी कुण करासी ?

फर्रा –बीरो सोच ई ना कर। चार महीना म जे अक दिन अठै आयग्यो तो समळा कागद फच्च-फच्च फेंक देसू पूजै पू इतो काम हुवै कोनी वो बरसा म ई।

अेक दिन हू तो म्हारै दफ्तर मे काम करतो हो अर फर्रामस बावो-बायो सास उठयोडो आयो जाण कोस अेक री दौड लगायी हुवै। बाल्यो– ले भई, हू तनै बधाई दू।

हू– काई बात री ?

फर्रा –हैमकैम मनै आवै कोनी अबाई मानसै म्हारी।

हू– थारी मकस तो ठिकाणे है'क ?

फर्रा –हलवारी! आबै रै आवै रोयनै नैण गमावणा है। देख हू तो जाऊ हू जोधपुर, पी अेम ओ रो पी अे बण'र, अर अठै म्हारी जागा विराजै हू तनै। बोल किसा'क रग देखाळया कर सकै है कोई होड म्हारी ?

हू– थारा तो नकसा इज न्यारा है।

फर्री०– थोथी वाता सू हूं राजी को हुवूनी। थाम सामली दुकान भर तू पी म हुयो जिनै री बधाई में मिठाई लुवा।

हू– भर भला माणस ! स मन हाल तांई कोई सिग्योड़ो हुकम ता देखाळ्यो ई कोनी भर पैसी मीठो मागण लागग्यो ? साची वात तो आ है क मनै तू कैवे जिक में काई गोळ लाग है।

फर्री०– भर बात कैयदे मीठो लुवासी क नई ?

हू– बिना हुकम देखे किया लुवाऊ ?

फर्री – म्हारी बात री कोई मनद ई कोनी ?

हू– अब म्यू समझ।

फर्री – ता थारै ग्यानर नोकरी चोवरी को है नी। तू हुक्नार सू डो चोब है।

इत्तो कय र फर्रीमल रीसाणो-सो व हुमनै टुरग्यो। आ पछै मिल तो मदेई है पण बोम कर्ई कोनी। मनै पमताबो भी हुयो कै मन एपट्टी री पाव मिठाबडी मट्टै लीबडा त पी मे री नोकरी हाल सू ममाय बी पण ओर काई हुवे ? मीर-सेस्वार इसा ई हा।

भरे क्यू फालतू गैमायो कर, तने कुण भोळायो हो लगादो म तो भरे बैठो भाबो वेवण भाळ्य है। रमतिये नै रीस भायगी। तौर बदळ्म बाप सू बोल्यो– काकाजी! थे म्हारी बीत कम्सल्ट (इन्सल्ट रै बदळ) करदी। थे किसा सदैई घरी रैसो थाने सौ बरस पूग्यां तो ओ काम मनै ई सांभणो पड़सी!

बाप ऊपर बेंमसा पट्टा धंटायोड़ा राखता। दाढ़ी भापेई कर लेंवतो। एक दिन पाछणो सफा मोठो हो। बाप सोच्यो– ई नै कठैई बसामनै तो देखां। सिराड़ सू ऊपर, माथे रै पाछणो बसाय'र देख्यो। पाछणो ई मसखरो हो झट चालम्यो अर रमतिये रै माथै में घूसो कढ़म्यो।

छोरी जे भणी-गुणी हुवै तो भी ब्याव सोरो नई हुवै पण छोरो किसोई हुवो जिण म रमतियो तो भसवत पढ्यो-लिख्यो हो फेर बीनण्या रा काई घाटा? जद परणीजण सारू सासरै जावण लाग्यो तद आयेसा भात-भांत री सल्ला दी जिकी बी हिरदै म टूकली। बईर हुवण लाग्यो तो मां भी कैयो– देख रमतू! तू बोलै घणो है। सासरै में थे लपर-चपर करैसो तो लोग ट्का मिळीसा। बिना बतळाये नई बोलणो। सासरै में बो बार बतळायां

एक बार बोलणो ।

सासरै गयो साणीडी मिजमानी हुयी । भवै रमतियो कठै मावतो । सगळै माएता मे कैवतो— 'परण तो समळ ई है पण म्हारै सामरै जिसो सासरो भर इसी धूमधाम सू हुयोड़ो ब्याव देख्यो हुवै तो बतावो । माएमां कैयो— ब्याव तो माव रात रा होसी बण सू पैली ई थारो तो मावो भरक बड़ग्यो दीस । वनै किसी बार कैय दियो कै तू क्म बोल्या कर ।

चबरी मे बैठ्या तो माप बीनणी रो हाथ पीळ्यो छोरी चुपचाप बैठी रैयी । रमतिय बोल्यो— मा तो पाछो फर्ई भरै ई कोनी चणो ओर सू चूंठियो बोल्यो नख म्हारो चुमाय दियो । बीनणी बोबाड मारण लागगी हळव्यो छोड दियो । पडतजी धांख काढनै कैयो— "स्याणा-स्याणा बैठ्या रैवो कमरसाव ! पण इया रमतियो बन्धाह करण धाल्डो गई हो । बोल्यो— बैठ्यो रैवण नै थामो हुं'क फैरा खावण मे ?" और लोग तो सायद ई सम्या होसी पण पंडत मार्थ मैं तडीह लियो— छोरी रै माछो मरव्वार हुग्यो ।

ब्याव रै दूजै दिन भर समठावणी साफ गयो तो मीटो देख'र सासू पूछ्यो— 'थवकै किसी किसास मे बाल्या

एक बार बोलग्यो ।

सासरे गयो सामीडी मिजमानी हुयी । पर्छे रमतियो कठे मावतो । सगळे माएसा म कैयतो– 'परणे तो सगळा ई है पण म्हारै सासरै जिसो सासरा भर इसी धूमधाम सूं हुयोडो ब्याव देख्यो हुवै तो बतावो । माएसां कैयो– ब्याव तो माव रात रा होसी इण सूं पैली ई थारो तो मायो चरक बहम्यो दीसै । तनै किसी बार कय दियो कै तू कम बोल्या कर ।

बवरी मे बैठ्या तो माप बीनणी रो हाथ पीड्यो छोरी चुपचाप बैठी रैयी । रमतियो बोल्यो– था तो पाछी काई करै ई बोली पणै जोर सूं पूंछियो बोल्यो मन म्हारो लुभाय दियो । बीनणी बोवाळ मारण सामगीं हळ्ळको छोड दियो । पडतजी पांख काढनै कयो– 'म्याणा-स्याणा बैठ्या रैवो कवरसाब ! पण इमां रमतियो बरदास करण माळो नई हो । बोल्यो– बैठ्यो रैवण नै मायो हूं क फेरा खावण नै ? और लोग तो सामव ई मस्या होसी पण पडत माथै में सबील लियो– छोरी रै मासो मरतार हुयो ।

ब्याव रै दूर्व दिन जद समठावणी साक मयो तो मौका देख'र सापू पूछ्यो– "मवकै किसी किलास मे पढ्या

पाछो मावनो भदरावै हुवो तो है पास पण सबामो र उम्मळ्या हण तरै देवै बाण फैल होग्यो हुवै ।

माएसै बणो ई बोर देवनै कयो 'नई सा म्हे तो आधी तर पास हुयो हूं म्हे तोमू सावै ई पढ़ो हा । म्हारी किलास भर मे ई कोई म्हारो फैल को हुयोनी । पण इण बात मावै सासू नै रत्ती भर भी भरोसो नई हुयो कारण के कमरसाब पास हुया हुवता तो पह्लायत नैम देवता-'हूं पास हूं ।

परणीज'र जद पाछा घरे आया तो आप माएसा नै गोठ री कारण ध्यान मे तो तिणती रा आदमी भया हा । माएसा पण तमासा करता अर रमतिये नै उठ बबर, बैठ बबर बताओ । फेर माएसा सुभ कामना परगट करी भगवान थनै बेटो देवै सुख महना रै भाय-भाय । 'तो एक गोठ फेर । रमतियो बोल्यो ' जद माएसा लकलक हँसन लाग्या तो रमतिये नै ठा पडी कै आ सुभ कामना नई मसखरी है अर वो मसखरै री ठोडी भाल'र मचकावण लागग्यो ।

माएसा पूछ्यो तूं मामी रै साथ तो आयग्यो'क था तनै सफा हम्मू रो हकतो समर्म है ?

"वाह वा तो म्हारे सू बौत राजी है, हरेक

अर एक मठजन दा एक दिन चग बोळम्यो । जद मास्टरजी केय दीवडा वयू पामनू मारा नू या दाई पढ तो पढो, नई पढ़ै तो थारै बाप रा काई मिया ।

गरमी री छुट्टयां म आप दम्मा सासरै रो चहुर जाड मू । बठम्या रेल म अर आयग्यो टीटी । टिकट माग्यो तो आप बोल्या- हू तो सदाई बिना टिकट जाऊ, आज तई कुण ई म्हारै कनै तो टिगट माग्यो कोनी। आज तई म आप रेल सू बिना टिगट री मोकळो जातरा कराय लियो आज हू चारज करूं तो काई म्हारै है ?" टीटी उणरमै मिटाम सू कैया । अर रमतिया फुरग्यो- नई, साब ! हू तो आज पैलडी बार ई बिना टिगट आयो हू ।

टीटी बोल्यो- आज चारज होजासी तो फेर बिना टिगट रो नाम नई लमो इण वास्तै आज तो चारज हुवणो ई ठीक है । रमतिय दूजी बात केवी- 'हू तो मुरलीमनोहर बाबू नै पूछ'र चाल्यो हू बिना पूछे पोमरो ई आयम्यो । टीटी चुकम'र पूछयो- किसो मुरलीमनोहर ? रमतियो तडाक बोल्यो- "किसो-किमो मुरलीमनोहरजी टीटी । टीटी बोल्या- बस माफ करो पण्डा थारो मुरलीमनोहर तो म्हारो ई नाम है अर मै थारी सिकल अबार पैलडी बार देखी है ।

—

गलती हल

चाई है जिण सूं इसा नामी हुयग्या । ओ सुगनें अचम्भो होसी क बाप दिन ऊग जिण सू पैली भोंमरकै अ्यार बजी उठै सिनान ध्यान पाठ-पूजा कर'र रोटी जीमनै मात बजी मढ़ी होवै । घर सू निकळण सागै उण सू पैली पासनी मारनै फेर भगवान रो ध्यान लगावै– हे अ्यार भुजा रा नाथ ! तू पत राखै सांवलिया म्हारी लाज थारै हाथ है । आ दुनिया राज कूडी घणी इण कारण मनै भी दिन भर कूड बोलणो पड़ै भर कूडी-कूडी सोगन्या खावणी पड़ै पण म्हारै मन में तो हूं जाणूं हूं कै सोगन कूं नी लाऊ हूं । हे तिरलोकी रा नाथ ! कूडो-कपटी हूं जिसै रो बेड़ो पार लगाए, कसूर माफ करे सांवरिया ।

पछै बाप घर सू निकळै मन म सोच'र कै आज हूं कास सू ई सवाया कूड बोलसूं । बाप पछै जिकै ने पछै बगो ई बिना सौगन-पूत री बात कोय केसी । सामसो जे नई मानसी तो केसी– 'म्हारै बीच री सौगन ! इतै सू भरोसो नई हुवै तो धरम री सौगन । परमात्मा सू मारयो जाऊं !! भर सपळ्ळ सू पछै– ओ म्हारी बात कूडी हुवै तो हूं असल बाप सू पैदा को हुयोनी !!। आ बात सुण्या सू नवा भोळा तो भिड़ते ई चित जावै पण जिका सवेई फाकी मे आय'र हुसियार रैवणा चावै वै फेर

आ बात सुण'र सोता मितराम रा हुवे ज्यू रयग्या मन म सोचो हुसी— भो किसो क भागवान है जिको अन्दाता रै मानीजै । म्हे ई जे इसा हुवता तो किसो क !

सगळां नै टकटकी बाथ बैठ्या देख'र गुमस्तर्रामल फुरण्या फूलाई भाम्यां रा मटका कर्‌या पाघडी रो पेच सवार्‌यो भर भ्यारा पासी मिजर घुमाई भई म्हारी बात थानै किसी'क लागी है सगळा रै भाटोभाट उतरगी का केई र सळ रयग्यो । जद देख्यो के सगळा बोला-बोला बैठ्या है जणै फेर भूडी बडाई— भन्दाता तो भठे तई कैयो के भो तो गुस्सो (भन्दाता मनै गुस्सो ई कैवता) रीसाणो हुवणो को जाणै नी पण जे कदास भो रुठ जावे तो मनै ई रै पगा म पाघ न्हाख'र मनावणो पड़ै । जिता ई वाइसराय भाया कोई म्हारै मैनात री बडाई करतो को भाय्योमी पण इयै रो सेवरो गुस्सै रै माथ है । फेर कैयो भन्दाता— वाटसन साब ! लार्ड मिनमिणगो तो ई नै विलायत लेजावण रा नोरा काढ्या पण म हाता जोडी कर-कराय'र मीठ भठे राख्यो । जे भो भगरेजी पढ्योड़ो हुवतो तो कीनै ठा किता भाविस्कार करतो भर दुनिया रा किता भंजीनियर इण रै पगा में नाक रगड़ता । पण सोनै म सुगन कठे पड़ी है' कैय'र भन्दाता

हूं तो थारी रग रग जाणूं हूं। भन्वाता रे मैसात में बीजळी रो इतबारम हो। कदेई थारो बाप ई हुयो इतबारय ? मसात मे पग ई धरयो याद आवै ? थारै जिसा सकड़ूं धूमाड़ा फिर। विलायत भाळा तनै फुरता हा ? बीवरौ नै ई ? जाट री बेटी काकोजी नाव ! आज तो हूं टाळो राखू फेर जे गाळ-गुपत पुणमी तो म्हारै जिसो कोई भूंडो को है नी। इसी फरूलो कै कूसा ई बीर को बासी नी। काम तई तो कुळी री नोकरी खातर धरती सिए कुड़िया खोतरतो हो आज फिटर हुयग्यो जणै भवे फाटण लागग्यो। फाटै आपेई पाव री हाडी में सेर कठै सू मावै ?

पुल्ये रो मायो सुनो हुयग्यो—भू भू करण लागग्यो। काळजो फड़क-फड़क करण लागग्यो मूंडै री हवा उडगी। सोच्यो—मारयो-पीज्यो बपास हुयग्यो सगळी बाता माथै पाणी फिरग्यो। पण चुप रऊं कोनी सागी बाप भाय आवै तो ई। बोल्यो— 'बेम अबो समझ र थारो कायदो राखू जै दूजो कोई भिन म बोल जावै तो थप्पड री देय'र मूंडो भु बाय दूं। तनै ठा नी ठिकाणो नी भर हू साड री भुना बोमा फड़फड़ हुयोड़ो रवै ? जे तू म्हारै सू बोलग्यो तो तनै थारै नेम धरम री सोगन है, भर जे हूं बोल जाऊं

तो मैं म्हारी मा रोड रा को चू म्यानी। इतो कैयो'र कारखानै री तीसरी सीटी बोलगी। सगळा फाटक मे बड़'र आप-आप रै काम लागग्या।

आज गुलछर्रामिस कोई मांई मिनख रो मूडो देख्यो हुसी नई तो गुस्सोजी बाता रा गुलछर्रा उडावै अर अनै बैठे जिका मूडै रै सामो बोलता रैवै कोई माल ई को उठावैनी। अबै बूढी चढावती बेळा मा माळीजी पैसी देवा लेवे के बो अमराबू कारीगर तो कठै ई को बैठ्यो ई नी। बो नई हुवै तो फेर एकाएक कोई अर कोनी— सायी चोखो लागी मैवाल।

मक्खणसा

मक्खणसा री ऊमर थवार कोई इकताळीस-बयांळीस हुवैली पण वाता हाल तई टाबरां भाळी घर। रग तो रामजी र घर सूं काळो ई घाती मायो पण डील रा पूरा है– ऊरू सूं भाड-मा'क नीचा रवै। पगरखी रो मजूगो करणोडो ई समझो। ग्याव-मावै में माथै ऊपर छोटो-मोटो पेचो बधाय लेमी कोट नवो परमी पण कोट र माय गंजी का कमीज को हुवमी। धोती परमी घुघाऊ, पण वाभै इसी ढोली उवळ जाए थवार नुसी घड़ी मैं नुसी। मनै तो घणी बार यो डर लामै कै कठै ई रस्तै बैवतै मक्खणसा री धोती धरती पड जासी अर मक्खणसा नागा होजासी। पण हाल तई तो माईता र माम सूं धोती पवती-पवती बंचै है।

गामा पैर-पराय'र थाप मसली पता रो कठो घर सारे मोत्यां री पौसरी पैरै। अ गैणा है तो मक्खणसा रा बाप रा पण दीसै है माम'र सायोड़ा।

मक्खणसा रै पट्टा छपावण री तो सौगन ई है पण विना एड़ै संवार भी करावै नई। एक र सारै महर हुवै

तो में म्हारी मा पाड रा को धूम्याती। इत्ता मैंयों'र कारखानें री तीसरी सीटी बोलगी। सगळा फाटक में बड़'र आप-आप रै काम लागग्या।

आज पुरुषोत्तम मेरी माई मिनख री मूंढो देख्यो हुसी नईं तो पुरुषोत्तम बाता रा गुलछर्रा उडावे पर बठै बैठे बिका मूंढै रै सामो भावता रैवै कोई आव ई कोनी उठावैनी। मनें पूरी पचासेक बेळा मा माळीजी पैमी बैल सेवै के वो मगजगसू कारीगर तो कठै ई को बैठ्यो हूं नी। वो नईं हुवै तो फेर एकाएक कोई डर कोनी— खाली खोखो खाली मैदान।

सात मिनख मूस्योडा हुव अर बे मक्खणसा जीमण म पैसी पूग जाव तो का तो रसोई दूसर बण अर का पछ भाव जिका पाछा भूखा घरे जाव ।

मक्खणसा जद जीमण जावै तो सार्थ भड़ो भी लेजाव । टाबरा री छोटी-सी'क गोभळ्या तो भट भरीज जाव पण मक्खणसा रै कूब रो हाम तळो ई कदीजे नईं इण कारण बै देखे टाबर भूखा है, अर उणा नै ठोसा सू मार-मार'र जीमाव । ठोसा रै डर सू घर रा टाबर भी इणा रै सागै जीमण रै नाव सू कापै ।

एक दिन मक्खणसा एक छोट गावँ में जीमण नै गया । सेठाणी पली च्यार लाडू पुरस्या दूजी बार में दो अर तीजी बार मे एक लाडू पुरस र पूछ्या रो पूछण लागगी । मक्खणसा वन्यो भ्राज तो काम कठन दीसै है इया टोपै-टोपै सू कण पक्को भरीजसी ? सठाणी पसवाड फर निसळी र मक्खणसा कैय दियो– दैय दो माठ लाडू ! 'माठ' सुणते ई सठाणी रो काळजो तो फडक-फडक करण लागग्या पण जीमणियो मायै क्यूं पुरसणो तो पड ई । मक्खणसा इया माठ-दस माठ-दस कर-करतै मीठ पेट भरघो ।

धेक दिन भाप बेडमी पूड्या जीम र भाया । म्हैं

साव कयो– 'नई मई रीस कोनी आप बेफिकर रैवो ।

मक्खणसा मे माव आज बीमणनै सावै चासण रो कैम दियो । मक्खणसा मसा-मता सेय'र त्यार हुयग्या । सगळा बीमणन गमा मक्खणसा ई गया । और लोग तो थोडी ताळ में जीम-जीम र उठग्या पण मक्खणसा हाम भाभा ई चाल्या –ई । चामपळ आळो पूछै– कयूं दा देय दू ? जद मक्खणसा कैवै– हा दस ई दिया नई तो अठा पछ जाव सा । पछी आळो पूछ– कयू एक तो देय दू ? मक्खणसा कवं– 'बस एक-दो सू बेसी ना दिया हूं धाप्योडो हू । लाडू आळो पूछ– 'लाडू? मक्खणसा कव – बारो सो मन राखणो पडसी देय दो च्यार लाडू।

जद मक्खणसा भात-भात रा चटका देखाळया तो आनी-मानी सगळा घेरो घालनै ऊभग्या । पैली आळो आडी मक्खणसा रै साव कनै आयो बोल्यो– 'मक्खणसा खातर तो आपनै बीस जणा रो कासो मगावणो चाईजतो हो दस रो मगाय'र तो आप साई बामण रो फालतू पेट रोल्यो ।

तीन सेर मीठै री होड—

अेक मजूर केई सू सवा सेर मीठो खावन री होड करी । सवा सेर मीठो सामसै सू खायीज्यो नई जद दूणा

पइसा जिपग्या। मजूर रो हाथ थमग्यो मक्खणसा सूं भिड़ग्यो– दो सेर मीठै री होड मे! सोदा समझायो– अरे दो सेर तो मक्खणसा उडाय जासी। मजूर डरग्या। सभातांणी घर-जाय'र तीन सेर माय होड पूगी– लारली मीठो साथ चरखो नहीं। जे मक्खणसा जीत तो दो रुपिया इनाम जे हारै, तो मिठाई रै मोल सूं दूणा भरीज!

खीरमोहन-आमपळ रो एक-एक टूंगो मायग्यो अर मक्खणसा हात साफ करणो सरू कर्‌यो। वो सर उगाता जितै तो आपने इन्कार ई को आयो नीं। पण मक्खणसा मोपा धीमाक्या ई धीमण री म्हनळ आर्यो नई। दो सेर मीठो खायो जितै अढाई-तीन सेर पाणी पेट मे ऊंडाय लियो जिकै सूं पेट तणीज'र नगारो हुवै ज्यूं हुयग्यो। अबै आप घबराया– 'अरे! बीरया सूं तो पाणी लारली वो खिसका अर न हारग्यो तो मन्नै मजुरवार भुस जाती।" मीठै रो भाव उण दिनां अढाई रुपिया सेर रो हो।

पण हाम तो मक्खणसा एकणां रे ताण बैठ्या धीमता हा। अबै पागड़ी मारणी आद भामी कोट रा बटण खोल्या अर बी दिन सजोग सूं पगामो पेट्मोतो ही जिण रो नाडो ढीलो कर्‌यो। अबै मक्खणसा फेर बोला हसणा हुयग्या। मीठै रो टूंगो मक्खणसा सूं आगो मेल्योड़ो

हा जे सगळो मीठो दीखतो रवै ता खातो चढ आवै। मक्खणमा पूछयो- म्बै किलो'क रयो है ? मक्खणसा भागो तो न्हाख दियो पग दिलासा दिरावण सारू म कैयो- बाजी मारली घोड़ा ई है म्बै तो। भर म फेर च्यार खीरमोहन पुरस न्दिया।

होड करण भाळो मजूर घडी-घडी बार कैवै- 'देख उल्टी मा कर दिए। जे करदी तो पइसा चिप पावैला। मक्खणमा नै उल्टी करावण साख ई मजूर घडी-घडी बार उल्टी रो नाम लयतो हो। मक्खणसा रो हात तो बराबर चाल पग माय सू जीव घबरावै। उबकी मावती-मावती रैय जावै। एक बार तो थोड-सी क गुचळकी भाय ई गमी पण मक्खणसा री बच्योड़ी दाढी घठै काम दयगी। मूठ भाडो हात देय'र मक्खणमा गुचळकी नै दाढी म रमायदी। मजूर झाका तो करया पण मक्खणसा ऊपर रो ऊपर उडाय न्दिया।

दो सेर खायो जित ता बूटी रा नसा सागीडा ऊग्या पण म्बै नक्सा फीका पडण लागग्या। पसीनै रा बाळा वैवै बीस भोळाभोळ हुयग्या। मीठो खावतै-खावतै बिती ई बार मक्खणसा हात मे पाणी मियो कै फेर तो केई सू मरतो-जीवतो होड करू मई पण ता ई मजूर मै

कैवै– "थारै भाई रै मौसर में मुफ्ताप हुयगो सिरपोश हो जिको हुयगो घर रैवो-सैमो फेर हुय जाशो। पछ तो मिठाई पोइ-सी'क रैसी हुसी। आ बात केवता मनखसा सामल्टा हुवै ज्यू को बीमैनी पण इयां लागै के वार्षे थारै मन मे मजूर रै खातर हमदरदी है।

पावर मनखसुसा इता सिकम्या कै टावर में उथावै ज्यू उथा-उथा'र मीठो सुवावणो पड्यो– मण्डापा मर्थ पाठ रैया है मर्थ सब रैया है। तो ई फेर सूरज बाग री साख मराय'र मनखमना हाल मे पानगी लियो कै फेर तो कैई यू मोठ्ठे भूल'र ई होय गई कळ। इयां करता-करता मनखसासा तीन सेर मीठी माय मैलम्या। मजूर रो मूठो भलको हुवै ज्यू हुयग्यो पण मरती थाक बाम्यो– दूणा मे रस बण्योडो है जिके मी तीन सेर मे वामल है मीठ्यो घणमी। तमाशो देखणिया कैयो– "रस री तो होय गो ही मी। पण मनखमसा कैयो के रस रै कारण घर मोसर हुवै है मै हुमो'र लिया सबड़का– है मै धा रस! इयां कैय'र सगळो रस सबडम्या।

मजूर रा भैपिरा इनाम देय'र चोलो-चोलो टुरग्यो।

रस हग–

मनखगणा मैं पोमाम'र बनीर कोई परखां रा पर

आयग्याद मापर गांव करवायलो। घसाक लूंकड़ी कागल नैं घुर बगाम'र क्यू रोटी मेमगी उणी हरै मक्खमसा क्नै किली ई मूं कड़ियां कूक घर सगळघां मापरै भाग माक कांई-न-काई पाय खाली नई जावे।

एक डाकोत कयो– 'मक्खणसा! थारै आगै डागा रामपुरिया ई पाणी भरै। थांरी पगथळी री ई होड नई कर सकै। धरम-पुन में थारै जिसो धीन राजा-म्हाराजावां में ई कोनी।

भरे वाह रे डाकोत! हनै मक्खणसा नूंई री मूंई रजाई काढ'र देयदी। माप सियाळ में गूदड़ो माथो बिछायो घर मायो मोल्यो।

मक्खणसा रै घर में घान-चून जोवो तो ऊंदरा वळी करता साथसी। बळ पे धान लावण रो कैसी तो दस वार कयां भी सुणाई हुवै नई पण जे माप धान लांवता हुसी घर मारग में बडाई करणियो सामी-मोडो मिल जासी तो मायो-मड़यो धान वडायंट बाट देसी।

मान्नी दुनिया मक्खणसा री दातारी रो डंको पीटै पण घर माळा कैवै– थूं दवियै बावरो है थारै में कौडी रा ई सऊर कोनी बळी थारी दातारी मूंडी लागै! थै बोल मक्खणसा सूं भलै पण फांकर मर्स अद के सगळा लोग

बारी बधाई करता को चावेनी। इण कारण घर धणी सूं मकनगसा री कमठी बण। जे कोई घर माळा बाकी सीख देसी तो या बोपड़िये भई री खाट वां विछड़ जासी। इसी सूं मारो नई सूजे। मकनराणा बड़बार करता घर सूं निकळसी जिके रा मोड़-सी क दूर जावत ई चोर-बार सूं माळ्या कावन भाग जाती। जे कोई बाता भीयणियो हुमरा देवण लाय जासी तो भाप सूं सूं रोवण लाग जाती अर सावेई भासूं मासी।

भाप भोकरी करे– जमादारी। एक रात भापरो पीरो कोयला बाली हो। तीन मारणस आया, बो वो भापनैं बाता मे भगाय लिया अर तीसरो कोयला चोर करतो रैयो। मकनगुणसा इसी जमादारी करे। पण फेर भी भापनै रात री डिपटी मे रावणा पड़ै। जे दिन री डिपटी मे रावै तो भाग इणा रो उणतुणा रगड़ण देख र 'हाळ्यो ! हाळ्यो !' हाका करण लाग जावै। मकनगुणसा रा तमाशा देखण खातर मोकळा मानख भेळा हुय जावै। इण तरै भेळो भवायोड़ो भफसरा नै पोसावै नईं अर मकनगुणसा री रोटी भी खोसी जावै नईं इण कारण रात री डिपटी देय'र मकनगुणसा नै बिचावै।

जे कदास मकनगुणसा दिन रा कारखाने जासी भाप

माची । मबमरणमा सदेई गावणो सुणन न जावता । एक दिन उणां री मां भी गयी । सेठां मां नै पूछ्यो– 'तनै किसी गावणें में ठा पड़ है जिको मायी है सुणन मैं ? मा इयां ई मस सूं हुंकार रो सटको कर दियो । सेठां पूछ्यो– 'मा काई गाव है बसाव ? हाक रै कारण मां नै सुणीज्यो– किसा जणा करै है गावणो ? मां मीवणै हाल री पाछू मागळ्यां देसाळदी मई पांच जणा है– मक तो गावण माळी दूजो तबल माळो तीजो पेटी माळो चौथो सारंगी माळो मर पाचवी गावण माळी री मा । मी बगत मगतग पंचम रै सुरा में मळाप सेंवती ही । माजी री पांच मागळ्यां देख'र सेठां सोच्यो– डोकरी समझ दीम । सेठ राजी हुया मुनीमजी नै सूं मट पांच रुपिया रो सोट इनाम दिराय दियो ।

माजी तो रुपिया लेय र मफल रै मपबिच म ई घर दूरग्या । जद छोटो-मोक मबमरणमो घरे गयो तो मां मदपदायो– दग तू तो निन-हमस रात री एक-एक-दो-दो मजाय'र मावै पग ठोडै भाग रैवै है तो माज ई गयी जिक में रुपिया पांच इनाम रा लिमायी ।

मबमरणमा सोच्यो– बास बात । माप ई सेठां री ज जम ऊपर बठ र सोगां रै देसादग मस रा सटका

तळाव में गंठा बीडै सागीडो पाणी उछळै। आप अबी-
तिरणी तिरै, मुरखा-तिरणी तिरै, तळाव रा घूम-घूमे'र
चक्कर काटै। पण मकलणसा न्हामा पछै परण लाक लागै
हुआ गामा नहीं लावै सागी आभा पूरदेरे घरे जावै रीतै
इसा बारयै म्यारे (मसाणा) सूं पधारया हुवै पण
मकलणसा नै जाणै जिका तो समझ जावै कै आप तळाव
सूं पधारया है।

सगपीर सिकन्दर—

जा तो मकलणसा घर में पाणी लावै है नहीं अर
जद लावण लागसी तो कोठी री पडूघा सूं टकराय देसी।
माटा भरता लोटा-कळसिया सगळा भर देसी। बीजा
माणस तो टूटी कनै ऊभा बारी में मजीकता रैवै अर
मकलणसा आवते ई बाँ जिकी सुभाई नै भाज हुलियो'र
पेडे कर देवै अर आपरो बडो भर लेवै। कनी ठीक
जुगाया तो खिलखिला'र हंसम जाप जावै पण वे कोई
नहीं नाक भाळी पाळ्या काठम हुक जावै तो मकलणसा
नै घर को पाणीरो है घुप आपरो रैडियो चालू कर देवै।

मकलणसा सूं बो लाया—

मकलणसा थवर हा जद री बात है इणा रे हेला रै
घर मे केई रो ब्याव हो। घर माने घुसमो हुमो अपतम्मा

करण्य लामण्या । सेठां री निजर बठीनै पड़ी धूमग्यी— अरे मवलणिया इत्ता मटका करै, तू किसी समर्थ है बताब या कोई बात है ? मवलणसा बोल्या ई— 'म्ह ममझूं म्हू कोनी मनै तो समन्नी ठा पड़ै है । म्रा बार्त है इयां कैम'र दोनू हाता री बसू धोमल्यां एक वपिया मैवण लातर सेठां र सामी करदी । सैठां रो सवाल कोई भकरो हो । नोकर नै हुकम दियो— ई मवलणियै नै बांध'र घोड़ां रै ठाण कनै पुड़काय दे । सवेरै-सवेरै यर्ड बावस ऊपर बराबर थाय'र बैठ जावै अर वैसा मटका करसोकरै, सऊर कोनी धूड लावण रो ई ।

मवलणसा बोड़ी ताळ ठाण री हवा लाव'र बरे घाया । मन मे विचार करयो— था भमतणवी मई धावती तो ना तो लावणो हुवतो ना ह मटका करतो अर ना ठाण मनै पुड़कायीजतो । बात ई राम रा कोई सू बो भू बो तोड़'र माळे जणो जीव सारा हुवै ।

मिथाळै री रात ही । मवलणसा ममतण रै घमबाड़नै पाळै मार्थ चवरो छीदो कर'र बैठग्या— मर्द या हली मार्थ हुर्द है पनी-न-पनी तो कोई सू बो पड़ ई जासी ।

ममतण नै जोमाय हती जोरदार क बमाल बाळो मार हुगम्यो पण हाल तई भाव सू पाणी पड़ै । मौसो

कैर-मोट्टी जेवड़-माळ में पञ्चायत कोई-न-कोई भूत-भूतणी दीस जाव । मक्खणसा कैव — 'जे दूसरै मादमी मै दीख जाव तो छाती फाट'र मर जावै । म्हो तो हूं हो जणै पैली दारू करदो जिणसूं भूत रो वस को चाल्योनी । कदेई-कदेई मक्खणसा मै दो-तीन भूत मेळा ई दीस जाव सद मक्खणसा री दारूस देवण री हीमत नई पड़ मर डरणा नै ताव चढ जाव दो-च्यार दिन घर में सूता रवै । फेर भी लोग इणांरी भूत-पमीत री बात रो भरोसो नई करै ।

एक बार सिक्या रा भाप तळाव सूं न्हाय'र घरे भावता हा । सागै एक म्हाराज दूध रो पूरिणयो लियां चालता हा । म्हाराज भूत-खईस-डाकण-स्यारी रा भन्तरा तो सगावता हा पण मक्खणसा नै साचेई भूत दीसै भा बात नई मानता ।

माज मक्खणसा मै साचेई भूत दीस्यो ! मक्खणसा माग्या इसा भाग्या जाणै कोई पड़्यां साम्योड़ा हुव । म्हाराज रै माचे मे दूध रो भरच रत्ती भर भी नई मायो । चोड-सींक ताळ नै रोयी रो चक्कर काट'र मक्खणसा म्हाराज रै कनै कर सपूर चाल सूं निकळया । म्हाराज

देख्यो– आज तो सागेई दाळ में काळो है– महाराज बेगा आगे गया जित्ते मक्खणसा केर दबड़-दबड़ करता सापीड़ा हाफ्योड़ा पसवाड़ फेर मिचळ्या । महाराज सोच्यो– आज तो मक्खणसा मे सागेई भूत बड़ग्यो दीसे पर म्हारे कनै दूध है इण कारण म्हारे बार-बार चकुर आवे है, पै क्यास हू भूत री केर मे आयग्यो तो ओ दूध कीरे आडो आसी ?

अधरामर महाराज च्यार सेर दूध धरती माता न पाय दियो ।

मक्खणसा नै तीन दिन ताव आयो महाराज नै पांच दिन ।

गवैया मक्खणसा अंगरेजी समझै—

मक्खणसा गवइया आछा है पण ज्यू भैंसो कू आर गधे नई चढे उसी तरै मक्खणसा भी केना सू आवे नई । मक्खणसा री कंठ मीठो है राग री सौड़ भी आखी पण गावे है रावड़ मर्व । रावड़ कण्ठ में भी आप गुणान्त रो ध्यान राखै । नमूनै खातर—

भजन बिना रे बीती जाती है उमरिया ।
मित नहीं नेम नहीं सन्तों से प्रेम नहीं

सिर पर धरी रे
मूरख तनै क्यों
वृथा उमर गमाई,
तजन तर्जन तजन
मद क्यों नी पटकै
'पाप की गठरिया ।

बिच में कई सबद फालतू कैय'र लार आवतो उमरिया' री तुक 'गठरिया' सू मिलाय देसी ।

कारखानै रै साब लोगा रा बंगला कन कर निकळ जद मक्खणसा पैली सू ई गावणो सरू कर देवै । रस्तै में मिलै जिकै नै आप कैवै–

"म्हारै गावणै सू साब री मैम आज बीत राजी हुयी ।

"थानै काई ठा ?

'म्हारै सामनै ई तो मैम बडाई करी साब रै आगै म्हारी ।

"थे किसा अगरेजी समझो हो मैम तो अंगरेजी में कैयो हुसी ?

"अंगरेजी समझू क्यू कोनी मम कैयो– देखो गुट मैन, यो फिस्टेट म्हाराज इस फ्रन्ट बिचारा कैसा अच्छा गाता है ।

"आ तो सफा कोरी अंगरेजी है ।

हूं किसो अंगरेजी पड्योड़ो थोड़ो ई हूं। इत्तो तो हिरदै री ठकत सू समझग्यो। पण म्हारो गावणो बे मैम रै दाय नईं आवतो तो म्हारै सामनै देख'र बा हूंसती कां वास्तै ?

साळवों सोमो—

मक्खणसा काळा है कोमा है करोड़ है, पगसाऊ है पण चोर-चार कोमी इण कारण बडा-बडा रावळी री जिनाणी ड्योढ्या जिका में किणी रो आमो भी नईं बड़ सकै मक्खणसा आंतर बुल्यो है। अठै जे सोमो ई पगा में पड्यो हुवी तो आप सग नै बूढ बराबर समझसी। पारकी चीज नै पारकी अर आपरी नै आपरी समझै, इण कारण मक्खणसा मक्खणसा हुवते थका भी साळवों सोमो है।

डाकण

बात घणा बरसा री है जद के एक गूंआरियै में एक डोकरी तेल-भूणी री हाट लगायां गुजराण करती ही। परणीजतै ई विधवा हुयगी। सासू-सुसरा सगै सायै सरग सिधारग्या। मा-बाप कींरा सदा रैवै ?

एक दिन जद आ विधवा हुयी सैर में हुक्को फूट्यो-मरे। इसी कर री मौत सो आज ताईं को सुणीनी। आ छोटी-सी'क विधवा बरसा रा बार सैवती आज बूढी डोकरी हुय'र 'माजी' बजण लागगी। माजी बचै सो हुवे में पड़ो भोल्या भाया धाम-म्हामें ई लोग बूढा बाबा (अथवा बूढी माजी) कथण लाग जासी पण अफसोस री बात ही आ हुयी के लोग माजी नै 'डाकण-डाकण' कैवण लागग्या। आ दुनिया केई रो मारो भ्रमसे ई नईं पे भ्रम लेवै, उणने नईं हुवै तो ई डाकण बणाय'र रैवै। अर बार पाळी भी म्हारै ध्यान मे लुगाया है जिणा नै लोगां डाकण कैवणो सरू करयो अर भवै वे सरवाले डाकण बणीजगी। आ माजी तो सायण कुळ मे एकली ही। दम रो गाभो इण रो बैरी हो इण हालत में जे दुनिया

कैवे 'झाकण-झाकणा' तो काई इचरज ?

छोरा-छोरी माजी री हाट सामे सूं निकळण री हीमत नई करता । जे अठीनै कोई काम हुवतो तो पसवाड़ली गळी माटो खाय'र जावता । जे कदास कैई छोरै नै मारग मे माजी मिल जावता फेर तो बस सास निकळ्यो जाणी रैवतो । मीरया तो माटा री हुवै इण कारण माय खसीजे नई पण जे पसवाड़ै तळाव हुवतो तो छोरा-छोरी माजी रै सामै जावण बिचै तो म्हारै ख्याल सू, तळाव मे डूबणो कबूल कर लेवता । टाबरा रो सायो पियो सगळो माजी रै दरसणा सूं हराम हुय जावतो । माजी रा एकर दरसण करया बराबरी कितो सोयी धीजतो इण रो मे लेखो तो नई लगायो पण टाबर तीन-च्यार दिन माया चक्कर रैवता ।

जिण टाबर नै माजी मारग में मिलता वो इण बात री खबर घरे जाय'र आपरै माईता नै सुणावतो । माईता रै बडो भारी सोच हुवतो । कोई-कोई माईत आपरै टाबरा नै माजी रै हाटडै जावता अर कैवता— 'माजी ! छोरै रो कठैई ऊंचे-सूं चे चक्कर में पग पड़ग्यो दीसै है । सात बात रो धुपकारो नखावणो है पे ई थोड़ो धुपकायो तो जाण दो । माजी नै उ तो ही कै धुपकारो

बपू धमाव है पण तो ई काळ री झुम्पोड़ी डोकरी घुघकारो घास देवती अर दो-तीन दिनां में टाबर ठीक भी हुय जावता।

कोई-काई मार्इत धणी भकराई लगावता– तू डाकण है घाल म्हार टाबर नै घुघकारो ! अबै घुघकारो घलावणा जिसो सुन काम हो ! मार्इत हाका करता– देखो रा डाकण लोगा रै टाबरा नै भखै। सैकड़ा गरज्यां करती तो ई घुघकारा को घालती। थारै बाप रो काई भन लागै है घुघकारो घालण म ? अ हाका सुण र गळी म राणो राण माणलो मेळो हुय जांवतो। बां मे मायद ई कोई इसो हुवतो जिको मामी नै डाकण नई सममतो।

जे कदेई कोई लुगाई आपर टाबर नै गोदी लिया जावती अर सामनै मामी मिल जावता फेर देखो मजा– मा आपर टाबर नै भग गाभै मूं ढकती अर मीत जानी अपूठी फुर जावती। पण टाबर अमर मा इत्तो हक बपू जमाव ? मानी रो भी तो हक हुवै– मामी तो टाबर री मा री मा सूं भी बडा हुवता। एक छोटो-मो'क फूटरो टाबर जणा रै मनकर निकळै अर माया मामी सूं लुकावै इण नै मामी घोर अपमाण मानता अर बदळै में टाबर री

मा मै गाळ्यां काढ़ती सुरू कर दवता।

इण तरै छोटा टाबर माजी नै देखणन भी नईं मिलता। जद कदेई कोई भूल्या-भटक्यो प्रसगवाल मिनख आपरै टाबर नै माजी रै हाल्द आगी सिधावतो तो माजी उण नै सारै कम सूं नईं ल्रेवता। वैस्यानिक ज्यूं जिनसा रो सूक्षम अनवेखण करै उणी तरिया माजी आपरा दोनूं ऊका नैण टाबर रे डील म गडाय दवता।

दुरामदार मानीमूम हुव पण माजी टाबर नै पटालो-पुचिया दवना माथै रै हात फेरता कुण्डो देवता। सब माजी ग भेग्यार किम देख्या ? टाबर रो माईन जद देख पावता टुग्गो तो माजी रा पाडोसी उण माईत मै बताय देवता कै माजी कुण है! कोई-सोक ई इसो हुवती जिको पाडोस्या री सीख री परवा नईं करतो। और तो सगळा कुभगरो बसावरण मैं पाछा मावता। माजी गाळ्या काढता पाडोसी मौफत मे तमासा देखता– वा बिना बीकानेर में बोलतो बाईसकोप नईं हो।

एक दिन मठै तईं नौबत आयगी कै माजी कुपकारो नईं आमन मार्थ सपा अकथ्या। मामलो इतो बधग्यो कै कचेड़ी चावणो पडजो। मजसाब आकण-स्यारी में भरोसो नईं करता इण कारण कुवकारो असावणियै मैं मौक

पबरा बाई, म्हे दोनू गळी मे रमता हा ! म्हे दोनू बा बिना टाबर ई हा । म्हा सुण राख्यो हो के भा डाकण है अर टाबरा रो काळजो काढ लेवै । इण कारण ज्यू ई माजी भावता दीस्या तो म्हारी बैन चिरळायी– 'डाकण आवै !!! अर म्हे दोनू भाग्या सगाय'र घर म ठडग्या । डोकरी भर मार्गं ऊभ'र निरी ताळ तई गाळ्या काढी– डाकण थारी माँ डाकण थारी मामी डाकण थारी दादी ।

माजी रा हाका सुण'र नानोजी घर माय सूं बार निकळ्या अर माजी री सिरायत काम बय र सुणी । हू अर म्हारी बैन म्हे दोनू पबरतो रै हेटै बड र लुकग्या अर काळजा करता हा फड़क ! फड़क !! नानोजी म्हां दोना नै पबरता माय सू काढ लेमग्या । म्हा दोना नै समझाया– मै डरा ना माजी थानै काई को कैवैनी मै तो थ रा लाड करसी । म्हे मानैजी री सगळी बाता सोळै आना साची मानता पण माज जीव मे बावस को आयोनी । इत्तै म माजी माय घर मे पधारग्या । माजी रै सामनै म्हा दोना नै बैठाण'र मानैजी कैयो– मै थारा ई दोईता-दोईती है । माजी रै काळजै म ठंडी सीक पड़गी इसी सीक के हजार रुपिया बिना भी नहीं पड़ै किसी ।

छैलजी

छैलजी रो 'छैलो' नाम पिता रो घड़ायोड़ो नईं हो पण इणा रा रंग-ढंग देखनै लोग 'छैलो-छैलो' केवण लागग्या। बुगलै री पाग माथा ऊपर सूं गैरी सीम। मूंछी मे मार्‍यै जिसो मलमल रो बोळो अर धोती रो पोत माखण जिसो। मखमल रै पट्टू री पगरखी जिकी माथ भर पैरयां बाद भी इसी दीसती जाणै आज ई मोलायी है। मूं बूर्यो काळी भंवर बटदार। केस कुदरत सूं गो सीधा हा पण भांटा तेल छैलजी नै माथा लागता इण कारण केसां मे बळ घाल'र उणां नै घमावण वई अथ उभा घंटा सरदार लोगां वई, पाटी बांध्योड़ी राखता।

टाबर हा जद सूं घर रै काम-काज मे तो मन लागतो पण पढ़ण मे मन-सम्भाम नईं देखती। धूप री होंश्यां चिलकायोड़ी राखता बिलोवणो कर खेलता मां-बाप रा पग दाबता सेम मालम करता अर उणां सूं घणी-घणी आसीस लेवता।

फेर भी माईत इणां नै सफा ठोठ राख्या नईं चावता। पोसाळ भाज्या— सिकमा मारवा री दो पइसा अर लूण-मिरच्यां री पूड़ी दुपारै खातर साथै देवतै।

मारजा धनजी संभ्या एक री धा त (१) पाटी में धाल लियो। धंसजी ऊंधो एको लिन'र मारजा कन लेयग्या। मारजा धोलण में काई समझ घणा हा। बोल्या- ओ काई बाप री मायो लिन्यो है? धंसजी सोगा म गाळ्या काढ़णी तो टाबरपणै में ई सीलग्या हा पण बाप कोई री गाळ-गुपत नई सुणता। मारजा री गाळ माथे रीस तो इसी आयी क मारजा रो भिणियो मोस नाखू। पण भो काम सूर्ये सू परबार हो। धनजी र हात म बिना चोगट री पाटी ही जिकी सूं गच र वेपी मारजा रै पुटपड़ा म फेर एक मुक्या में धर धार! मारजा रो मायो गुसग्यो। सोयी रा नाळा बैगया। छोरा पकड़ण माल मार भाग्या जिकै तो धसजी कठ रा कठै ई तैतीमा मनायग्या।

उण रै बाद धनजी काई भी पोसाळ रा मूं डो नई देख्यो।

धंसजी मोटियार हुया तो माईतां एको घोड़ो दिराय दियो। धंसजी रै एहँ घोड़ री बड़ू दान करणो! घोड़ै माथे हात फेरो तो हेट निमळ। एको कर चमचमाट पळपळाट। धाडो धादमी उणां रै एूं में बड़ण री हीमत नई करतो। भाको भी धंसजी दूजा दिघे सवायो-डेडो

छैलजी

छैलजी रो 'छैलो' नाम पिंडत रो बजावोड़ो नईं हो पण इणां रो रंग-ढंग देखनै लोग छैलो-छैलो कैवण लागग्या। कुरती री बांह मामा ऊपर सूं गैरी लीक। मुट्ठी में मावै जिसो मलमल रो धोळो अर धोती री पोत मारवाड़ जिसो। मुलमल रै पट्टै री पगरखी जिकी मास भर पैरयाँ बाद भी इसी दीसती जाणै आज ई मोलायी है। मूंछ्यां काळी भंवर कटदार। वेस कुदरत सूं गो मीता हा पण मोटा वेस छैलजी नै साफा लागता इण कारण सैंयां में बढ बात'र उणां नै समाधान दई बदा भवा बंदा सरदार लोगां दई पाटी बांध्योड़ी राखता।

टाबर हा जद सूं घर रै काम-काज में ही मन लागतो पण पढण में मकसंभाम नईं रैवती। कुल री होळ्यां जिलकामोड़ी राखता जिसोवणो कर लेवता माँ बाप रा पग दाबता सेवा मालस करता अर उणां सूं धणी-धणी आसीस लेवता।

फेर भी मारैत इणांनै सफा ठोठ राख्या नईं धांकता। पोसाळ भाज्या— जिणमा मारजा री दो पइसा पर लूण-मिरच्यां री पुड़ी दुपारै बाजर सामें देमनै।

बाबूजी

जानकीदासजी म्हार घर कनै रैवै लोग बांनै 'बाबूजी बाबूजी' कैया करै। इस्कूल मे पढता जिण दिनां बापन 'बाबू' सबद सूं घणी चिड़ ही। बाप कैवता— 'बाबू तो ठळ में कैवै। दसवीं पास हुया हैडमास्टरजी सामीडो थाटीपिगढ दियो— 'छोरो पढाई में भौत तीखो है बोल-कूब मे उस्ताद है। इण नै बाब किसी ई काम मे भाग दो बटिया साबत नी हुवैनी। हूं चाऊं ओ एक दिन घणी जम्मेवारी री कुरसी सामै घर ईंरो आखो जीवन सुखी रैवै।

जानकीदासजी सोचता हा कै नोकरी कठै लाधू जिते ई हवाई सेना मे भरती व्हैर सरकार रो नूंतो आयग्यो घर दसवी पास करी जिण री बधाई भी साथै ही। मन मे घणो हरख-कोड पर समझ हुयो— म्हारै वास्तै भाग सरकारी जागाया खाली पड़ी है। पर भाळा नै चिट्ठी देखाळी तो बोल्या— अरे वा रे डोफा! आ ई काई नोकरी है? दफ्तर मे जे बाबू हुवै तो तो फेर ई बेसा मई आराम री जागा है बैठ री कुरसी माथै बैठे पड्यो खासे ठाठ खिरूसोला रैवै।

पण फस्ट-ईयर फूल तो सगळा सरीखा हुवै । दफ्तर में जानकीदास एक और ई तरै री माया देखी— पुराणा बाबू सोका तो सोम्यो कै उणतो पंछी आयो है पण थोड़ा दिना रा भरती हुयोड़ा बाबू भी जानकीदास नै रमतो राम समझ बैठ्या । बाबू लोका सोच्यो— ये कुद तो मा रै पेट में काम सीख'र आया छणा नै कैण ई सीखायो नई, पण जानकीदास मफा भोलो है ओछो है इण तरै बै आपस मे बात करता ।

थोड़ा दिन दफ्तर मे काम करया पछै जानकीदास जूना बाबुवा रा कान कतरण जोगो हुयग्यो । पणा हुसनाका में तो मदै चिड़ी कर'र उडावण लागग्यो । दफ्तर मे जे कोई सामान्य कार्य-क्रम हुवतो तो बो जानकी दास री सल्ला सू हुवतो । मदै जानकीदास पुराणो बाबू है । रगड़ीजते-रगड़ीजते पत्थर ई घसीज जावै जानकीदास तो ठेट सू ई हुसियार हो ।

जानकीदास तड़कै वेगो उठ'र पाणी रा घड़ा सावै मार्या रो काम करै, गोबर भेळो करै, बेपड़ुया उथळ संवार देवै हूनर म्हाथै गाया रै हाथ फेरै गाया नै दूध भर जरूरत पड़ै तो बिलोवणो भी कर लेवै। टाबरा नै म्हावै कपड़ा धोवै पढावै अर जरूरत पड़्या रोटी-पाणी बरतण

कोई बार्त पान्न र जमार्त रो मिनख नई है जिको उम्तरी मार समझतो नई हुवै । मगज पगो ई है मा-म्हा सू बेमी पण ग्यसी पल तो रोई म वर्त । जे मोबी बर्ने धोबाम र दराहर्ट मामा पढ़ाया चालू करई तो बास टांगदा भ्रूरत्वै हुय जावै । इण कारण टैम दग'र वार्ने सीरग साफ पग पमार्ग बगत देग'र नई बिगाड़ जिको बाणिमो ई मिवार ।

बारसा दिन बितार पद जानकीदास उग्गम हुय जार्वे । एक टैम ही जद ईमो बध्याड़ो रवतो हात सू लोटो ई नई भरतो । पद कोई सगपनी नई हो पण फेर भी हाम चरतो हो कारण कंवारो हो मवै मर भाळी ता ई जिकी है ई पण बबेपो मो मोकळो हुयम्या घामी दरजण टाबर वो मवार है मर मायै माण पारसळ त्यार ! जानकीदास नै डर है कै इब बरमा मे गिणती बरजण टाई पुग जासी । जे सायेई दुगा हुयग्या तो जानकीदास हूमो-भाड करमी'क बर छोड'र सगोटी मेसी'क नाई करसी या जानकीदास जाए का जानकीदास जाएं ।

टाबर मा नई वर्त कै बाबूजी उद्या है ई कारण सल्लू-मिपदर हुवै ब्यू रैवै । उद्या रो सोचपो संभव भी नई कारण टाबरा तो थापरें बसम सू बाबूजी नै हसा ई

हूं तो म्हारै धरम सूं कैंई कु मेई रो बुरो करणो चाऊं ई कोनी वे लोग फेर भी तंग करो तो थारी मरजी है।

चपरास्यां मायं बाबूजी घणा ई नाराज हुवै। जे कोई बरे काम करण नै नई आवै तो नौकरी सूं काढण री धमकी देवै। चपरासी वेल पुराणो आदमी है आपानै बिगाड'र काई करणो है? जिकै दिन घर सूं लड़ाई कर'र आमोड़ा हुवै वी दिन तो चपरास्या र पूरी आफत हुय जावै।

कदेई-कदेई आप कोई वामद अठीन-वठीनै घर घराय'र भूल जावै दफ्तर मे बाबुवा अर चपरास्या मे बबम लाग जावै। जद कोनी तो बामद खुद रै कनै लाध जावै अर बाबूजी बाप्या समझावणा लागै— अरे भई, कदेई कदेई म्हारो माथो तप जावै जद हूं थोड़ो गरम हुय जाऊं, पण म्हारै कैमोड़ री थे रीस मा करया करो। आ बात सुणी अर दफ्तर समझ लेवै क बड़ा बाबू आपरी गळती कारण माफी मांगली।

बाबूजी रोजड़ो घरमो रात सिखती वेळा भई रो जिस रो फरेम रही-सो क हुवै। जद साब री घंटी आवै तो पैली चरदो बूकै चस्मो उतारै अर बढिया फरेम रो मायँ लावद, हूबा चस्मो नाक मायँ चढावै। साब री घंटी

सगळी धरम हुय जावै । मर'र भूरसो हुय जाय । दीस सगळो सूनो सनाव । मन म तो आव कै भाभी रै बळम वई दिन-भर पढू पण फेर भी पेट रै पाटी बाम्योड़ी राखणी पड़ै इसी नौकरी सू तो निकमो बैठणो चोखो । घरे आय'र साइकल खूणै मे मेल देव अर मांचै माचै पुड़ जाव । भाभी घटा वई सोमपोम सूता रैव पाणी री तिरास पीवै अर हात-पग हालै पण सगळो बावड़ै अर पाछा जीवता हुवै ज्यू दीस ।

बाबूजी री घणी मनस्या ही कै अबर्दा मैं डाक्टर बणाऊं अजीनियर बणाऊं पढाई करावण सारू बिलायत भेजू पण अबै ठा पड़ी कै वै मनसोबा थोथा ई । आप जलम-बधाई करै ज्यू ई अबार करता दीसै पण इण मैं जोर कांई आस । कई गो मर पाव'र तो रुपिया लावण सू रैया मैई रा कमानो तो सूटण सू रैया ।

भाभी सिरकावते-सिरकावते भी एक बेटी रो ब्याव तो मैडो धाम ई गयो । ब्याव मे खरचा-खरचा भरपूर हुआ पण मानवीदास री आन नईं निकळी भो दुःख मनायो । काळजो कळपण म अर मोमी जीमण मैं तो कांई बाकी रैमी कोनी । पण वे रुपियै मे पाणी वई नईं बेमावं गो बेटी रै सासर माळा राजी नईं हुवै अर वे जणां सूं

हां एक दूजी चीज भी है जिण सूं बाबूजी नै मस्ती मिळ पर बा मस्ती जिनावरां मार्थ नहीं आवै । दफ्तर सूं आयां पछै बाबूजी थोड़ो नसो-पतो करै जिण सूं रोटी भी भाव जावै पर फेर नसै मे पड्या-पड्या मस्ती मे रात काट'र दिन ऊगे बाद सागी धन्धै मे पाछा जुट जावै ।

मास'र थांनै पांच-दस मिन्ट मोटी बहर कर देसी। क्यूं वास्तै ? आ वात वतावण खातर कै भाज आपनै किसो किमी आगा आवणो है अर जे नई गया तो कोरा-कोरा मोळभा भासी अर देस रै उत्थाण री समस्या में किसो मारी मुकसाण पूगसी। थारै जे भाग जरूरी काम खोटी हुय है तो ई दुणा रा मनेजमट तो सुणमा ई पड़सी। पण बदेई-कदेई मारकेट सपा टस हुय जावै अर इसी हालत म आप चुपचाप घर म आराम कर, आ वात सभाव सू वारै है। हाल-फम हिस जिसै आराम करण री सौगन है। रात मै नींद ऊपरियाकर फिरस माग जावै जण ई बिछावणा भेळा हुवै। तो फेर बजार सुस्त हुवै जद आप काइ करै ? निकमो नाई पाटिया ई मूंडे। केई सध रै घरे जासी पण अठीनसी-बठीनसी बात पेरसी मौको दगते ई भट उण रै कई दूज सू घर पसावण री कोसीस करसी। ज्यूं इण मर्थ रै घर म साय सगावै उणी तरै आपनै रै घरै जायन उण र भी चूपरी देगाळ ई देवै। जद दोनां मै तणा-तणी हुय जावै अर फेर मैंनां सू रगत बरगण माग जावै उण बगत आपरी साथीड़ो पूप हुवै अर आप पाछा राजीसो करावता फिरै।

इसा तो हुवण्या पण हाल बीस में कसर है।

लडाई भगड़ में भट बूढ़िया बढाय'र मदान म कूदण नै त्यार रैवै– मनै केई रो डर कोनी कुत्ती ज्यू बीची जासी मरसा मर मारसा। थाणू तो हूं कै सामनै नै ई चित पासू पण वे दस पक भर एक लाम सू तो भी कोई बात कोनी लडाई म जावै जिका मार सू थोडा ई डरै। राड में तो मार ई पांती आवै कोई लाडू थोडा ई बट।

जे वकील आपनै फन्डपच सू काम हुवै अर मैं आपनै नई लागता हुवै तो आप आंख्यां मीचे कचडी जाओ परा। बठ बारलै बाग मे कोई-न-कोई कुत्ती-साथी गवा त्यार मरता हूवैला। आप कुत्ती गवा देवण मे घणा हुसियार है। थोला थोला वकील आपरी सस्ता लवै अर आपनै मैनताणो देवै। आपरी फीस भी ऊंची कमी इण कारण साचे मामलै भाळा नै ता इती मोंगी गवा पोसावै नई अर आप कुत्ती पाळ्टी री गवा देवै सफा साची हुवै ज्यू अर सामलो वकील'क हाकम जवै जिसा पेचीला सवाल पूछो वै आप बातर बावै हात रो बेल है।

जद इसा री पाळ्टी मुकदमो जीत जावै उण बगत आप रुपिया तो सामल कनै ठोक-पीज'र मोकळा लेय लेवै पण रुपिया लिया पछै कैवै– घरे मई वे लोग लाई पाणारण आदमी हो बाम काम'र दिन काटो बां सूं

मटका करै है एक दिन वे म्हार सागै बारै निकळ जावै तो ठा पड़ जावै कै कीरै मगो काम है पण मा बात पाप मन मे ई सोच'र रैयग्या माय रो माय पीतो गिटग्या। गिटै जापेई— मूल सागै बद किस्या वे-म्हे पीमासा? पाळी तो बीनणी मागै ई माडणी पड़सी। बा वे कोरणा सूकमोड़ा फळका मर पाणी सू बबामोड़ी दाळ मी पुरसती तो ई पेट रो देवता तो सान्त हुय जासी।

ठंडो जळ पिया सू म्हाराज ठंडा हुय जाव   मन मै सोचै मई हूं साचेई भीमसेन हूं।

म्हाराज नै पचासां मे एक बरस घटतो हो जद बामणी वणो देखमी। म्हाराज कैव — आ बीबी जिसे मई तो बीनै होग रो पटकारो ई को दियोनी रुपिया सू बीरी मुठ्ठया भरयोडी ई राखी कदेई बीरो दुख ई को घलाय्योनी अर मोकळा सुख दिया।" पण पाडोसण दुनकतो म्हाराज देख — बगा ई सुख दिया आपडी नै।

आ बात सुणने ई म्हाराज रै भाळ हूँ अर इण पछै दिना लागी इण बात रो मागीरथ करता रैवै — म्हारै जिसी मोटी गजगिरयो कोई है तो बोसै सूं कसूं। अथवा कोई आ समझती हुवै कै हूं धणी माडेसर हूं तो बा म्हारै सामनै आवै। म्हारै घर मे गो सामीड़ो ऊचो मौल इस्मिगदार पिलंग जिण रे पाये बैठणियो फ्राफ्ल उघळण माण जावै। पिलग ऊपर माछरदानी राव मै सोया पछै माछर रो बाप्पो पिलंग मै सू डो ई नई पाण सकै। सुनाई पीवते बखत बीस-बीस पचीस-पचीस गाया भैस्या म्हारै घर मै दूजती ही। जद आ बेठ आवती तो बैसी जोताय'र आवती अर हूं घोडै असवार हुय'र आवतो।

"रुपियै-पइसै री कमी सब-कुछ उण न ई भाळायारी ही। क्यूं कवण भाळ्ठ रा हिया फूट्योड़ा है जिको कंत के उग मैं दुख देखतो। जे म्हारी सुगाई मैं सुख हो तो फेर दुनिया में सुखी सुगाई सायरणी मोती है।

म्हाराज री बात मागै तो सफा साची है पण पाडोसगण कंवं मे मायत रै आमू रा-आमू उपाड़ देखतो। कदेई परण नै चालो गामो दियोनी ना कदेई लाड-कोड मू बतळायी। बा तो मरती बगत इण मसाण मू कोसण री मन में ई सयगी, मर म्रो मझूड़यज हुव ज्यू हुयोड़ो रबतो। बा मरती सराप देयगी के कोढिया! त म्हारी आतमा बाळी है तो म्हारे मरया पछै तनै सुगाई रा सपना ई आसी तू सुगाई-सुगाई करतो मर जासी पण तनै सुगाइ को मिलैनी।

म्हाराज बूढा क पाडोसी बूढा मा तो टा गई, पण पचार पचावन बरसां री ऊमर म भी म्हाराज च्यार-पांच हजार रुपिया दय'र भी ब्याव करण नै त्यार है। जे कदास कोई भोगो टाबर आपरै ध्यान मे आव तो झटपट चिट्ठी-पतरी लिख दिया हजार-पांच सौ आपनै भी मिल जासी। पण इण बात रो पड़ूसद स्याम रासजो कै टाबर

बराएँ-ठिकाएा रा हुव भर मोंवते इ भर मास सेवै । ये कोई नागी कुत्ती भाय वार्व तो तीमू दिन फलीना हुव इण कारण टावर पूमो भी हुवणो चायीजै । जे कोइ सुन्नी-सर्फ़नी भाय जावै तो म्हाराज नै इण बात रो पुरा-पूरो बर है कै कर्म्ई गैणा-माळा लेय'र नब दो इम्यारै मई हुय जावै । मा बात म्हाराज पैंमी सू सुलास करै है के जे कोई बदमाम छोरी भायगी तो फेर हूं गम नहं लाऊंलो । म्हारै हाव री जे एक पइगी ता तीन न्नि पाणी मई मीमसी ।

इण तरै ब्याव री भमर जोत म्हाराज रै मन में रात-दिन बगमगाट करै । पण म्हाराज रा सेठ बमा निरदयी जिणा ने म्हाराज ऊमर रत्ती भर भी बया भावै नई । म्हाराज ब्याव री बात माड'र मीठा सपना लेवणा सरू करै, दूमर परणीज रजन्यो बर पाछो बसै भीनमी रो छमछमाट बर में सुणीज म्हाराज हामरियै-हूलरियै नै घोडी रमावै फेर, लीडी भाय'र रवन्ने रै प्यालै री मनवार करै जद म्हाराज रो सरीर ढापर रै भीममन जिसो हुय जाव — मा जागता सपना मे भाय'र कमरै री छात नई मायो टकराय'र उछळण लाग जावै तो सेठ कैव — म्हाराज बस करो हुवा ब्याव हुयम्यो थांरै !

ब्याव न कोई ब्याव ! बडो ब्याव बाकी रयो है जिको म्हे बरणे ई सकड़ा मे कर बासा ।

म्हाराज रो संसार सूनो हुय जावै गाल डोला पड़ जावै मोल्यां थोड़ी-थोड़ी मारन भेस जिसी दीसण लाग जाव पर सस्कार माडा है मा सोच'र म्हाराज छाती माडो भाटो देय'र रैय जाय ।

मुआजी

हिन्दुस्तान रै बटवारै रै कारण जिका लोग पाकिस्तान सूं प्राण बचाय'र भारत आया वां मांय सूं घणा-सा क नै तो रोवता ई देख्या— केई रो धणी मरग्यो केई री बऊ मरगी कोई परवार में फगत एकलो ई बच्यो घर किता ई लोग जिका रै मजबूताना आसता हा आगम-परमात री रोटी बायरा हुग्या। पण सिन्ध सूं मुआजी आया जिका नै तो हूं सदैई मुळकता ई देखूं। वांरै कनै बैठ'र दो-दो तीन-तीन घंटा तांणी हूं वातां करूं पण वै कदैई वांरसै दिनां नै होटां मायं ई लावै कोनी वांनै याद कर-करनै आंसूड़ा ढळकावणा तो आघा रैया।

मुआजी दिनूगै वेगा उठै। न्हा धोय'र पाठ-पूजा करै। दोनूं वगतां सिम्बर आवण रो नेम। एक पग रै तांण ऊभ'र सूरज बाप रै अरघ चढावै उणा री माळा फेरै। मुआजी एक भगत लुगाई जांणै अर समळ सैर में उणां री भाखी छाप जम्योड़ी है।

पण म्हारै तो कानां री जिग्यासा लुगाई अर एक सिन्ध री पडोसण म्हारै आगै मुआजी री पोथी बांची।

दूध माळो केवतो— माजी म्हारो हिसाब करदो तीन-तीन महना हुयग्या ।

भुआजी— तू भीसोदीसो है थारै काईं परवा है तीन महना ई तो हुया है का तीन बरस हुयग्या ?

दूध माळो बड़बड़ाट करतो जावतो— पइसा बिना गाया रो पेट किया भरा थे म्हानै महल पइसा नईं दिया तो मनै सभी बन्द करणी पड़सी ।

साग माळो— भुआजी म्हैं सौ-सौ बार कैय दियो— म्हारै उधार कोनी । हूं म्हारा पइसा बजार रा बजार लेसूं । आठ बार ई केवै 'काल आए, काल आए' थारो काल तो कदेई आवै ई कोनी ।

भुआजी रै घरे कोई सगी समधण आयोड़ी ही उण रै सामनै ईजत राखण सारू भुआजी बोल्या—

"थारे मोबला आज मिली जाक'र आयो दीसै है । थारे-म्हारे बरसा सूं बोपार है कदेई तू लगावै रो नाम को लेवैनी । पइसा थारा भलरे-भलरे । पगार ई लेजा भलेई । सो रो मोट है भुला मावसी ?

इण तरै साग माळै नै ठंडो-मीठो कान'र भुआजी बईर कर देवता ।

कपड़ै माळो— घर रै बार कर पैदा मालवे पामले

सिरूया आयेई पूगता कर देसूं । सवेई-सदेई थोड़ो ई नटीजे, भोल्यां री सौगन खाय'र धंध करयो हो तो मन किसी म्हारी भोल्यां खारी लागे ? थारै पांच-सात रुपिया खातर हूं म्हारी भोल्यां गमासूं ?

बरतण धोकै माळी– पांच महना हुयग्या काम' करतै ।

मुमाजी– तू किसी लोक है म्हारै थारा जिसी ई तूं है । थारै-म्हारै कोई पइसा रो माठो थोड़ो ई है ।

ब धोकै माळी– यो तो थारो मार्डपणो है, पण थाम ये मास सूं माएसा मासै तो खावै काई ?

मुमाजी– स दो रुपिया लेसै मवार तो फेर हिसाब करसा जणे देख लेसा ।

ब धोकै माळी– मूत री ठीकरी में म्हासनै दो रुपिया । कोई खैरात बाटो हो का किरियावर करो हो ?

मुमाजी– क्यूं मछूंडो पणो बाजण लागग्यो दीखे आजकाल । आमी बद तो पाम हुय र आपी मर पर्ण म्हारो बसम बधी जावै है ?

बरतण धोकै माळी– म्हारो नमूंडो टोक्या तो थे चाऊँ जाणो । पइसा दुनिया री कमाई रा खाऊं, लोकां रा हुक्म-हुक्म'र हुकम को करूं नी । मनै म्हारा पइसा

दे दो मई सो म्हार मिरमी काई भूटी को है मी।

भुमाजी– जा रांड ! पड़मा देय'र भूसयी कांई ? तू मामी जिण दिन ई म्हैं ता थारो ग्यान लिप लियो के कोई मईवाळ चीज पण थाप (धणी) र कया सू रायसी। त म्हारी नूई गी नूई धोती बोरमी घर मापरां मोने रा बाताम थार मिवाय कर ई टळपा कोनी। रपिया मागसी ने रान सरम को मावसी ? ईमतदार लुगाई हुव तो इसो काम कर्दई को करैनी। तू तो बरपी में माफ बुबोय'र मरै जिसी यात है। पसी म्हारी जिनस्या रा रपिया मठै घर बदे माग थारा पड़मा।

बरतम बोड़े भाळी पूल-गसम री गाळ्यां काडती बाढती गयी। जद बदई दोरी कमाई रा पड़मा याद घावमा तद भुमाजी कनै जावती पगीसारी गाळ्यां काडिमावती घर बोगती मुमिगावती।

म्हाजन– या ता मगळ घर रा म्हारै मठै आय'र गमास्या मांवता र्ष– ये ई काम भाडमो मइ तो बेर रो व्याप घटक जामी ईवा रेत में रळ जामी घर थाज है पड़मा पाया मामू जद मानी बोमच मे ई फुरसत कोनी। क्यूं य कोई म्हारै मायै मांगता हा जिको मेय'र हजम करस्या ?

भुभाभी– थांरो गुण तो म्हारै पेट म है। मिनख रै मिनख रा कारज सारै।

महाजन– आ बात तो ठीक है पण सऊकारो तो दिया-लियां सू रैवैनी। काठ री हांडी तो एकर चढै पछै पड़ीवार तो मडग सू रैयी

भुभाभी– इसी बात ना करो। हूं किसी थारा रुपिया मदू हूं? म्हारो बापू मनकै माटरी भरसी। गिरै-बसा बीच सिरैकार है। बापू नै बोनस रो ध्यान बणो थायो है, वैवतो हो कै मनकै इनाम पक्कायत थासी। एक बात। मर इनाम भायो पछै हूं थारा रुपिया एक मिनट ई को राखूंली। मोटै मे हजार रुपिड़िया तो है ई। मिनख री दया बिरता कोई ठाळ थोड़ी ई लागै।

महाजन– थारो बापू तो परमातमा हुसी पण ईसूं म्हारै पाळ पावैक सूण? झट कैय दियो– 'हजार रुपिड़िया।' 'रुपिड़िया' कैवतै थोर को भावैनी। कोई रो पाणी कर'र थोड़ा घणा कमायोड़ा रुपिड़िया'। माटरी मे भायोड़ा कोनी हाथ रोळ-रोळ'र भेळा करयोड़ा है। रुपिया तो म्हे भी लोकां सूं उधार लेवता पर मोकळा देवता पण कदेई इसो मौको नईं आयो कै महाजन म्हारै घरे आय'र तगादो करयो हुवै। ईमानदार रै घरे तो जे

एक बार लगादो भाय भावे जिक मे ई मरण हुय भाव भर य लोक इमा खोटी नीवत रा क बार तगादे रो कोई धमर ई कोनी !

मुमाजी— नीवत खोटी ? भा काई जाण'र कयी । (बेर्ने-धणी न धीरें-सी'क हेलो कर'र) देखो भा काई कैवे है । (फेर म्हाजन मैं) पण थमा थारो दोस कोनी । म्हारी दिन-दसा भाज इसी ई है । भाज म्हारे गत गे गामो ई भरी बच्योडा है तू भासतू-फालतू बात सुणाव जिकै म तो इचरज ई काई ? म्हार तो भापजी रो बीमो करवायोड़ो है । कम्पनी सू भावत पाण थारा रुपिया फटा दैगा फक देसू । जे कुड बोलूं तो मार्डता रै माडयोड़ म बैठी हू ।

इसा किसा ई तगादे भाळा मुमाजी रै घरे भावता पण मुमाजी मूडो देग र टीको काढणा रवता । मुमाजी बजार में निकळता तो पूंछ-फूंर र पग धरता । किसै पासी जावणो है भा सावळ मोच र जावता मुमाजी भवाणचक कोई गळी मे नहीं जावता । एका-एक गया चोर-जार रो डर तो नहीं हो पण सैणायत रो सतरो सामा रैवतो । जे सोच-विचारनै निकळता तो ई भाठ-दस सू तो भेटा हुय ई जावता । पण

थोड़ा दिना पछ एक दिन फेर माजी आयम्या घर म्हार कमरे कनै ऊभम्या । म्हार अबीतवार री छुट्टी कारण फुरसत समझ र ई बै आया हा । जदपी मैं छुट्टी में करण सारू मोकळो काम भेळो कर राख्यो हो पण घरे आयोड़ा माजी नै बैठण री मनवार करया बिना किया सरै ? माजी इरी मैं उडीकता हा। भट पसवाड़ पड़ी ओरी मांथै बैठग्या । जद बै बैठग्या तो हूं कलम मज मांथै मेल'र बोल्यो— काई हुकम है माजी ?

माजी बोल्या—'थारी रळी आयगी जद मिलण नै निकळगी ।

हूं बोल्यो— आछो काम करयो । ठण्डो पाणी लाऊं ?"

माजी कैयो—'पाणी तो हूं अबार पीय नै आयी हूं तिस कोनी । घर में और कुण है ?

'घर म तो कोई कोनी । क्यूं कुण चाहीजै ?"

नई चाहीजै कोई कोनी तू चावै तो भुमाजी री बात थोड़ी और सुणाऊं ।"

थारको भेस निचोवण री मनस्या तो ही कोनी पण माजी रा मन राखण सारू हूं रुची देखाळता बोल्यो

'हां हा मुणाओ माजी ।

माजी बोल्या– पमी बारगो पड पहैं बात मन मन । पे मुभाजी मैं ठा पड़ जावै कै मा री बात तनै मैं कैमी है तो मनै पीर गेरै ।" इमा कयं'र डोकरी मुह उठं'र भाडा बनया । फेर मनै पूछ्यो– थारै काम ठो लोगी का हुवैमी बेटा ? हू ता निकमी हू जणै इमा ई भामगी ।

मैं माजी नै 'काम भाटी' रो उपळो ठा नई दियो पग कैया– हा मज ए ए करो माजी ।

माजी बाडी माम्या बैची जाणै घाई पहै करता हुवै । फेर बोल्या– मै भाज कगम दरजी री बात सुणाऊं । म्हारा घर तो थारे चिपता-चिपत हा इण कारण सगळी बाता री मालम पडती रवती ।

दरजी घरे भाय'र कैयो– 'बाबूजी कठै है ? भाज रो बैण धरम री सौगन खाय'र कहुयोडो है । मिनख मातर तो धरम सू ऊंची कोई चिमस कोनी ।

सुभाजी– बाबू तो दफतर सू भाया कोनी घबै भावण भाळो ई है । थारी मन थारी मैं माय बाए ।

दरजी– पण साईकल तो भा पड़ी है नी । साईकल भायगी भर बाबूजी भाया कोनी भा ठीक हुमी !

भुभाजी सू म्हा दणो काईं उपळो मईं बण्यो। इण बात री मासम म्हगन मैं भासे बिना बोल्या-त ! तू सावळे में भायो है थारो मायो तप्योड़ो है पणी म हुवा सा।

म्हगन बोल्यो– मनैं तो हुवा सावठे भाज दो बरस सा। भापम्यो हुवा भावतो-भावतो। भाज भी ये मनैं ग भाल्या भावो हो भर मनैं जचै क बाबूजी पञ्चायत र में है।

भुभाजी बोल्या– म्हागी समझ लिया पछै हूं कदेई इ बोमी कोनी भर भाज इत्ती-सी क बात सातर झूठ बोलसू ? थे घर मे हुवै भर कैय दू 'है' तो किसी फरमी भाग है ? बाबू रै साब री मैम री हालत कावळ हुयगी इण कारण साब खुद भोरा मोर भापरी मोटर में बैठाण'र बाबूनै लेयग्यो। मनैं तो सोच भो है कै बाबू दिन भर रो भूखो है जीमण सातर ई भायो कोनी ।

म्हगन रै भुभाजी री बात सावळ जची तो कोनी पण करतो काई ? कमर मार्थै डावोडो हाथ घरे धीरै-धीरै घर सू बारै निकळग्यो।

भाजी बोल्या– हूं एक बात कैवणी भूलगी ही। पद म्हगन भावतो दीस्यो तो बीनै भागै सू देन र ई भुभाजी

बेट में डागळ भेज दियो अर भयो दरजीडे मूं ई धापेई निवेडो कर लेसूं। पछै जद दरजी मयो परो तो मुआजी बैटें नै हेलो कर र हेन्टे बुलाय लियो।

छगन नै टरकायो जिकी मोत मार्थ बेटो मा री बडाई करण लाग्यो ई हो का मरी दरजीडो फेर घाय बळ्यो! मा जी बणू दुनिया नै बोलो देवो? अबार तो थे केवता हा के घर में कोनी अर मैं पूठ पोगी जित्ती ताळ म त्यार!

बापू सू तो कोई बोल बण्यो नहीं। पण मुआजी नै बोली म हराबगियो सायद ई कोई बसम्यो हुसी। बै थाळ काढ'र बोल्या—बापू तो पिछोकडे सू आय'र अबार घर म बडयो है। हाल तो मोळो ई खोल्यो कोनी डील रो पसीनो ई सुकायो कोनी। तनै भरोसो नहीं हुवै तो आ देखलै आ पगरखी पडी है पिछोकडै में।

छगन ससपज मे पडग्यो सायद पिछोकडे सूं आयो हुवै। अर इण ससपज रे कारण आधै मिन्ट तक बो गुमसुम ऊभो रैयो। मुआजी नै मौको मिलग्यो लागर छगन रै मार्थ मिन्ट री साती मोकळी ही। बै तड़ र बोल्या ई आखर बा लोका मे बाद रो मसर आया बिना को रैवेनी। सामलो आदमी मलेई भूलो हुवो आपै तपत सूं

फळ-मळांवसो हुवो वे मन पइसा मांगण न मांय जाओ।

घमन कयो– माजी दस करो। सोमा आयमी। आत वगाणने मानै सरम को आवेनी ? मिनख जात सू ऊंचो का हुवेनी करम सू ऊंचो हुवे। ब ऊंचै कुळ में जनम र भी ज लोका रै पसीनै री कमाई माथै हराम रो बिस देय'र बैठ जावो तो इसै ऊंच कुळ सू आप रै काम सू काम राखणियो नीचै समझ्योड़ कुळ में जलमणियो माग ऊचो है।

बाबू मजाक में पूछयो घमन ! सतसग में जाव दीसै सू तो।

घमन तड़क'र बोल्यो– म्हारै सतसंग सू कोई सेनावो कोनी। हु म्हारा पइसा मागू हू। मर वे सीधै रस्त नहीं दिया तो मनै कचेडी री सड़क देखणी पड़सी।

मुमाजी बोल्या– म्हारै घरे माय र तै म्हारी ईजत खराब करी है। लेण-देण रो हुसाब माई जीरा सू निकळ राख करणा काम थोड़ो ई मानै। मिनखपणो तो थारे मे है ई कोनी। तू तो हिड़कियै कुत्तै दाई पाधरो वटको बोड़तो ई हुवै। सामलै मिनख री ईजत रो तो काइ ध्यान राखें'क नहीं। थारी घर म्हारी ईजत एक सरीखी तो कोनी।

घमन बोल्यो– थासे आयमो ईजत रै। वे था

बतावो पइसा रो काई कैवो हो ? ज्यू बाबूजी आज रै मैण रा काई हुयो ?

मुआजी– अबै रुपिया बारा कचेडी मे ई मिलसी। आ पछी कचेडी आ करदे ताबो।

मुआजी री बात कैय'र भाजी आसा बकम्मा हुवै ज्यू सवाया। मैं पूछयो– 'भाजी बकम्मा ? भाजी भीत रो सायेरो ले लियो फेर बोलण लाग्या इतै में आपै माळ बारै सू हेलो करयो। हू आपो लेवण बातर उठ्यो। बारणो खोल्यो तो टाबरा री टोळी जिकी आपरै नानाणै पीमथ नै गयी ही हाका करती पाछी घर मे[आमथी।

भाजी रो फेर सुणावण रो मन तो रैयो पण टाबरिया री च्याम-च्याम अर फेर मुआजी री गुपत बात! इण कारण भाजी लकडी साम'र फेर गाभोडो हात मोरै माथै देय र ऊभा हुयग्या।

म्हूं कैयो– 'आज तो घणी किरपा करी भाजी।

इण बात सू भाजी राजी हुया। उम्मी काढ'र तमाखू री चिमठी सूघता बोल्या– 'अच्छया बेटा! अबकै अदीतवार मै फेर आसू।

उभराणा माजी

ऊमर अस्सी-पिच्यासी ऊमर सगळी झुरयोड़ी चामड़ी सगळी मळ सू ढीली हुयोड़ी चालती वेळा हाथ तो मोकळा हिलै पण पावड़ो मोळो भरै इण कारण गेलो कमती कटै । बळ-बळता तावड़ो जिण सू पगरखी रै माथै भी पग सीजतो हो पण माजी साव उभराणा पगरखी रा नाव तक नहीं बोदी जूड फाटी-पुराणी ।

मैं पूछयो— माजी ! इसी भट्टी दई तपती सड़क माथै थे उभाणा चालो हो थारा पग तो पकायत बळता हुसी ।

माजी तो सागी चाल सूं चालता रैया कांई उथळो दियो नहीं । उणा र साथै एक माजी और हा जिकां री ऊमर पैंसठ बरसा रै अडगड़ै ही वे बोल्या कै माजी आपरी ऊमर मे कदेई पग मे पगरखी घाली ई कोनी ।

म्हारो इचरज बधग्यो । मैं पूछयो— इण रो कारण ?

छोटा माजी बोल्या— अद टाबर हा तो घर-कुब मे कदेई पगरखी नाव ई को भायोनी । वो दिना गरीब घरा मे पगरखी री बणी चलण भी ही कोनी । भाभा रा टाबर खेत चाकर चालता सो का तो ऊठियै री

धुई मासे पूग जावता का बळधा-गाडी माय जावता परा। अबार रा टाबर क्यूं क्याग जानी चकुर काई है इसी बाकरत बा बिना घूमण री पढती कोनी।

मैं उतावळ सूं पूछयो– 'ठीक है टाबरपणो तो बिना पगरखी काढ दियो पण समझणी अकल आया पछै तो पगरखी पैरी हुसी ?

उथळो दियो– मोट्यार बणता हुया सूं ब्याव हुयो घर ब्याव हुवन ई सासरै रैवण लागग्या। सासरै में परवार मोकळो रामजी री दीन–सुसरो दादे सुसरो काकै सुसरो बडिया सुसरो घर सात बेठ। वे पगरखी सब करयोड़ी हुवती ना ई पगरखी हात में लिया-लिया चालणो पड़तो कारण सासरै म आ माईना रै आस कर मा पसवाड़ घर तो पगरखी पैरर्यां निकळीजै कोनी। आ बिना बडा री इसी कारण ही। अबै तो कुण पूछै है बडा नै ? अबै तो सड़क मार्थ चवड़ैधारै मिनख-लुगाई हात सूं हात पूबे चालै पगरखी खोलणो तो गिवाऊ मिणीजै।

मैं कैयो– माजी अब उमराणो फिरणो आजकाल गिवाऊ गिणीजै है तो अबै पगरखी क्यूं नी पैरो ? अबै

सा पाग मुधरा घर बेठ गोई कायम सायद ई रैया हुसी ।

माजी आप बोल्या— 'म्हारै सू थका सगळा सिधारग्या । हूं एक ई अभागण रैयी हूं । म्हारो तो मौतगी चिट्ठी ऊंन्रा लेयग्या दीस है । घर पगरखी रो ते पूछपो तो हू भवार री बगत म तो हू कोनी । म्हारै ता पगा रै उभाणा रैवण सू इसा तळिया बंधग्या के ठंडै तात री म्हारै पगा मै कांइ ठा ई पड़ै कोनी ।

खूमो बरफ आळो

रंग कोयलै जिसो काळो कोयलै सूं भी बेसी काळो काळै नाग जिसो । डील भलै तो कस्स बायरो है पण जवानी जवानी में डील में करार हो । पट्टीदार गाभै रा धड़ो पर धोती खूमै री पोसाक । माथै में तेल मोवणो सीचै । सीयाळै में तो पाणी सू नहाय'र सीचड़ै सारै ताता तेल लावै—तिल्ली रो । ईमू हाडा में बारैमास पौष बणी रैवै इसो खूमै रो विस्वास है ।

खूमो पैली तो एक पेवटी में ठंडी बरफ राखतो अर सिंझ्या ताई छव आना आठ आना कर'र भरे आय'र सुख री नींद लेवतो । पण मोंगाई कमर भाग दी । अबै आठ आना छव आना सू कांई पार पड़ै ? इण कारण खूमो अबै बरफ रो गोळा करण लाग्यो । बरफ घस'र बाळण ऊपर भात भात रा सबत रालै पाण बिक्री अर और केई तरै रा । पइसै रो दो पइसा रा अर आनै रो । गाड़ै में ब्याव मेर चौकट में लाग कराबोड़ा जिका में बोतल्या री लैरण । दो-तीन बोतल्या में तो सरबत अर बाकी में रंगीन पाणी ।

खूमो कैवै— दुनिया रंग मांगै रीझै इण कारण

रंगीम वातळपा रा दम्मापी करणा पड । म्हारी काळो रंग मी मूगसो है इण कारण हू रग रगीला गाभा पहूं । गामो मिलस री मैंब न दर्स ।

गाडे र हूते एक टोकर सटक जिका गाडा चाल्या में मापेई वाजे । टोकर रा टण्णाट मुगता ई छोरा-छापरा मापई घरां माय सू पहसा लय-लय'र माय जावे । मूमो सूव फुरती सू छता-पान मार बगावे तो ई टाबर उतावळ घर खड़भड़ाट करया बिना नई रैव । कदेई-कदेई इण खड़भड़ाट मे टाबरा रे हात सू मूमे री पोतळ भी फूट जावे । वो टाबरा रै माईता मे मोळमो नई देवे । टाबरा नै धमकाय'र भगाय देवे ।

मूमो टाबरा री उधार भी करै मर सगळा टाबर माप-मापरा पहसा मापेई लाय'र मूमे नै देवै ।

पद मेळा-लेळा हुवे तद मूमो गाडे मे सजाय'र स जावै मर माप भी सजधज'र जाव ।

सैकरीन रै जमाने मे भी मूमो सरबत में खाड नामै सैकरीन नाख'र मीठो नई करै । वो कैवै– टाबर म्हारा जिसा ई हुवा रा । हू म्हारै हाथ सूं वैर को खोळ सकू नी ।

बरफ रो गाडो करता मबै मोकळा बरस हुयग्या घर गाडै न मुक'र धकेलण कारण मूमे री कमर भी

धौस्या सू घागून झुड़गी। झूमा कया करै—कमर आपेई झुकै खुराक तो मिलै कोनी। खुराक रो पूतळो तो खुराक सूं ई चालै। जे मनै रोटी मावळ मिलै तो पहला री सू तो म्हारी झुकयोड़ी कमर झट पाधरी हू जावै।

झूमें री खुराक भी ठीक ही। जीमण मे ताड़ चूरमो पूरी साथ हुसी तो चूरम सिवाय बीजी जिनस रे हाथ नईं लगावै। धीरै धीरै जीमता रैसी अर क्यूं ऊठ पेट में पाणी भेळा करै जिया झूमो भी जीमण मे एक दिन चपटचा माल चाप'र फेर दो दिना री मनकी कर लेवै।

चपसै दिन झूमा तांगै मे हो अर आपरे बेट रो सायेरो न राम्यो हो। मनै देखतै ई बोल्यो— अस्पताळ जाऊ हूं कमर र इलाज सारू। सावळ हुमम्या तो फेर आय'र राम राम करसूं, नईं तो थे ई आखरी राम राम है।

मारजा

मारजा सूं बडा अर छोटा सगळा भाई परणीजग्या पण मारजा हाल कंवारा है। हाल भी ऊमर घणी कोनी चाळीस-पैंताळीस हुवसी पण छोरयां रा माईत आगे सगळा आथा है। मारजा जिसो हिस्ट-पुस्ट हट्टो-कट्टो कमाऊ जवान बारी आंख्यां हेट ई आवै कोनी। पण जिकै दिन फेरा री रात रो जोग है बी दिन बिना बुलाये कोई आय'र मारजा री गरज्या करसी।

नगरपाळका तथा सरकार री इस्कूलां सैर में मोकळी हुवणे पर भी मारजा री पोसाळ मागीजी चालै। भी डेढ सौ छोरा सूं कम मारजा री पोसाळ मे कदेई नईं रवै।

छोरा री फीस मारजा न्यारी-न्यारी कर राखी है वासी बाणीको– एक रुपियो बाणीको-हिन्दी– दो रुपिया जे साथ अंग्रेजी तो तीन रुपिया। ऊंची इस्कूलां रा परमाण मुज भी मारजा री सिखसा सूं ईसको करै।

मारजा री इण सफळता रो कारण है मारजा री मैनत। बारै मास दो बगत इस्कूल लगावै। केई छोरै री हीमत नईं कै प्रार्थना री बेळा हाजर नईं हुवै। जे कोई मोडो आवै तो माईत नै साथै लेय'र आवो एकलो आया मारजा माफ नईं करै।

सपळा पाठा सिमरखा अर माळवी बांचणी मगळा छोरा साक जरूरी । उठा हुचा समाया सैरा पूगा सगळा पाठा छोरा री बीस माथ पन्पा है । बडा-बडा सवाल विका नै इसूल्या रा छोरा पाटी-बसरणें मगवा कापी पेमसळ सू करैं मारजा री पोमवाळ रा छोरा दखा घंट मूंडे बतावैं चिमठी बजावैं जिणै मे !

मारजा कोरा मारजा ई कोनी गवैया भी है– मीरा तुळसी अर कवीर रा मोकळा पद उणा नै याद है । मह्नै मे दो एक्या अर दो माळ्या इण तरैं च्यार छुट्टया रावै । छुटी रै दिन सतसंग मे जावैं अर बठै मारजा रो भणो भाम हुवै । पण मारजा जिसा पढावण मे हुसियार है बिसा गावण म कोनी तो ई लोक मारजा नै गवाव । पं नईं गवावैं तो मारजा रीस कर लेवै– म्हे तो कोस मर सू चमाय'र भावा मे मिणा न भामी, सैया मिणा न तावडो ब्याव-गिणा न सावो एडो मिणा न टाकडा धूळ गिणा न तिस मरणो मिणा न परणो अर थे म्हारै कनै गवावो ई कोनी ! बात आ है कै मारजा रै गळै मे प्याम कोनी अर बास बाळ्या हुवै क्यूं मारजा सतावै इण कारण मिनख तो मसखरी खातर मसेई मारजा कनै गवावो सुमाया म माम-भगती वेसी हुवै । वै भजन मावे

ध्यान देवै कंठ मीठो हुवो चावै आडो ।

एक दिन मैं मारजा नै पूछ्यो– 'थांरूं ब्याव रो काईं बुगाड़ हुयो'क नइ ?' मारजा बोल्या– बोहम कुणो कोनी । आज सूं बीस बरसां पैली एक पिंडत म्हारी जनम पतरी देख'र कैयो कै ब्याव रो जाग तो तेवड़री में ई कोनी । बी वगत तो मनै पिंडत री वाणी मूरखाई री मतायी पण आज हूं देखूं हूं कै म्हारै बराबर कमावणिया समाज म इण्या-गिण्या मिनख है फेर भी म्हारो ब्याव हुवणो तो आघो रैयो आज तई कोई मागो तक को आयो नी । ईं सूं मालम पड़ै है कै जलमपतरी म जोग कोनी । अर जोग सूं परबार तो कोई करम हुवै कोनी।

मारजा रै समपण मईं थूकण रो कारण सायद उणा रो सनकी समाव भी होयें सकै है । मारजा रो छोरा नै हुकम है कै जद मारजा मसाणा मे स्यारे गयोड़ा हुवै तो छोरा भी बठे आवै । अर सावेई मसाणा रै पसवाड़सी बगेची में निरी बार मारजा रा छोरा हाका करता सुणीज्या करै ।

मारजा रै मायो मारजा नैं पाव दियो कै बे था मूरखाई ना करो पण मारजा मरजी रा राजा है, बै कैवै कै जद टाबरां रा मांईत माफ मे मळ थासैं कोनी तो बे टोकण आळा कुण ?

मसाणिया अचारजजी

इकोमडो डील मरामरी कद माथे मे भासा धोळा कम सांवो कोट ठोडी माथै कोई-कोई केस पण मूछ्यां बडी-बडी उमर पैंतीस छत्तीस लिलाड माथै बडी सारी टीकी पेरण नै धोळो धोती अर केसी पगरखी। बीकानेर रेलवाई दफ्तर म अचारजजी बाबू है। घर रो भार आपरै ई माथै है इण कारण ई मुगाई म छोरो-मोरो काम चलावै। नाम है बस्समदत्त।

गळी-गवाड पास-पडोस में कठई कोई मौत हुसी तो लोक अचारजजी नै पहुंचण देवो आसी। बेरो पड्यां पछै अचारजजी पुरस्योडी थाळी भी छोड दै अर पग म पगरखी घाल्यां बिना ई मुरदै रै घर सामी भाजै। पण फेर भी आप भाट मे बीस-पचीस रुपिया बासण नई धूजै कारण कदेई-कदेई मुरदै खातर लकड्यां रो जुगाड भी आपनै भाट सूं करणो पडै। जे लारला दवै तो आप लेलेवै नई देवै तो आप मांगै कोनी।

मुरदै री सीढी बसाण मे आप बेजोड है। किसी

न्हाण खातर किता आछा वास मावणा किता प्राधा गाता जवावणा किता माटा लगावणा इण विधा रा आप प्राप्रा जाणकार है । जाणकार हुवै प्रापेई— ग्रो इसो काम है जिके न साधारण लाक तो ऊभा-ऊभा देखता रैवै प्रर प्रचारजजी नै ग्रो मूडो काम महनै मे पाठ-दस वार करणो पडै । इण री प्रसर भ्रो हुवै के कदेई भाप दफ्तर मोका पूगे घर कदेई प्रापने समूळी छुट्टी लेवणी पड़े । इण कारण आपरी कुट्म्बा तो मुरदा बाळण म ई पूरी हुय जावै व्याव-सावी खातर सवरण लाक नीठ निरावळ प्रापरी छुट्टी उवरती हुसी । मसाणा मे तो प्रापरा दरसण हुवता ई रवै पण व्याव-सावै प्रथवा दूजै एड टाकडै माथै आपरी सूरत दीखै नई इण कारण लोका आपरो नाव धरप राख्यो है— प्रचारजजी मसाणिया ।

भरथी बामण रै सिवाय चिता बणावण मे भी आपरी खास हुसियारी देखणी में भावै— किसै मुरद खातर, किसे रोग र रोगी खातर किता मण काठ लागसी भाप मोळ धाना ठीक बता सकै है । पण कदेई-कदेई इसो भी मौको भावै जद साथिया रो टोटो हुवै । इण हालत मे प्रचारजजी रो निमळो बाळो मुड़दा ढोवण री भी प्रमोली

जिमठा वेसाळै । मुड़दा डीवण रै मसाणा मापनै कई बार मसाणां सूं आसा मायी ग्यम सू लकड़ भी ढोवणा पड़ पण फेर भी मुड़दै खातर माप वैन् री ब्याज छोड़वै इसो मापरो नेम दीसै !

इसी निस्वारथ सेवा करण माळा री वेम मैं माप र कोड़ो है, इसी कारण मापारी मामाथी सावळ पतर्प कोनी । बठै पड़सो दीस बठै बुम्प-नेल री स्हासा मार्प गीवा वई, कोक मैंदराजण नाम मावै । बीकानेर री घस्पताळ मै रतनमड रै एक सेठ रो माटियार बेटा पूरो हुयग्यो । मबारवजी नै समाचार पूग्या । घस्पताळ मामा तो देखें— मृतक री सोळै-मतरै बरसां री बैन बिलै मू मामो पटकै पण मुड़दै रै बसाणै खाक बीरै कनै पइसा रो बळ नई इण कारण गळै री बीसड़ी सोनै री सावळ काढ'र बी मबारजमी मारी मेल री । काठो छाती माळा मबारजमी रा नैण भी भरीजग्या । छोरी रै मार्प हाथ फेरते वा साकळ पाछी करदी घर मसाणो माप री माट सू करयो । मा बात न्यारी है कै छोरी रतनमड मामनी मबारजमी रो ठिकाणो सेमणी घर बी मनिमाडर सू रुपिया मेवाम दिया पण म मवास इमा री ठौड़ मेई हुवे

र हाथ धीमडी साकळ पड आंवती तो फेर पाछी रसीद काढ र कुण देंवतो ?

या सेवा करता महाराजजी नै पन्द्रै-सोळ बरसां सूं बसी हुयग्या हुवला । पर महार तक साळपोड़ा मुद्दां री जे म्ह गिणती राखता तो सायद यो भी एक रिकार्ड कायम हुय जावतो । पण महाराजजी नाम खातर रिकार्ड खातर सेवा को करैनी । मिनख है इण कारण मामख री सेवा कर ।

—

ब्यासजी

घर सरामरी सू मोखा पण होस बपेजदार। उमर पचावन सू माम साटा मेडी धूमगी पण हाल ज मूछपा मूछाम र बय दी कै टाबर बंधारो है तो मोप। ब्याव तीन करचा पण ब्यासजी रै भाग म लुगाई टिकण रो नाम कोनी। मयार भी घणा है तीनूं री तीनूं दगो दयगी।

ब्यासजी जवानी मे कळकत्तो कमायो पण अब कारजा बोळा बरसा सू अठै ई एक छोटी-सी'क दुकान करै, घर टेम काटै। भगवान री दया सू बेग कमाऊ है घर पोता-पारया सू घर भरयो है।

ब्यासजी भोर मे बेगा उठ घर मारा-भोर कबूतरा रै पीजरै पूग। सगळै पीजरै मे बाळट्या-बाळट्या पाणी उथाय'र कचन री जात कर देवै फूम-फरको टीप-टाप सूणे-अपूर्णं भी रैय नई सकै। फेर आप बेमार कबूतरा तथा बचिया नै मोटै पीजरै माय सू बारै काढै घर छोटो पीजरो भी साफ करै। रोगी कबूतरा रै वासा मायै दवा दारू रो भी परबन्ध करै।

पीजरै री सफाई रै समासा कबूतरां रै चुग्गै रो भी

आप सोच राख्या। दो-दो च्यार-च्यार आना माग र आप दाना खातर पइसा भेळा करै। परमारथ काज एक बखत खातर हात पसारण म भी आप लाज नइ करै।

आप आपरै धड रा मिरपण है अर पंचायती री बगेची रो सगळो काम आपरै माथै ओढ राख्यो है। एर्ड मुलकै माथै बाहीज जिका बरतण भाडा गिण र देवणा फेर पाछा गिण'र लवणा। कोई टूट-फूट नई गयो हुव इरी भी आप निगे कर लेवै। न्यात रै जीमण-जूठण में आप काम-काज साव भी सगळा सू पैली पूगै इण कारण व्यासजी रै पूग्या पछी लाड नइ गळ।

जीमण म काना-भाणा भी आपनै करणा पडै-जात-न्यात अर कार-कमीगा रा। आप कारवा रो गळो नई रोसै अर उगा रा बाजब काम करै।

लावण-पीवण र काम म तो और भी मोकळा लोक हात बटाय लवै पण आप एक इसो भी काम सूप राख्यो है जिण म कुणकोई हात नई घालै। अर वो है- कफन फंड रो काम। इण फंड म कफण सिरिया बास फूम्या मुगटा नारेळ, खोपरा छबछबीलो चनण तुळछी आदी मम्नमम मे बाहीजै जिकी सगळी चीज्या सावै। पैली आ चीज्या खातर बजार मे पठीनै-बठीनै

मैंमाळमी ?

इण रै सिवाय ब्यासजी रै एक मोच और है। कफ़ण फाड़ रो काम तो दोरो-सोरो चाल ई सी पण उणां न सौ उरम पूग्यां पछै छोरां नै मोफत म भुण पढामी। धर रा मत्सपती कोनी पण फेर भी विद्या रो दान मोफत देवैं।

ब्यासजी कनै जे थे चावो मागण नै जासो तो पाधरो कैमी– भैवण-दिरावण नै तो म्हार कनै काई है कोनी धर सरीर मू सका चावो तो जित्ती वण सकैं बा करण नै हू त्यार हू।

परमातमा ब्यासजी री जवानी समाज रै भाग मू बणायी राखै।

इन्द्रा

सांवळो बरण बड़ा-बड़ा नैण नैणां मांयं चमको अर नैणां में अनोखी पवीतरता। पूरो कद डील म हिष्ट पुष्ट डील मायं तेज– सन्त-महातमावां रै हुवै जिसो। गणपती री बेटी सीस-मालक री धण बतीस-गैणीम अमर, नांव इन्द्रा।

घर म सासरै अर पीरै मोर म समळा सू पैली उठै। नौकर चाकरै घर सू भावै जिती उवां रा आधो काम इन्द्रा आपरी मरजी सू कर देव। दिनउगणा उठाम'र बारी सावळ झट फिरै। माथा ठोरकर मेमे। कमरा मजकावै। पछा सामी बामण मावै गाजी-गाजी हुरता बती बारा इण काम मे उगनै आरोग्य री आपनी हुवै।

सासरै मे देराण्या जेठाण्या अर पीरै मे भैना भाभायां अर सामी डील किरत्या हुवै उण बगत तक में इन्द्रा बासी काम पछै न्हाया धोवा कर'र पीरै मे मा-बाप अर सासरै मे सासू-सुसरा री सेवा मे हाजर हुय जावै। उवां रै बातर चाय-दूध रो परबन्ध करयां पछै ठाकुरजी री सेवा मे बैठै। मा-बाप सासू-सुसरा नै जीवता देवता

मान र इन्द्रा बारी सवा करै । जीवता देवतावां री पूजा पैली मूरत्यां री पछै ।

ठाकुरजी री सेवा मे इन्द्रा घणी तल्लीण हुवै इण कारण जद वा पूजा मे बैठी हुवै तो कोई भी बीनै बतळाय'र बिघन नईं नाखै । ठाकुरजी रै सामी वा टळै-टळ आंसूड़ा ढळकाती अर तल्लीण हुयोड़ी चितराम री हुवै ज्यूं बैठी रवै ।

मिसराणी रै पाछनै घणा इन्द्रा रसोई म सामेरो देवै । रसोई करण मे वा पाक-शास्त्र म छेक बैठाणी; पण कुळनाई इसी कै साधारण मिसराणी नै कैवै— मिसराणीजी मनै थारै जिसी रसोई करणी कद आसी ?

थारै सू मैमान आसी तो बीरै सामेला घर रा दूसरा लोग तो मूढा सुकावण नै लागसी पण वा आगती मैमानां नै पसवाड़ा आपै जड़ावणी आदर देसी । मैमान समझ सकै कै अठै ई आ हुवो वा मिसना पाण इसी घुळ-मिळ'र बात करसी जाणै बरसा सू पिछाणती हुवै । उणा री सुविधा अर सोरफ रो सगळो ध्यान राखसी अर आपरा काम आपा मैसनै बारा काम करसी चित-मन सू ।

इन्द्रा रै मन म इसी कुदरती लोच अर मिठास है

कै बखाण मे नई आव । बींगो एक पेटेंट गीत है–

ईश्वर की गति मैं क्या जानूं
एक भजन करना जानूं ।

पण सचाई आ है क इन्द्रा सुर री मन भर भजन करणो दोनूं काम साथरी साथ चाली । पण आ बींगै कंठा सूं भजन सुण लो आपेई उणरा नैण मूंदीज जाव अर सुरता भगवान सूं जुड़ जावै ।

इन्द्रा मोदी है आगमी रा एक बेटो है जिकै नै मोदी री ऊमर सूं सबर'र भणार नई इन्द्रा पाळ'र बडो करयो है । माई मा री बुलाण इन्द्रा नै नैड़ी ई छड़ी कोनी । आपरी बटी सूं इण बर रा साव सवायो राखै ।

झंडे आळो बाबो

मम बारी जवानी माय कोनी ठेट मू फिड़काबरी बाबो ई याद है। सिलाई वड़ा-मारा घर मांथै ऊपर भात री बण्योडी एक भारी भारी वडी ऊंची ऊपर सू साकडी टोपी जिण माथ भात भात रै रंगा म अनेक देवी-देवतावा रा भाव घर चितर माड्योडा।

काट माथै माळा गुडमा लगायोडा जिका में सभा माई रपिये रै सिवाय तोलियासर कोडमदेसर भैरूजी री मूरत तथा रामदेवजी घर बाबाजी रा पगलिया हुवता। हुवता सगळा चादी रा।

हात म एक बडो-भारो केसरिया रूमुमल झंडो जिण रा बडो भी मोकळो बजनी हो।

बाबै नै देखत ई छोरा-छोरी केवता— 'झंड आळो बाबो आवै घो हो झंड आळो बाबो आवै। सगळा टाबर बाबै नै याद सू देखता।

घणगोर घसमा बीजा मळा में बाबो सोमे रा गुडमा लगावता घणी बडोडी टोपी पैरता घर सावै झंड आळो झंडो धारण करता जिण सू मेळ म सगळा नै मालम पड जावती क बाबो मेळ मे आया है।

ज्यूं-ज्यूं बाबै री ग्रौस्था ढळती गयी नवी टोपी हळकी पड़ीजती गयी झबो भी मोटो हुवतो गयो। और तो और दाढी भी मोटी हुवती गयी।

बाबै री भारी टोपी ने बाडा ग्रादमी ग्रोळखै तो मायो बरणाट करण दूर आवै पण बाबै नै वा हळकी फूल जिसी लागै— इणा बरसा रै ग्रभ्यास कारण।

गळी रा नागा छोरा बाब सू घणा डरपा करता कारण सूबा छोरा री भीड़ बास'र बाडा छोरा नै बाबो फटकार देंवता।

बाबो खास-खास चौरस्ता माथै ऊभता अर जे लोग सामता तो जोर जोर सू उपदेस री बाता सरू कर देंवता। बाबै री बोली सुण्या पछै तो नग नायका भी लोक निकळ-निकळ र बारै धाम जावता। ज्यूं-ज्यूं मांवा री तादाद बधती बाबै री बोली सगळा म सावळ सुणा बम सारू जोर पकड़ लेवती।

बाबो अमेसरजी रै मिन्दर में रैया करता। मिन्दर री पूजा करता रूखाळी राखता। बाबै रै बिना म मिन्दर मोकळो चमचमो। मिनख-लुगायां रा गट मझ्मोडा रैवता। दिनूग सिंझ्या भजन-कीर्तन हुवता। हुवै तो अबै भी है पण बाब री छिब बाबै सागै गयी।

मबारै मंपारै चीज-बसत र काई-मेसै म कामणी गै ऊनाळै मर चौमासे में बिच्छू साया करै। कामणी चीड गी पकी है, तो ई दात मीचता मीचता उणरो गेब पाडोस्या रै कामा ठाई पूग जावै। मइन म एक-दो बार चीरी रो डंक लाग जावै पण कामेरी न बिचलै री चूंपकी रा हुक्म कोनी। कामेरी सासू मायसी बळ है।

गामै म लासी फम्या पैली कामेरी मापरी घाम रा काम निवेड ल। बंधी रो धूम देम'र मावै मर मापेई ऊंच-ऊंच'र पाणी रा घडा लावै। कामरी मैनतण मर पकी पिणिहारी है।

बाणिया रै घरै बिसोवणा करै मर रसाई करै। घरे मावती बास री तपेली भर र लावै मर रमबार मूं घर रो काम चलावै। कामरी कमावणी है।

सेठा रै घर म मी माव रै मिमता मीं मर निकळ पण कदैई उणरै मावरण मावै खाटो गई मागयो। कामरी चरित्रवान है।

मापरै घरे कामेरी रसोई करै। सासू-सुसरा गी चाकरी करै। उणा रा गामा धोवै मर बाने पहमै मर मी सू रोटी खासै। कामरी धरम-परायण है।

दिन मे मोल रा पापड बटै बाल-चूल माम्मा करै

रात-दिन धंधै म खुरयाड़ी होसी पर भी पाड़ोस-पाड़ोस री लुगायां नै काम लागर नटण सार जाणै कोनी। कामेरी मिळणाऊ है।

मामूली नाच-कूद गो कामरी रै काम मांयै असर नईं पड़ै पर मूठी बेमारी कामेरी सू डरै। कामेरी निरोगी है।

कामेरी सासू-सुसरै घर धणी गो पेट पाळै पण उपारी चीज मांयै कामरी री बडाई म एक सबद पण मांयै नईं। जे कोई पाड़ोसण कामेरी री बडाई करद तो भी सासू-सुसरा मे बरदास नईं। बै टोकै— 'म्हारै टाबर नै बिगाड़ो ना। इतो ई नईं घर माळा कामरी सू लड़ै जिका पालनी म— काईं करा तू कामेड़ी है तो ? घर म माय'र बधेपो जितो'क करयो ? कामेरी चुपचाप सुण लवै। कामरी धरमसूत है।

मा-सा

माई बाणिये र घरे जनम लियो पण बाळपणरी में लाड घणो कम्मो होण रै कारण सासरो किरोड़पती सेठ रै घर हुयग्यो। रंग गऊ वरणो हो पण सेठ कैयो म्हारे फूटरी सू मतलब कोनी म्हा जिण कुळ मे पासी मोरी घणी जिरमी हुवेमी। माचई, सेठ रै कुळ में इणा री कूख सू बेटा-बेट्या अर फेर पोता-पोत्या दोहिता-दोहित्या सू घर भरीजग्यो अर लोक इणा नै मा-सा मा-सा कैवण लागग्या।

गरीब बाप रै घरा जलम्या कारण मां-सा मे गरीबी रै दुख रो पूरो अनुभव है अर इणी कारण बाप दुखी रे दुख सूं पसीजे। बालक री रुपियं-पइसे गाभै-लत्ते धान-चून सू सायता करे। महफवाळ भाम पेस करजिया असेई खासी भावो मोर वो सगळा भाभी-भइपी भास पूरीज्योडा पाछा फिरै। जागा-जागा सगायोड़ो पइसा मापरी दानी पिरकरती री छाप भर।

घर में नोकर-चाकर बेमेषा है पण मां-सा नै घड़ी एक आराम करण नै बेळा नई सापे मोकळे परवार में

काई मांदो है काई जावे म है कोई पैसड़ो मस्पानरण मां है कोई परदेस सू श्रायोड़ो है कोई परदेस जावरण वाळो है कोई प्रसपताळ म भरती है पण इसो कोई नई जिए री साळ-संभाळ मा-सा निज हमेस नई मेवै। श्रापरै हाव सू पाटा-पोळी आपामन रै सीरो वईर हूवण वाळा र मीठो बूठो श्रापरै हाव सू करै अथवा श्रांग्या सामनै त्यार करावै।

मोदी श्रासी तो कपड़ा रो हिसाब श्रापमैं ले लणो पड़ै जड़ियो श्रावै तो हीरा-पन्ना काढ'र दवणा पड़ै आग्या रै श्रागे घड़ाई करावै सोनार नै सानो तास र देवै दरजी नै थाना काढ'र देवै। श्र समळा काम एकै सागै हुवता रैव मा-मा री निजर हेट कोई मा हीमत नइ करै के बोड़ो गोदाळो करै कारएा मा-सा री आख्या मैं सूगण श्रामणो मैज कोनी। पण श्र कदास कोई चूरण वालन री चस्टा करसी श्रर वीरी मा सा नै मालम पड़ जासी तो भी बीनै माफ कर देसी। इण कारण मां सा र घर मे नोकर तथा काम करनिया मैवा बळाीजै कोनी। सागी मिनख-लुगाया टिक'र काम करै।

तड़कै सू लेय'र रात तक इण तरै मा-सा काम मे डूम्योड़ा रैवै। सगती सू परवार किस्त रै कारण थकावट

माय जाव भर भापने बैठे-बैठे भोली झपकी माय जाव पण मूंडो सामर सूं बकयाडो रव बगा तारखा करनै बैठ जिकी नै भर मालम नईं पड़ ।

ऐ थकावट मेटण सारू भाप मिन्ट-दो मिन्ट भाडा हुवै भर उण वगत मिलण सारू कोई मायारण मिनख भुगाई माय जावै तो पसवाड बैठे जिका भायोडे नै पाछो कावण खातर कैय दवै— भबार भाराम करै भाज साम्योडी है फेर भाया । पण मां सा रै काना मे भै भरद पडला पाण भट बैठा हुवै— भै तो बसाम'र भाया भर हू मिसू नईं भा किया हुवै ?

ब्रामणा भर साधू-सन्ता रो भाप पूरो भाव राखै । पग्धा माथै उणा रा चरण धोय नै सरधा सू भोजन कराबै एकै पग रै ताण ऊभ र । तिलक काडै ग्लिवा देबै हूलस र बारो कुसळ-मगळ पूछै ।

मां-सा सू दुसमणी राखण भाळो तो कोई धरती माथै मीठ सावै पण तारीफ भा है कै बीमे भी मा-सा भापरो दुसमी नईं समझै । धरती माथै मां-सा रै कोई सू बैर भाव है ई कोनी । मा-सा री बोली म इमरत है । बडो हुवो या छोटो सगळा सू नरमी भर मिठास सू बात करसी । रीस तो भापरी ऊमर मे सायद ई करेई मां-सा

मिय का म्यार म.ो है। माईता रै दूषा भरी सळायां हवा। घणी ई छोडय्या है मापवा। म्हारी उमर म तो पे ऊमो हुय र माऊ तो ई लूटै कोनी। मर ना कोई मारै मावै जिकी रै कोई कमी रैवे। म्रासी जिकी राजस करसी। एक माग रोकडी दक में जमा है मसई कोई पास बूक दम मर्क है।

मैं पूछयो— बो घर बेच्या पछै दूजो किसी जागा विगायो है ?

मशार हू विणाऊ कोनी। पर विणासू ब्याव हुया पछै। जे विणायमू घर मावै जिकी रै दाय मई मावै तो फेर मुवै घर म तोडफोड करावो। इसो धमको गुड भीरया र मगावगा नै म्हार कनै कोमी। जरूरत मावै तो एक री जागा पाच सगावण मे मी जीव दूर्ख कोनी पण फालतू एक कौडी मनै बरदास कोनी।

पे ब्याव रो विचार है तो थोडो डौळियो मावळ बणावो। मार्थे री बट उतरावो दाढी रो मास बढावो मिनखाचारै रा गामा परो पगरखी पल्टो। पगा मे ब्याऊ फाट्योडी देख'र ई सामलै रो मन फाट जावै। मै कैयो।

'पइसा कठै सू माऊं ? कवारोजी बोल्या।

'एक साल रो पछै कांई मपार मामसो ?'

मैं आयी हुवैली ।

आपरो नित-नेम पाठ-पूजा तो अवेई करै ई है पण वे भजन सुमरन रा अभ्यास बण जावै तो आप घर रा समळा काम छोड़ देव इत्तो आपनै भजनां सूं प्रेम है ।

इत्तै काम-धर्म रै बावजूद धार्मिक-ग्रन्थ देखण सारू भी वगत काढ लेवै । भगवान री दया सूं घणो जबरो है– एक बार बाण्योड़ी बात पत्थर आपसी लीक हुयगी । इण कारण जद कदेई सतसंग री चरचा चालै तो आप गूढ सूं गूढ बाता सरळता सूं कैय जाव ।

आ ग्रन्था रै पढण सूं आपरो आतम-ग्यान भी विस्तार पायग्यो । गिरस्ती में रय'र भी आप मोह बन्धण में बंध्योड़ा हुवै जिकी बात कोनी । करम करणो चाहीजै फकत इणी वास्तै आप करम करै । करम थारै अधीण है थै करमा रै अधीन कोनी ।

जँवारोजी

'राम राम सा ।

काई राम राम सा कोई टाबर बूकाबोनी उस्तादां । जंवारोजी बोल्या ।

टाबर ? मैं अचूंबै सूं पूछ्यो— आपरी काई नातर या आये खातर ? जंवारोजी बोल्या— थानै ठा कोनी म्हारी लुगाई चलगी नी । मैं माफी मांगी अर बतळावण करी । जंवारोजी बोल्या— मरी नै अढाई-तीन महना हुयग्या । थांरै तो घणा लोकां सूं मेळ है थारी जबान रिस जावै तो गरीबां रो भलो हुजावै । मैं पूछ्यो— आपरी ऊमर कित्ती है ? वै बोल्या— 'साचळ तो याद कोनी पण पैंताळीस तो हुवैली । थे घर रा हो । थांरै आपनै कूड़ कैयां काई फायदो । आप आळै मैं तो हुवै जिसी बात कैय देवणी चाहीजै । दूजां मैं तो हूं म्हारी ऊमर बत्तीस-तेतीस सूं बेसी बताऊं कोनी । लोक तो कैवै— थे बत्तीस-तेतीस रा दीसो ई कोनी तीसां रै मांय हुवै ज्यूं लागो । पण इत्ती पोल चिकावणी भी ठीक कोनी ।

इत्ती बात करी अर जंवारोजी थांसी मैं अळूझग्या ।

सिये बो स्यार भ-ो है। माईता रै पूपा भरी सळाया हुवो। भणो ई छोडम्या है सापडा। म्हारी ऊमर मे तो बे ऊभो हुय'र भाळ सो ई छूटै कोनी। घर मा कोई मार मावै जिकी रै कोई कमी रवै। माली जिकी राजस करमी। गण साख रोकडी बक में जमा है भसेई कोई पास बुक दश सकै है।

मैं पूछयो— बो घर बेच्या पछै पूगो किसी जागा चिणायो है ?

मगार हू चिणाऊ कोमी। घर चिणासू ब्याव हुया पछै। बे चिणायसू घर मावै जिकी रै दाय नई आवै तो फेर मुम घर मे तोडफोड करावो। इसा घमडो गुड मीस्या र मगावण नै म्हार कर्नै कोनी। जरूरत मावै तो एक री जागा पाच मगावण म मी चौत्र भूलै कोमी पण फालतू एक कौडी मनै बरदास कोमी।

बे ब्याव रो विचार है तो थोडो डौळ्यो मावळ बणावो। मार्थ री जट उतरावो दाडी रो बाल वधावो मिनखाचारै रा गामा पैरो पगरखी पळटो। पगा मे ब्याऊ फाट्योडी देख'र ई सामर्ल रो मन फाट जावै। मैं कैयो।

पइसा कठ सू लाऊ ? अंवारोजी बोल्या।

'एक माथ रो पर्ब सांई पचार मासलो ?

'साल माय सू एक पाई ई छेहूं कामी। वा रकम तो म्हासी जिन्दी मैं पूरी री पूरी भूगणी है।"

मिनराखातर तो ये एक साल रै ब्याज सूं ई रैम सको हो। बक रै ब्याज सू ई दो मढार्इ हजार री माम पडती हुवैली।

बंबारोजी बोल्या– स ब्याज री बात छोडो। बसो म्हासी तो सोरा म्हे रैसा थारै तई पाली प्रावै कोनी ज बोको म्हासी तो थोरा म्हे रसा थारे फोडा घाला कानी। वे तो ममझी बात माथै मावो टाबर बतावो टाबर।

हू बोल्यो– मिनरा खातर तो टाबरा रा भाग कोनी पर जिनावरा मैं मापणे नावर बणे इसो हियै रा फूट्यो माण्या रा मायो कोई विरळा ई मारिल हुसी। म्हारो वाक्य पूरो हुया सू पैमी ई बबारोजी मनै बोल्या। म्हारै कठोर बोला मा थे मनै मोमळो पसताबो हुमा पण ग्रगम सू नीसरयोडो तीर सायद पाछो याय जावै मूंडै सू निकळयोडा बायक पाछै बावडै कोनी।

बारमै महनै हू वृन सेवग मै गयो तो देख्यो– बबारोजी रै घर मागे तम्पड विछायोड़ो ऊपर पाम माण्योडो घर एक पिडतजी कथा बाचता हा– सायद मसस-पुराण। बैठक माथै हाल तई पिडतजी रै सिवाय

और कोई न° हो। म पिडतजी सूं कंवारैजी रै ब्याव बाबत म्हारे सू हुयोडी बात री चरचा करी। पिडतजी बोल्या– अरे भाई कंवारो बडो मजाकी जीव हो। कीरी गा लुगाई मरगी अर कुण दूसर ब्याव कर ? कंवारो तो मरती बेळा तई मलग कंवारो हो। कंवानी म मामा मी मामा हा पग बो तो भा ई कवतो–

कंवारो रैसी कंवारा।

—•—

आपरा टाबरा नै सम र पीरै रैवण लागगी । आबै घर मे गोडा सूणो बळद्वर अम्याडा है धूड फूम कबूतरा चिड़कां री टीक्या मरयोड़ कबूतरा अर चिड़िया री पाख्या अर और घणी सूगली चीज्यां । इण कारण साधू बारणो खोल र कठ पाछो जद देवै अर गळी नै ई आप रो घर मान राख्यो है ।

पण गळी म रैवण रो आ मतळब कोनी कै बो भूख काढता हुवै अथवा माग'र खावतो हुवै । किकी भी दुकान माथ जाय र ऊभगी बठै ईन मू-माग्यो सौदा उधार मिल जासी । पइसा खातर कोई भी दुकानदार उतावळ नइ करै कारण साधू रा बाप सठ हरखचनजी मरता लाखू रुपिया रोकडी छोडग्या । बै साधू र भुसर रै कबजै म है । साधू भुसर सू रीसागो है पण कोई मुमरो मास म एक बार साधू नै ब्याज री रकम माय मूं आधी आपरी बेटी खातर राख र बाकी रकम भेज है । साधू र हात म रकम आवतै पाण सगळा दुकानदारा नै मालम पड जाव अर साधू सगळां रो पइसै-पइसै रो हैसाब चर दवै । तारीफ आ कै साधू नै साल भर रा सगळा रा हैसाब बराबर मूड याद रैवै ।

उधार चुकाया पछ ई आप मवा साभा अर नवी

पगरखी परै। पगरखी पैरघा मू पगी आगली कूली फाटण रै कारण साधू रा पग उभराणो रैयोड़ो हुवै अर पर्छ पगरखी पैर'र आधू आपरा मदेई रा चक्कर काढै। मक मे पगरखी काढी मार्ग फेर फमा उपड अर फूटै पर्छ पग फमफमीज जावै जद साधू पगरखी री एडी मरोड़'र मरदानी मू जिनानी बणाय नाख अर खोडावतो-खोडावतो चाल। इसी पगरखा किना'क दिन हासै ? इण कारण साधू माम म कगा-मा'क मदता उमराणो ई फिरै।

भागमा टावर हुता माय मू भूम्या पछै साम्यो साम्यो' कर'र नीठ साधू बडो हुयो अर सेठजी री माम पूरीजी कै म्हारा काम ममाळ लेमी। काम सभाळण री माईत तो मन मे ई समभ्या। हा माईता मरघा पछै बोडा परघा तई, जद माधू बीनणी समेत घर मे रवतो हो मास्टर भरै बुलाय'र पढण री भी चेस्टा करी। पण विद्या रो जोग साधू रै करमा मे पूरो नई हो इणी कारण जद मास्टर पढावण नै आवतो तो साधू र अवकण पड जावती। जद दागखाने म मूत्यो हुवतो तो बीनणी घर्न सू कैवाय देवतो– 'मास्टर साब ! अवार तो आप सूत्या है काम आया। कदेई जद मास्टर भरै आवतो तो माघ घर म मा रै आर्ग जिसो हुवतो। जद बारणै रो अवको

मुगीमनो मो घर में केई मीतडी मपवा थमभिये मार सुकयोडो मूडो नाड र कैवतो– मास्टरजी म्राज तो छुट्टी राखो। छुट्टी गण्या भी जद मास्टरजी रा पइसा पक्का तो फर पछ मास्टरजी नै काई चाहीजे। भैर। ह्राम मो माष्ठू एक इसो मास्टर आवै है जिको वीन हिसाब-किताब मे इसो हुसियार करदे क मापर मापरी रकम री पाई-पाई बो मुमरे री नास्मा माय कर सकबाय म।

लाल बाबो

पवनसुत हनुमान री पै' इया च बोल'र मास बाबो पवन-वेग सूं एक ठौड़ सूं दूजी ठौड़ मांयै जाय ऊभतो । गामा सगळा माम– बीस री कुवतो मास जिणो मास बिरखस मै मास्योड़ो हुवतो । माथ ऊपर मोर मुकर बारले पाखी हनुमानजी वई पूंछ री वणाव । ममबाड़ एसवाई बो बड़ी बड़ी भारी भारी टाकरभा जिणी बाब री बाल सार्यै टणणण-टणणण बाजती ।

मई टाबर बका तो बाबै नै साधिई हनुमानजी जाणता ई हा पण बुढा-ठाडा भी बाबैजी न हनुमानजी रै समान जाण'र हात जोड़'र सनमान करता । बाबै रै हात मै मोबो कमण्डळ मार्ट भातर हुवतो जिण मे खोटा-मोटा ई आपेई बिना मांगे मांय'र माटो भालता । कमण्डळ भरीजता ताळ नई लागती मर भाटो मोळी मे ऊथाय'र बाबो फेर फलाक मार'र उड जावतो । इण तरै बाबो एक दिन मै कितो भाटो भेळो करतो भा तो ठा नईं पण फेर भी एक दिन री भन्दाजो मन सूं बाट तो कोनी ।

मबार सूं बोका बरस्रा पैसी फेर बाबै नै देख्यो ।

बाबै रै सरीर में मारसी लगती कोनी लोगां रै मनां में मारमी भगतो कोनी। अब सभाव तो लागो है पण पूगणियै दई नगण-म्हण धास सू बाबो नीठ मारग मापै। बिना माग्या पासणिया अबै रया कोनी अथवा जे पेसी पाळा कायम है तो ई सम साथ स्याणा हुयग्या। अब बाबो बापडो मागै है तो ई पेट मिथाडी नीठ हुव।

जद बाबो जबानो म हतो माटो मेळा करतो हो बा दिना भी बाबैरी लुगाई बाव में मखडी सू कूटया करतो ही पोटा पुमावती पेपड्या पपवावती अर पाणी मगवावती। अबै बाबै रा हलण थकग्या। बा करमम्या जे राम जीवै है तो राम जाणै माई बाबै री काई दसा करती हुवसी।

भोपीजी

पांगळां नै पग देवै मूगां नै हाथ आंधां नै आंख्यां, बेकारां नै नोकरी देवै कंवारां रो ब्याव करावै बांझड़ियां नै बेटा देवै रोग्यां नै निरोगा करै, कचेड़ी रा मुकदमा जीतावै गम्योड़ी चीज्यां लभावै इम्तिहान में पास करावै मन रो सगळो सोच मेटै अर सकळ मनो-कामना सिद्ध करै— हरसू दादी !

दादी एक छोटै गांवड़िये में रैवै अर बठै भी जग रा भगत पूगै । पण पूजा गुप री हुवै नई तो आं-म्हां नै तो कुजोगी ई पूगै कोनी । गांवड़िये रै बगळ में भी दादी मंगळ कर राख्यो है । दिन ऊगां जिकी बगत सूं दिन आथवै इतै तई आवण जावण वाळा रो तातो लाग्योड़ो रैवै । वे हजारू नई, तो सैकड़ू रोजीनै पकायत आवै अर लाभ उठावै । आप सोचता हुसो कै आवै जिका एकला लाभ उठावै । नई, वै जिसा दादी कनै जासी हाथा चोखा ई आवै । तो काई आवै ? औ कोई आगमो कोनी इसा लाख— पत्र पुष्प फल तोयम् । पण कोई आवेई पत्ता अर पाणी सूं काम चोखोई चालै । दादी कनै काम री बात

मथ'र मासी जिका दादी नै राजी तो करसी-क ? मई दादी नै तो राजी करण री जरूरत ई कोनी। बा तो मायोड़ी चीज छीप ई कोनी— मसवाड़ला-पसवाड़ला हाजरिया मायोड़ी चीज मसत सामै।

मापरै मायद मा मानणी मे नई मायी हुवै कै दादी मक्कळ मनोकामना सिद्ध करै। मा मगनी ता कई देवी देवता म ई होगै मकै है। ता कांई दादी कोई देवी है ? नइ मापा र दई हाड मास रो जीस है मोस्था मापासू म्यासा वेसी मायोड़ी है। मर्म ठा नै माप किता बरसा रा हो पण दादी रै ऊपर कर मस्मी ऊनाळा मू पाट को निचळ्यानी। ता भी मा बात जरूरी कोनी कै मस्मी वरम माया पू इण तरै गी मनोली सगळी माय जावती हुवै कारण मसाई लोग इसा देख्या है जिका इणी मोस्था मेय र भी माडै मिनखा जिमा रैया। हा एक बात मौर दादी में मा सिद्धी कोई माज ई मायी हुवै मा बात भी कोनी। इण तरै मोमा री मसाई करतै पूरा तीस बरस हुयग्या।

दादी विधवा तो ठा नै किता बरसा पैली हुयी ही पण म्हैं तो समम पकड़ र दादी र कमरिया-कमूमस पर हाथी दांत रो चूड़ो पैरयोड़ा ई देख्या पर मोड़ा दिन

पैली तई दादी नै मुआगम ई आवतो । पण दादी नै बाबा धिरियाणी रो हुकम हो जिण सू वै दाडी केस नईं राखता । बाबाजी रो ई दादी रै इस्ट हो अर इण रै परताप सू ई वा सगळा रा कारज सारती ।

दिनूगै-सिंझ्या दोनूं टैम दादी बाबाजी रै धूप खेवती । मिन्दर रै आगलै चौक में नर-नारयां रा थट मच जावता— सगळा धामामुखी । पन्द्रै-बीस मिन्ट तई खूब धूमधाम सूं आरती हुवती आरती पूरी हुवतै ई— बाबा धिरियाणी री जै— बोलीजती अर दस बाया री ढैंया दादी म बड़ जावती । मस्ती धरमा री छोकरी जिण सू मनकी रै सायरै बिना एक पांवडो ई नईं धरीजतो अबै घोर्ट टाबर तई उछळन लाग जावती ।

दादी अबै परचो देवणो सरू करती । मसूनै बानर—

एक लुगाई— खमा धणी अम्मा !

दादी— थारे बेटे मै ताव आवै है नी ए ?

आगली लुगाई— खमा आवै कस्ट काटो अम्मा रै ।

दादी— ताव आवतै तीन महना हुयग्या ?

लुगाई रो पळो गळगळो हुयग्यो । मन में सोच्यो— अठै तई ठा पड़गी जद अबै आछो करणो काईं बडी बात है । बोली— "हुकम धिरियाण्या अबै तो आछो करो ।

समा !

तै मायां री फेरी दवणी क्यूं छोडणी ए ?"

'समा हूं काम सू सल कर देसूं ।

सवा मइनै लई फेरी दे रोजीनै सवा सेर गऊं अर पाव भर घी चढाया कर, थारो संकट मेटसा ए ।"

बूढो-सो क एक आदमी हाथ जोड र– समा भिरियाम्मा ।

'अरे थारा कोई जिनस गमगी रे ?"

'समा भिरियाम्मा ।"

'सांकळ गमगी सोनै री ?"

समा" कय'र आदमी रा क काळा हुयग्या । डोकरै अहोत करी अर धमी मार्थ नाक टेक दियो ।

यादी– "अरे तनै विधवा लुगाई मार्थ वैम है ? थारै डावै पासी घर है ? गऊं भरणो रंभ है ?

डोकरै रै मन री बात मिलगी ।

न्यादी– अरे जा थारी सांकळ लाध जासी तू मायां रो भू तरो पक्को विणाय दिये रे !

आदमी– 'हुकम धम्मा रो ।

सांकळ लापगी अर दूजै दिन चूनरो चिणीजणो सरू हुयग्यो ।

इण तरैं आठ-दस जणा में न्यारी रोज परचो रैवतो जिण माय सूं सुख-सात री पक्कायत खबर हुवती। जिका रा कारज सरता व तो दादी रै नेम सूं मानता ई, पण औरं भी किताई जणा मैं बेर'र मानता इण तरैं दादी र मठै सायीडो मेळो मचियोडो रैवतो।

थे जे पूछो तो हूं दादी रो पक्को ठिकाणो भी बताय दूं कोई बात पूछणी हुव तो पण अबै उणा रो ठिकाणो मालम करणो है फालतू कारण बूढा माजी तो सात-आठ महना पैली बामाजी री गोद म जोत मिलाय दी। अब उणा री विधवा बेटी मिन्दर म धूप खेवै है पण वींसूं कामडो पार पडणो मुसकल है।

आज भी हरखू दादी रै मरणा री ठा नईं होण रै कारण आवै-आवै सूं जातरी आवै पण जद ठा पडै कै मोपीजी जोत मे समायग्या तद निरास हुय'र पाछा फरे जावै।

काळू

काळू कारखानै में काम करै। है तो भलो आदमी पण लोक बीनै थी च्यार-सौ-बीस कैय र बतळाव।

मिनखा सरीर है काम काज हुवता ई रैवै पण अफसर छुट्टी नईं देव। इण हालत में आप अचाणक ओर सू हाको करनै — ओय रे मरग्यो रे' कैय र, हाथ अथवा पग आम मठ जासी। पछवाड़ काम करणिया भाग'र आपता बाहर आमी अर हवा पाणी करसी। आप ओय मावड़ी ए, मरै बाप रे हाय राम रे' करतो-करतो अफसर रै हाथ रो पुरजो लेय'र अस्पताळ पूगै। सगळी अस्पताळ नै माथै सूणी कर लेवै। बीजै मरीजा नै छोड'र पैली डाक्टर-कम्पोडर काळू नै सभाळै। काळू पीड बतावै जिकी जागा पाटा-पोळी कर देवै अर काळू नै आठ-दस दिनां री बेमारी रो सार्टीफिकेट मिल जाव।

डाक्टर जे कैय देवै— चोट तो दीसै कोनी छुट्टी री काई जरूरत है तो काळू बारा मता लेय लेवै— चोट री तो सामै जिकै नै ठा पड़ै। अ्याळ फ्कर्ट जिकै नै ठा पड़ै कै पीड किसीक हुवै। थानै पीड नईं दीसै तो मनै बडी

मस्पताळ जावण दो पी एम भ्रो तो बीवै है। इण तरै हाका करर्या सूं मस्पताळ रो डिसीप्लिन बिगड़ै इण कारण डाक्टर लोग काळू रै मस्पताळ पूगते ई बेगै बिना बिना रो सार्टीफिकट भार्यां मीच'र देम देवै।

कारखानै सूं छुट्टी मावै बरे भ्राम'र पाटा-मोळी खोलै घर काळू घर रा सगळा काम करै, कसरत करै कुस्त्या लड़ै भर मौज करै। विपटी मावै चोट लाग्या सूं पइसा तो बरे बैठ्या मिस ई जावै।

एक दिन म्हारै एक साथी रै घरे काळू भ्राम'र बोल्यो— पाच रुपिया चाहीजै। म्हारी मां अलम भ्राछ्या रो एकत करसी। डोकरी भवै किता'क दिना री? बे परबन्ध नईं हुयो तो मम में काइ बाबसी? साथी बोल्यो— हाल तो भ्राछ्या भाडा दस दिन पड़्या है।

दस तो पड़्या है पण कोई ऊमा मकरा बेम चोखा ई बसै है।

'ठीक है तू फेर भाए। मैं'र बीनै काढ दियो।

काळू साथी रै घर री फेरी सरू करदी साथी पाच रुपिया देय'र लारो छोड़ायो।

एक दिन पाड़ोस में एक माजी कनै कूकतो बगो— माजी काकोजी (बाप) मरग्या भाज चौथो दिन है भार

मगळो म्हार मार्थ है। मारै दिन हुयां पछ तो हूं कारखानै मूं बताय र रुपिया दय देसूं। पगा रुपिया सो चाहीज ई बानै। ब्यार सो रुपिया म काम निकळ जासी। मपजी बैवे– मर्मई हजार रुपिया मजा पण ब्याज दो पइसा रुपियो लागसी। इसो मीसो ब्याज मापा सू दईज कोनी। बाई घाग बोवार ता है ई कोनी। रुपिये मईरड़ ब्याज में फरक नई पड़ गर्म। ब्यार सौ रा ब्यार रुपिया ब्याज हूं धागूप दयण म त्यार हू पूर मापन मइनै रो ब्याज।

माजी री तिजूरी रै तीन ताळा हा। उगा बनै मू बिना मदामगत कोई रुपिया नह निकळवा सरतो। पण बाळू दिनर्-दिन म धाम्या धासो बर र इगी गरीबी देगाळी क हाळी ब्यार रुपिया माय मन र ब्यार सौ बाढ र दय दिया।

बाळू र बाप रै तेरव दिन माजी बीरै घर पूग्या। बाळू मै तो बै गावळ जाणता कारण मिन्दरा म जावतो म भजा गावता देख्या ा हा घर मधो हुयोड़ा हो पण उण रै बार नै बर्ई देगण रो मौको नह पड़यो। जद बाळू री बारणो भाम्यो ता माय सू एक जणे धाय र बारो गोथो। माजी बोल्या– बाळू बर्ठ ?

बारै गयोड़ो है।

थे काई मागो हो थीरै ?

'हू काई को मागूनो ।

म्हारै कनै काळू च्यार सौ रुपिया उधार लेयग्यो कै म्हारो बाप मरग्या पर बाप रै बारै दिनां पछै चुगता कर देसू । आज बाप रो तेरवो दिन हुयग्यो ।

'बाप रो तेरवो दिन हुयग्यो ? बाप तो हू सामो ऊभो हू जीवतो-जागतो ।

'थे काळू रा बाप हो था तो कैया नी 'हू कांई को मागू नी ।

'हा म्हारै बीसू बोलचाल कोनी । माथो माथ रै हाथ दिया आपरै घरे गया ।

चकमो देवण म काळू आपरै अफसरा सू भी चूकै गई । एक दिन साब रै बगलै जाय'र रोयो— म्हारै तो बापूजी रो सरीर बरतीजग्यो काठ-कपड़ा रो ई सराजाम कोनी ।

साब नै काळू री गत मालम ही— बोल्यो आज रो म्हारै साग मोटर मे बैठ्या हू जास'र लकड़ा संभळायदू । काळू कैयो— मनै तो आप पचास रुपिया रोकड़ी देवण री किरपा करखो साथै हाल्या सू तो हू जात बिरादरी मै भूंडो लागसू ।

साम पूछ्यो– मनै भा बताव क थारो बाप कितरै फेर मरघो है ? क्यू बापड़ै डोकर रै नाम डाग'र मारै साम्यो है ? जीवण ई कनी दो दिन ?

काळू देख्यो– साब समझ्या। बोल्यो– म्हारा तकलीफ माफ करघा और कठेई कोसीस करसूं।

एक दिन काळू म्हारै घरे आयग्यो– "म्हारै रा महार बीस रपिया चाहीजै। थारी कोई म्हारै मांगतो हुबै ज्यूं। हू पैली काळू रा कारनामा सुण चूक्यो हो इण कारण म्हार समाव सू परवार मैं कैयो– काळू ! भलेई रीस कर चावै रोसो कर हू तो साची-साची बात कैसू– देख जु तू सत्कार हुवतो तो सब थारो घर छोड'र बीस रपिया खातर म्हारै घर तई एक कोस री मजल करण री जरूरत नई पड़नी चाहीजती ही घर वै तू कब– हू चोर हु– ता चोर नै देवण न म्हारै कनै रुपिया कोनी।

काळू कारखानै री चिपटी काढ' बड-बैठक निकाळै कुस्ती लड़ै ढाव पेच लगाव पण बैरी लेणायता रै डर सूं ची रा एक खाटो भी पेट मे म्हाव नई सकै। रात री दस-इग्यारै बजी बद कै भावण माळा रो लटरो नई हुवै काळू भावतो गामै मैं लुकाय र चीकणास जावै घर

मारणा दूध मळाई अथवा घी मूं हाड चीरणा करै।

काळू सागै एक भर मे जीनै गूंजै म बैठै क्षीज मे भर ठिकाणो बताव चोर्य रो।

कदेई-कदेई मारग चलतै री सोक साइकल भाग म अथवा गड़ी म हात मार्य। बानै मामापट्टी के दैवाय र काळू नै रामजी री कर बाव।

कारखानै सूं मामा पर्छै काळू अंगरेजी फैसन रा मामा– हैट बूट पट गाई इगाव अर पाळत्यां-बाळत्यां में बिना मूतै ई टूक खावै। बठै जाय र चोर बई माम पीय'र माय जावै जिकी बात नई मामा अफसरा रई मोकरा मावै हुकम भी लगासी। आपरी ऊमर मे काळू एक-दो बार ई टोळीम्या हुबसो अर तो सदेई बेदाग निकळै कारण भाषा कपड़ा पैरया पछ बडो अफसर हुवै ज्यूं दीसण लाग जावै– स्यान सिफत सावरियै सावळ री ई अर मूछ्यां भी सफा-चट मैदान।

मघजी

आछो मजेअदार डील गोरो रंग, लांबो कद तीखो नाक लाम्बा हाथ— अड़सठ बरसा री ओस्था मे मघजी रै हात म सोट्टी रो गेडो पकड़ायत हो पण बै उण रो सायेरो नई लेंवता । आप मोकळा बरस मंबाई मे सोनै चांदी री दिसामी करी । जद दो-अढाई बरसा री मुसाफरी कर र घरे आवता तो मिलण नै आवण वाळा रो तांतो बध जावतो । आप साथै रसाम रा छक्का रा-छक्का लावता जिकी मिलण नै आवण वाळा मे बांट देवता । जिका कुळ मे नैड़ा लागता वांनै टोप्या पगरख्यां गाभा देवता । मंबाई सू दूरसी बेळा जिता पइसा हाथ में हुवता बा माय सूं घणा-सा क तो आ जिनस्या मे खरचीज जावता घरे बैठ'र खावण खातर भली पूजी आपरे कनै नइ हुवती । इण कारण अठै आया पछै थोडा दिन तो आपरा खरचा सांभळ जावता पछै हात में कसालो आय जावतो ।

पण कसालै म तो आप कदेई रंयोड़ा कोनी । माईजी रै राज में गाया-भैस्यां घणी ई हुवती ही जिण सू दूध री कड़ाई घर मे घड़ी री-घड़ी रवती । अबाणी में भी एक रुपियै री तीन सेर रबड़ी रो गुरियो नित हमेस आवण

रो नेम फेर घर मे सगळा म बाट'र खावणी। जवानी में भाप बूटी भी मोकळी पीवता जिए मायें मीठो खामा बिना नसा नईं ऊमता।

बिमासी मे भाप एक दिन मे हजार-हजार रुपिया सिसी ई बार कमाया हुसी। भापरी ऊमर मे मबवी लाखूं रुपिया कमाया पण मेळा करण री बिद्या नईं सीखी इण कारण इणा रा छोटा भाई भी न्यारा हुग्या।

बद माछी कमाई हुवती तो भाप भट बजार मे जाय'र कुत्ता नै तीस-चाळीस रुपिया री जळेब्या घर माय मोधा मै बास नखावता मिंदरा मे रुपिया चढावता मरीबा मै गाभा दिरावता।

भाप मायें सास माटरी भरता भर, वे निकळे तो सगळा री पाती रो हैसाब मायूत सिख'र राख लेवता भर सगळा नै बताय बवता पण मापरी ऊमर में एक बार, भी माटरी नीसरी नईं।

घडसट री ऊमर मे भी भाप रा दात बतीसू कायम हा। नीम भथवा बावळियें रै दातण रो भापरै नेम हो जिए नै भाप ऊमर-भर निभायो इणी कारण दांत पक्को हो माबा रैयो हिलकणो ई किसो क हुवै।

मास्या मे भाप घी रो ताजो काजळ पाड़'र माग्योडी

राजा जिए सू ओत बराबर वणी रैंमी। रात नै भाप मासमट रो चानणो नहीं रासता– तिल्ली र तेल रो दियो। य अगत लालटेण कमरे रो वारणो मकपोडो देख सेंवता मो भरणा माराज हुवता। अगत लालटेण र मैडो बळणो ई ध भणो हाणीकर बतावता।

ऊनाळो हुवो भयवा सियाळो भाप भोर में वेगा उठ'र घूमण ने जावता। दरवाजै बारै बगची में न्हावा-धोवा कर र घरे भावता। भाप तेली– थाली सू सरीर री सळ सावळ थापू रासता।

पत्ते रो साग– पालक पातामथी भर चन्दळियो– भापम भणो रुचतो। भाप दाळ भी रोजीनै भीमता भर परसवा छोरा माथै भकरा मेक'र भीमता। पपीत रो पणो चस्ता भर कोरो भी सावता। ऊनाळै मै भामरस दोनू टैम चासतो।

वाणीर्क मे भाप बडा भर गोळ-गोळ भाखर लिखता। पाछा भर सेरा भापनै भोमी तरै याद हा। सतरंज भर चौपड रा भाप जूना भर नामी रमार हा। भापरा चैमा मोकळा सार्प।

चौमास मैं भाप भरसंप सागर रै तळाब माथे डेरा दियोडा राखता– तळाब में सावण पम'र कोई पाणी तो

घूमसो नईं करे है । जे कोई सावण री हीमत करतो, वींनै मवजी दावण देय'र धप कर देवता । दावण सूं नईं समझियो पाळवो सु वमतो ।

आपमें तिरचो धगो माथो मांवतो । घटा-री-घटा आप माराम सूं पाणी मायें पड्या रैवता । चौमासा में आप किना ई डूबता लोका में माल माल चोटा वारें काड्या भर वारा प्राण बंचाया करता ।

मवजी ऊमर में माप रा मोवळो नसो करयो । एक बार मम्बाई जावती वेळा आपर करनै जमात आळा पाव भर बूटी पण्डसी भर वे कानूनी कारवाई करणी चावता हा । मवजी वातं मममाया कै थो तो वारें रस्तें रस्तें रो माथो है इण सूं वेसी कोनी । पण जगात भर नहीं रैं मैंकमें आळा कद मानण माम्या ? मवजी बोल्या— जे वातं मरोसो नईं हुवे तो हू थारें सामनें ई म्हारी खुराक लेम लूं । इयां कैय'र वे वो मुट्ठा भर'र सूकी पॉन चाबग्या । तीजें मुट्ठें मे मैंकमें आळा हाथ जोड़ दिया— "अघूमा बाबा बस करो ।"

जद बुढापै मे मम्बाई सूं घरे आय र बैठग्या भर भावत रकमी पण खरचा नईं रख्या तो आपनें पछला मार्च करणा पड़ता जिका मैंपा-माठा वेच'र उतारीवता ।

ऐठां रै घरा सू मायोड़ा मघजी र घर में हजारू रुपियां रा जवर हा ।

जद सारली टम मायी तो मापनै काच में दीसै ज्यूं दीसगी । घर रै मागै एक पिंडतजी भागोत री कथा पौळायी । मघजी घर माळा नै कैय दियो कै कथा पूरी हुय जद पे साब रो बडोडो लोटा एक रुपियो मर एक मारेळ चढाय दिया । घर माळा बोल्या– थे थारै हात सू चढाय दिया । पण माप फरमायो कै 'पूरणाहुती तई म्हारो सरीर कायम नई रवसो । घर माळा हस्या पण बात कयी ज्यू नीमगी ।

सारली घड़ी मायी तो मापनै मागण म सुवाण्या । जद पूछयो काई मन मे है तो बोल्या– 'भगवान रै बिराट सरूप रा दरसण करणा चाऊ था ई मन मं है । घर माळा समझ्या नई ता माप बोल्या– गीताजी री पोथी में है । गीताजी री पोथी खोल'र बिराट सरूप मापरै मागै मड्यो मापा-गडया हात उठाया जोड़न सारू घर पो॒ म निजर गडोय-गम्भेय प्राण-पं छ उडग्या ।

मघजी माप तो चोनो पण वारी धानारी रै कारण माज भी मोकळा लोक वणा न याद करै ।

लिखमीनाथजी

डाक्टरपण म आप एक हुंसियार डाक्टर गीणता हा। इस्कूल रै दिना मी आप आछै विद्यारथी वई नई रया-कळकत्तै विस्वविद्यालै सू आप एमबी इम्तान पास करी पिरथम सिरेणी म । पछ काम काज साम्भ्या तो लूंठी धर्मवारी रा काम आप सभाळ्या अर बारै पजाब री खिमता देखाळी ।

आपरा आखर छाप नै धेरै बैठाणता । हिन्दी अंगरेजी गुजराती बगला समझ्या मे आणे मोती पोया हुवै ।

गाण-विद्या म परखै पार पूग्योड़ा हा संगीत रा बाजा पारखी हा । राग रागणी रै भेद सार बारीकी सू समझता । गळो आपरो बिगड्यो हो अबका ठेट सू ई खराब हो आ ठा नई, पण तो भी आप गावता । आपरा मे पूगता । आपरै बिना बाजण मजूरा लजावता । पेटी-बाजो आपरो प्यारो साज । टूट्यो-फाट्यो रही-सही किसो ई बाजो आपरै सामै भेज दो बाजो मायम लाग जासी हसी आपरै हाथा री करामात ! सोनै मे मजूरमा जोपा

आपरा हाथ । हीरा जड़ाव जिसी आपरी ओमळपो ।

सुर रै साथै आपनै ताळ रो भी भरपूर ग्यान । आंगळ्या उघळ भर वाजो बजावण रै साथ ताळ भी लाला भरी दरसाव ।

साहित मे भी आप री मोकळी रुची । आप साहित भर कळा री कई संस्थावां नै बसम दियो पण मै आपरै साथै ई गयी परी । आप कवी रै रूप मे मी पिरगट हुआ मोकळा भजन बणाया थोड़ा-घोत छपवाया पण सांरो परवार भणो मह हुयो ।

इळती जवानी म आपरै माथै मे केई विचार उठ्या जिण सू आप अपणै आप नै निबामीनाथजी समझण लागग्या । साभी इतो ई नई द्वापर-जुग रै मौर भी केई लोगा रा नांव आप धरप्या जिण में महाराजा मगासिंवजी नै आप अरजुन बणा गस्या हा । इण रै अलावा कंस सिसपाल सकुनी दुरियोधन रुक्मणी सतभोमा राधा भर कुब्जा भी आप थरप राली ही । द्वापर मे भवार रा लोग भ आ भावा सू रैया हुवै तो काई इचरज कामी पण लोका इणा री बात माथ पूरो ध्यान नई दियो । होएं सकै कै जे उणा री बात लोक ध्यान सू सुणता तो बानै आपरो भमोलख वमत लोगा सू भिणत करण म मह गमावणो

पड़तो भर में दुनिया सातर कोई काम री बाता बताबता ।

बा पद कयो— हूं सिवमीनाथ हूं तो दुनियां कैयो— 'गैसो हुयम्यो दीसे है । दुनिया री इण मायका रो छणा रै माथै मसर पड़ भी गयो भर बै पैली माळा सायी गई रैया ।

'राम सा पीर री जै सू भाप विगएा मागम्या— मई हूं साक्षात सिवमीनाथ बैठ्यो हूं तो फेर भौर केई री जै बोसण सू काई काम ?

एक बार भाप मरसगजी रै मिन्दर पमा । बठै बाजो हाथ मे लेय'र सुर छेड़या भर बारै सू भवाज भामी— 'राम सा बाबै री जै । भाप बाजो बंध कर दियो । जद भाप पाछा सुर छेड़या तो फेर बाबै री जै । भाप उठ'र बारै गया । पण ज बोलणिया सगळा छाकटा ! पाटा माथै इसा पड़्या बरगटा भेबै पाणी बोर मीव मे है । भाप फेर बाजो सरू कर्‌यो भर फेर जै । भबै भाप बजणो सरू करयो । मठा बैठग्यो । लोका बारै जाय'र पाटै माथै सोवण रो मिस करणिया नै समझाय'र बोला राख्या । पछै भापरो गावणो हुयो ।

भागण मे भुगाया भापनै भैणो देवती— इसा ई

हुवता हुसी सिवमीनाथजी ! ई मैंखै रे उपळै म माप
गीत बणाय'र माया जिण री एक-दो मण इण तरै है–

केश नहीं अब मेरे कारे,
नैन नहीं मेरे रतनारे,
अधर नहीं मेरे अरुणारे
सखिया कृष्ण कैसे स्वीकारें ?

पण फेर भी सम्या कन सू मनीजण री मापरी
परबळ इंछ्या ही । एक दिन माप जागण में मोर मुगट
पीतंबर, बसरी कुंडळ धारण कर'र पधारया । बंसी
बजावणी तो मावती ई ही । लोका हुंडेई-कुंडेई हात
जोड्या पगा पड्या वै बोली भर माप राजी हुयम्या ।
बठै केमरो मगायीज्यो भर मापरो फोटू उतरग्यो । फोटू
मीरा' छापै मे छप्यो भर नीचै लिरयो हो– नकली
कृष्ण ।

नकली कृष्ण री बात सू मापनै घणो दुख हुयो ।
माप छापै रै सम्पादक नै इण मासै रो एक पतर भेज्यो–
माज सू पाच सौ बरसा पैली मीरा रो जनम हुयो भर
बा म्हारै सू इत्तो प्रेम करणो चावती । बी बखत भारै
गीत गाया–

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई

जाके सिर मोर मुमट, मेरो पति सोई।

तुर्ने भाम मर्ने भापरो धणी बणायो पण मैं मीरां री भां फासतू बाता मार्थ ध्यान देवणो ठीक नईं समझ'र उण सू पती-पतनी रो नातो नईं जोड़यो। मीरां मरती मन में सेयगी। मर्ने पांचसौ बरसां पछै जद मीरां म्हारो कृष्ण रूप देख्यो तो बीरी सारसी बळत पाछी तेज हुयगी भर बी एक पत्रिका रै रूप मे म्हारी निन्दा करी है धिक्कार है मीरा न!

बागग मे एक बार भजन गायीजतो हो—

मन मोहन मोहन भाकर के

मुरली-धुन मधुर सुना बीज।

भाप घर सू पधारूया तो इण भजन रा बोल कानां में पड़्या। पाछा भरे भया मुरळी लेय'र भाया फेर बोल्या "मर्ने म्हारा मुरळी बजावण रा दिन चोखा ई है पण बे लोक हाल मर्ने मुरळी बावर तग करो। बारो भजन सुण'र पाछो ठेट भरे आम'र मुरळी सायो हूं। लो सुणो मुरळी।

भाप कैया करता— गांधीजी नै भर जवाहरलाल नै सगळा नै ठा है के किसनीनाथ रूप में म्हारो अवतार हुयम्यो पण बै हाल ध्यान गिनारो नईं कर रैया है। ना

करो नईं करै तो पण एक दिन पक्कायत वै म्हारै पगां में आय'र पड़सी ।

नरसंग भगवान रै मौके माथ एक बार आप दाढ़ी बधाय'र सिंघ जिसो विकराळ रूप बणाय र फोटू उतरायो दसरावै माथै आप करणी रूप म जिनाबी साड़ी पैर'र, एक हाथ मे तिरसूळ अर दूज मे मुण्ड री फोटी आल'र फोटू उतरायो ।

लिछमीनाथजी जिसा मिनख बिरळा हुवै पण दुख इण बात रो है कै जमानै रा लोक इस मिनखा री बाता माथै खायळ ध्यान नईं देवै अर इण तरै आपा उणा रो मनेसो चाखी तरिया सुण नईं सका ।

लिछमीनाथजी रो सरीर सान्त हुये ग्यार-पांच बरसा घू पणा को हुयानी पण जिरतगणी लोक वार्ग इण तरै बिसरग्या जाणै लिछमीनाथजी जिसो मनोखो मानवी इण धरती माथ कदेई जलम्यो ई नईं हुव । पण वै जिम्मेस मे जनमता तो बारै बाबत अणगिणत पोथ्या छप जावती अर टावर-टावर उणा नै जाणन लाग जावतो । आपा नै भी आपां रै मिनखा रो माण करणो चाहीज अर उणां री याद अमर बणावण खातर आपां रो जिरतब पाळणो चाहीजै ।

धाखा देखणा पड़ै। धोबण आपरी जाग म तो कोआ धोयोड़ा नै बीच में सुकाय र मावे पण सगळा संभाळ्या कठ सुक ?

भोळभो देवा तो कवै– हू ता धोय र निभायी जिका ई घणा समभा तीन दिना सू ताब में पड़ी ही। पै और कई रा गाभा हुवता तो सावती ई कोनी। थारा तो न्हावणा पड़। थारो डर लागै।

कोआ धोयोड़ा देख र गैम तो घणी मावै पर जचै कै अबै धोबण कोरमा पण म्हारी धोबण खाली धोबण तो है कोनी बा तो धोबण भाभी है गाभा धोय'र दब जिको भी एक म्हारै माथै पाड़ चढै है।

एक बार धोबण री सूगली धोबाई सू उपम'र मैं कपड़ा देवणा बध कर दिया। पण म्हारो एकसे रो खाड़ो धाड़ा ई है। धावण धरे धाय र बकन मामगी– 'हा अबै बडा धारभी बधम्या जन म्हारा कपड़ा दाय धोडा ई मावै। अबै नवी धोवण धारमो भई म्हार जिमी अपमसी रा धोयोड़ा धार्नै आछा थोडा ई लाम।"

बा पुराण बाधमी रैयी पण मैं धारने उपळो मह दियो।

धोबण ऊमी हुय र घूट्या माथै मूं उतार उतार गूआ ग्यासी कर र धापेई गाभा भेळा कर लिया। बीरी इसी मपणायत धार्य पछै ह काइ बालता ?

पण भोवण रा गुण म्हारै पेट मे है। टाबरा नै मा तो बिना लुगा समाळ भोवण में गाभा देय देवै बेकाम रा कागद-पत्तर इसी तो पायरा भोवण रै मरे पूग जासी। पण भोवण म्हारी म्हारै गाभा रा लुगा ध्यान देय'र आपरै हाता सू समाळै अर लुगा म रैयोड़ो कागद-पत्तर पइसो-टक्को मरै साय'र पुगाव। बीजी भोवण सू इसी आसा कुण राख सकै ?

इण र सिवाय म्हारै घर म भोवण मै दियोड़ा गाभा रो हैसाब भी नई रैवै। किता दिया किता आया किता धुपया हा किता उसतरी खातर हा आली तरै कोई याद रार्खं म चौपनियै मे टूकै। पण भोवण भाभी र परताप म्हारै याद राखण अथवा ग्लगण री जरूरत नइ पड़ै। इसी मिनख्सी-सी'क बीमे जिकी लुगाई सगळै सैर रा गाभा मूडै याद रार्खं आ किसी इचरज री बात है ? वै बरास भाभी री जागा कोई बीजी भोवण हुवती तो आज तई मे मोळा वास'र चौमगा पइसा खोवाई म लेवती अर म्हारै हैसाव म पोल देव'र गाभा गबळघट करती जिका पाबती म।

भाभी कपड़ा कोजा धोवै पइसा खातर तकरार करै अर मोकळो मापो पचावै पण केर भी आपरै टाबरा रै अर म्हारै भाग री इस बरस बैठी रैवै ता बरणो माओ इया हू मन मे कया नइ।

भागचन्द

बांदगी ही अर विष्णु जामग्यो । कालेज री पर
खतम हुवन ई सो ब्याव हुयग्यो । सासरा मालदार सार्ग
लखपती । अमोलक मिएा जिसी बेटी काढ'र देयदी
मागे हजार रुपिया रो दायजो । समान सू घर भरा
भरीजग्यो । फटाए भातर तो इत्तो हरख ई मोघ
हो अर ऊपर सु लागगी नोकरी । मामूली बाबू मास्टर
नई अफसरी । थोड़ा दिन पछी लाग्यो अपसरा
मिलगी अफसरी !

इसी हालत मे भागचन्द री फाटै तो कोई इच
कोनी कारण एकाएक इसी जिनस्या मिल्यां सू म
ठिकाणे रैवणा मुसकल है । सायद इणी कारण भाग
रो माथो भी थोड़ो खिसक्योड़ो हुवै जिसो वैम पड़ै ।

दफ्तर रा बाबू जे कोई बात मे सामो जावब अ
देवै तो आपनै बरदास नई हुवै । आप करड़ी अ
कर'र सामो जोवण लाग जावै इतै सू परभाव नई
तो कमीज री बांयां कुहिण्या मायै चढावै हाथ मेज
म्हाथै अर कैय— थनै ठा है हूं कुण हूं ? हूं अफसर हूं

पे कोई कैय देवै— नईं मा म्रो काम इयां तो नी हुय सकै मी। तो फेर देखो तमासा— 'इया नी हुय सकै मी ? म्रो मफ्सर रो हुकम है मर तू मैंवें हुय सकै कोनी ! बडै मचूबै री बात है। पैली सोच तो लिया कर कै तू बात कीसू करै है। मबार तू मफ्सर सू बात करै है। फेर कदेई म्हारै सनै माबै जद ध्यान राखे।

इणै उपरान्त मी पे कोई करतो-करतो काई पाछो कैमो मावै तो माप बात संभ कर देसी। मलदया ठीक है था थारो काम कर। तनै समभावता-समभावता म्हारो तो गळो खराब हुयग्यो मर तू इतस समझ्यो ई कोनी। मावै मे काई है थारै ? मकुस तो लेड कर ई निकळयोडो कोनी।"

पण ज काई बाबू मबाधड पाछो पुरषणियों हुवै तो कोई माबै माणचन्द टम्मा मई जमावै।

माणचन्द मापरै दफ्तर में कदेई-कदई लिरबै मी है। लिरबण म बारीक बाता तो बाबुवा री हुसियारी रै कारण माणचन्द रै पल्लै माढी ई पड़ै पण माणचन्द मोटी-मोटी कमरया तो काड मर्नं है मफसर है मी— कमरो बीन सूणता पड्यो है— मीरया रै माह्यम जम रंपा है। मरै हूणा मी मापरी पूरी माफ राखै मे तो मिनख हो।

ई रजिस्टर रो गत्तो टूटग्या । दूसरो बंधवावणो चाहीजै । वे लोक उकत सूं काम को लवोनी । हूं वे इती इसा बाता बताबतो रैसूं तो म्हारो काम कुण करसी ? बाबू तो अपफसर रो काम करण सूं रैया !

म्हारै माळ जा म दफ्तर म इसो लिखावो-पिढावो कम कियो तो हूं एक घाचै ने घरे बैठाया विना नईं रैऊंमो । हू थारो अपफसर हूं मालम है थानै ?

पण भागचन्द री माड जागण माळा थीनै पटाय भी सावळ राख्यो है । वै ऊगी-सूई पाटी पढाय'र बडा-बडा काम भी निमठ्या म कढवाय लेवै । एक बार नोकरी मैं भरती करती बेळा आप बाबू लोगा रै टाबरा नै फस कर कर र काढ दिया । सगळा भेळा हुय'र साब कनै गया— हजूर ! आपरै राज में म्हारा टाबर वे भरती नईं हुसी तो फेर बानै भरती करणिमो भरती मायँ कोई पसम्मो ई कानी ।

पण भईं मैं तो भाग्य अब दूजै अपफसर कनै भेज दियो । म्हारै तो हाल माय सू बात निकळगी । पसी वे केवता तो कोई मुमकम बात को ही नी । वे भी कूमकरण रा काका हो अब थारी माल ऊपडी है जद बात हाता उतरगी । वो अपफसर ये मिमल पाछी केय देवै तो पूछो ।

बाबू थोड़ी देर में धाय'र बोल्या— साब ! श्रापरा हुकम कुण टाळ सकै है। म तो कवे है कै साब रो हुकम चायीजै। साब मालक है। करता-धरता है।

ग्रच्छ्या ? तो जावो सिमस सिग्रायो। ग्रर पछ करघोइ मगळा टाबरा न पास कर दिया।

जिम्मदारी री जागा मार्थ काम करता थका भी एक ग्रफसर में जिकी गभीरता चाईजै उण री धाप में धाप र टोटो है। धाप जसम्या जिकी बगत बेमाता बनै गभीरता सायद खतम हुयोड़ी ही इण कारण पाती नईं ग्रायी। बडै ग्रफसरा वने जावण सू पैली भागचन्द बाबू लोका नै समझावै— देखो ज वडै ग्रफसर मनै रगडघ्या तो हू थानै रगड सो।

कद केई बाबू धाप नाराज हुवै तो रीस में धाय'र कैय देवै— 'ग्रच्छ्या तू जा। हू धाज सू थारो मूडो ई देख्या नईं चाऊ। ग्रर ज हू तनै मूल सू बुलवाय भी लू तो तू धाए मत ग्रा तनै छूट।

ग्रा भागचन्द मार्थ कानी कै बाबू नाकर है ग्रर वो भी नोकर है ग्रर बाबू लोका रा मूडा देख्या बिना साब लोका रा काम चालै थोड़ा ई है पण बिना सोचे माठो म्हारा देवै ग्रर ग्रामी बिन पाच-दस मिन्ट सेतै ई बाबू नै

पाछो तुलाय लसी । इ सू मालम पडै कै पेटं पाप तो कोनी पण आपरै अणभावता अर भुभतां बोला सू भागचन्द मोछ्ळ बाबुआं नै आप सू रीसाणा कर राख्या है । भागचन्द रै मामासाम तो सगळा हाजी हुम्मेजी कर, पण पीठ पाछै उण री बुडो मइ तोतरतो हुव इसी बात कोई दीस्यो कोनी ।

आपर औगणा सार भागचन्द समझो नई हुवै जिरी बात कोनी । पढ्यो-लिख्यो है मूरख तो है ई कोनी । कमर है तो कोरी आ कै जवानी मे टाबरपणै री बाता कर जिण मायं मायना भूडामूड गैलो बताणै छोटकिया छानै छानै ।

केई बार मसूज'र आप कैवै— अरे ! हु ई कोई भफमर हु ?

भागचन्द वैमी सभाव रो मिनख है । दफ्तर रै मोकरा माथ तो भरोसो कोनी सो कानी पण बंगलै रै मोकरा माथे भी मन-मूवा लागीड़ा हुवै इण कारण पांच-दस दिनां सू बेसी कोई मोकर भागचन्द रै बंगले में टिकै नई । पगार भी बीजा भफसरा सासू आप रुपिया— दो रुपियो इमको देवै पण फेरू भी लोक आपरै अठै मोकरी माफ भावता सकै । कारण वै जाएै कै पांच-दस दिनां सू

बेसी कोनी मिकी तो कोनी पण जे काई चारी-जारी रो इलाको देय देवे तो पुसस मे ठरडीजणो पडे घर ईजत सू चोखा हाल घर पूची सागा भी मोकरी कारण बोगा नई रैवा मिका पावली मे।

जद दफ्तर आळा छुट्टी माग लै तो आमयन्द रै जाएँ छोट री देयणी हुवै। एक बाबू रो ब्याव पण मन मे डर के साब तो छुट्टी मजूर करै कोनी। बाबू आपरै बाप नै साब कनै अरजी देय'र भेज्यो। छुट्टी मागी ही तेरै दिना री। साब बोल्यो— तेरै दिना रो काई करणो है फासतू एक बकाम भादमी बरे बैठ्यो बगत खराब करसी कायदो काई हुसी ? बाबू रो बाप बोल्यो— 'साब तेरै दिना री छुट्टी बणी कोनी। लुगाया बाम-बनावा साव घरे भावै गीत गावै। बीन तो घर मे हाजर हुवणो ईं चाईजे।

साब कैयो— 'गीत गीत पुराणी समस्या लोको। अबै आपा रो देस आजाद है। घरे बैठ'र टैम खराब करै जिका देस रा दुसमण हुवै हितू को हुवै नी। बे बिना छुट्टी सिया ब्याव रकतो हुवै तो ह पाच दिना री छुट्टी मजूर कर सकू हू।

जद बाबू रै बाप बाबा तौर बदळया तो साब मट

मेर दिनां रो हंकारो भर लियो। पण भागचन्द आप छुट्टी कम भोगतो हुवै जिकी बात कोनी। बाबू री तो खुद रै ब्याव खातर मांग्योड़ी तेरै दिनां री छुट्टी भागचन्द नै कमी लागी अर रावत रावतै नीठ दीवी मठीनै भागचन्द र भाई रो ब्याव हुयो जिक में आप तेरै दिनां री छुट्टी लय र घरे बठग्यो अर देस रो दुसमण बण्यो !

परसूं एक बाबू छुट्टी री अरजी लेय'र गयो तो साब धमकायो— 'हूं तनै चारजसीट देसूं। तै कित्ती छुट्टी ली है ई साल में ?

'हूं तो छुट्टी लवण न आया हो अर थे ज चारज सीट दसो तो वा भी लवणी पड़सी।' बाबू धीरज सूं कैयो।

साब बोल्यो— हूं तनै नोकरी सूं काढ सकूं म्हारा इत्ता पावर है।

'तो पछै किसो भूखा मर जासूं धरती रो इत्तो मामणो पड़ै है तो दो रोटी मनै भी मिल जासी।

साब कैयो— मरे हूं किसो तनै बाबू हूं ? पण था जनाब कै बीस दिनां सूं पटाय र छुट्टी पछै दिनां री बर मर्ई क मर्ई ?"

बाबू बोल्यो— 'पछै सूं ई मार सकूं।"

मनै तू आ बताव के तू बीस री छुट्टी क्यूं मांगी ? जे हूं मंजूर कर देवतो तो पाच दिन तांई घरे बैठ्यो माख्या मारतो ? घर मनै अबे क पन्द्र सूं बताय'र' क हू दस री करदू तो भी थारा काम चाल सकै है ।

बाबू बोल्यो– ज देवणी है अब तो पूरा बीस दिना री देवो आठा उगणीस री भी नईं पर नईं तो नाठी राखो म्हारै छुट्टी बिना समसरयो काम कोनी ।"

साब पन्द्रै दिना री छुट्टी मंजूर कर र भरजी मेज सूं ईन्हें न्हाख दी । बाबू चुपचाप लेयग्यो ।

भागचन्द चिनी-मींर बात मैं भी सुहीमान्यां बिना नईं छोड़ै पण आ बणी भाछी बात है कै बो इसो जिद पर बकवास आपरी लुगाई सागै नईं करै । लुगाई है गुलाब रो पुसप । ज दूजा कई बो लुगाई रो मायो लपावण लाग जावै तो बा पढ़ायन बेहोस हुजावे । लुगाई री बो ईजत करै आड रासै सारै-सारै सियां फिरै पर बीरी बात नईं टाळै ।

थोड़ा दिना री बात है—दफ्तर रो बागवान साब रै बगलै आम'र दोब काटण लागग्यो । साब नाराज हुय'र बागवान मैं काढ दियो– भरे थयो है तू ! थो गुरखर कैस ईं में दोब आण्या देखण मैं ई कठ पडी है । म्हे तो

मैनत कर'र मीठ ऊगावो पर तूं जड़-जड़ बाढण लागग्यो !

बागवान देख्यो सम्सा छूटग्या । माफी मांग'र टुरग्यो । बारै निकळतै ई मेम मिलगी । पूछ्यो— क्यूं भई काट'र माथळ करदी दोब ? बागवान म सूगीज तो गयो पण धरणखाण वण'र सिलाम कर'र साईकल माथै सू बिना उतरे ई झट भाग निकळ्यो ।

जद मेम बंगलै म बड़ी तो देख्यो धारा रा कूजा पैसी ज्य ई ऊभा है । मेम बड़बड़ायो— 'बागवान सफा गधो है इण नै काई ठेको काटी ! साब कैयो वो सूरग तो सगळो बाढण चाळो हो जे हूं घर में नई हुवतो तो वो साग रो सारा कर नागतो । जड़-जड़ बाढण लागग्यो ।

मेम बोली— दो-तीन दिनां सू कोसीस कर'र म्हूं ई तो बीनै दोब काटणा न समुझायो हो घर या पाछो बाढ दियो !

मध्यमा ? था हुयी ? तो हूं घबार रस्तै में पकड़ । पाछा माड़ ।

मत तो वा थापर परे पूग्यो हुमी रस्तै मे थोड़ो ई मापसी ।

जे भागपथ म पादी-मी'क मभोरता घर घर री पवन हुवती तो इसा मिनख ओर्या नई माधता । पण दोस-सुगन मिनख घरनी गाथै करै पड़ता है !

हरियो

बरस तो बीस-बाईस आयग्या पण अकल हाल बरसां रै बराबर आवणा जिसी ई आयी कोनी अर अबै आवै ई जिरयाऊ। इसी मालम पड़ै कै हरियै री अकल रै कोठै माथै कोई सिल्ला पड़गी जिण सूं सूई अकल तो उण में परवेस पावै नईं अर साग-भवा सास में जित्ती आयमी आ पड़ी-पड़ी सिड़ै है। किया हरियै रो ब्याव हुसी अर किया बो कमानी अर बुढ़ापो काटसी मनै रात-दिन आ ई फिकर रैवै।

पैसपोत तो घर मे मोड़ो रयग्यो फेर रात बारै मींसरघोड़ा बोलण मे टट-पट रंग तो काळो है जिसो ई ई। माईता रै सात बेटा आयग्यो एक। ब एकल्लो हुवै तो केर ई कोई पैसा अर घर देख'र छोरी नारै कर देवै। हाल तो हरियै रै ब्याव री उमर निकळी कोनी पण आगै पूरो-सूरो सासो ई है।

इत्तो बडो हुयग्यो पण हरियै नै हाल बीस तई गिणती ई आवै कोनी। दस तईं भी सायद ई आवती हुसी। जद हूर्ण सूं पाणी मावतो हुवै अर कोई पूछ लेवै–

अरे हरिया ! कितो भणो समग्यो ? गो आप केसी— तीन । ज पैसटा आयो हुसी तो केसी— पैसड़ो आयो है पण ज दूज तीजे चौथ अथवा पाचव अड़िय आयो हुने अर कोई पूछ न गो कितवा तो कवै तीजो । गाम आगे या तो बीन याद मई रव क कितो समग्यो या लाई गिणती म भणा ई ठोठ है ।

पण आपरी जाण म हरियो भी दूजां में मोटा भणाया चावे । आप कया करे— और तो कोई मोकरी हुवी कोनी अब आपरे हाथ र घर म स्कूल खोली है । बीस-पचीस छोरा आवै है । आपा रो तो काम मजै म चाल जावै ।"

एक दिन मैं पूछ्यो— थे काई पढावै छोरां नै ?

छोरा ने सब पढाऊ— हिन्दी अंगरेजी आणीको गाडा मगरा पढा ।

मैं पूछ्यो— "तनै हिन्दी री बारखड़ी तो सगळी आवती हुसी ?

हरियो सीधो पग्गो। बोल्यो— "सगो-सी क नी आवे है कोई-सी क आवै कोनी पण बारखड़ी बिना कोई काम नहै रोको ई है ।"

फेर पूछ्यो— आडा ना तनै सगळा आवता हुसी ?

उपमो दियो– 'पाड़ा सगळा मार्ग तियै एक इक्की तिर्ये-दूब-वासी पाड़ा मनै सगळा मार्गं ।

सपतै र सात दिना रा नाव भी हरियै नै मेंएमर याद कोनी भागा-पाछा हुवै तो हु सके है। एक दिन बोल्यो– भाज दादेजी म चिट्ठी लिखी है काम जोधपुर पूग जासी।

मैं पूछयो– भाज काइ वार हुयम्यो' तो बोल्यो– भाज हुयम्यो मगळवार, काम सोमवार मैं जोधपुर पूग जासी। घर प माय पूछयो हुवै तो भी 'मगळवार' कैयो जिकै दिन शुकरवार हो। पण हरियै रै सगळा वार सरीसा है। मुफर मगळ एककार।

वार पूछपा पछै मै पूछयो– 'चिट्ठी कम लिखी दादेजी नै ?

'चिट्ठी मैं आप लिखी म्हारै हाथ सू ।

"किया लिखी ?

"मैं लिख्यो– 'कागद-पतर थारो आयो। भठै खुसी हु प्रभार मालाएँ जीमय जाता हू। रात मैं भठेई सोता हूं। थे म्हारै वास्तर एक बडी भेजना।

हरियै नै मैं पूछयो– 'हिस्दी रा भाखर तो तू थोड़ा घणा भोळखतो हुसी ? बोल्यो– 'भाखर तो हू बो दिना

में मोळखणा सीख आसूं । म्हारै कार्ज मनै पोथी लेय'र मापर घरे बुलायो है। काल सू बावणो सरू करसू । पया बिना तो पसै हुसियार किया हुयीजै ?

हरियै रै एक दिन थोडी नोकरी भी मामी पण माम बेर साज दियो । नोकरी सिरतर वणिया महन री ही पाणी री पो मायै दिन भर ठंडी छया म बठा पाणी पावो मिल्या हुवते ई घरे आवो घर महनो पूरो हुयां रुपया सिरतर चिल कर लेजावो । पण मानै कयो— तू गैलो बळै है थ पाणी री कूडी म हुब मर तो काळो मूढो करावै ।

हरिय नै इण बात सू घणो दुख । वो कैव— कूडी मे हूब मरू जिको हू कोई गलो हू ? सैसा हुवे जिका तो गाया फिरै मीख्या सू मचीइ लावै फासतू ई पळ्यां म गोता खावता फिरै । नोकरी हात सू गमाय दी । वे लाग जावनी तो मौज करतो घर केर तो ब्याव हुवण म भी नाळ नई मागती । घापेई सपपण हुक्ती ।

हरियै रै माईता मै बे निरवधी कसो क काई कैमो ? छोट माई पुलिय री सगाई करदी पबै बीरा नोळा भरीमण सामग्या ! हरियै सू मो दुख किया भनै ? बडो सामो जोवै घर छोटो माडो परण इण पपमाण

नै तो कांठो ॰ बरदास नईं करै। इण कारण जद पुलिस रा छोळा भरोसग साम्मा तो हरियो बाम देख'र जोर-जोर सू रोवण लागग्यो— 'ए मावडी रा मनै क्यू जायो ए ? मावड़ी हू ऊगतो ई क्यू मरग्योनी रा ?

सगा-समधी सगळा सैतरा-बैतरा हुयग्या। पण हरियै रा बडा भाई बीनैं मास बाया म मर एवँ मरक समग्या।

छोळा मरीग्या पछै माईंगा मासो दियो— 'बा रे बोका ! सगाई पैली पुलिस री हुमी तो काईं हुयो बीनणी पैली तनै परणासा। हरियै मा बोसा री गाठ बामली। जद पुलियो फेरा लावण नै गया तो बठै फेर हरियै राफड़-बीमा करी अर सरबत-मिश्री पाय-मनाय'र बरी नै नीठ राजी करचो।

हरियो बठै लगम हुकण माळो हो पण हरियै री ऊमर कदी है। प्राज दिनूगै म्हारै करै प्राय'र मकसईयो बारयो लाग्यो। मैं मोक्यो इको प्राज कुण प्रायग्या। प्रागै देखू तो हरियो हाथ मे पाणी री बाली बढ्को। मनै दखतै ई बोल्यो— 'डाक्टर साब प्रायग्या।" हू समझ्यो कोनी मैं पूछ्या— 'हैं ? तो बोल्यो— 'प्रामी प्रायगी।"

जद मैं पूछ्यो– मामी डाक्टर है काई तो बोल्या– हूं डाक्टर साब ई कऊ हूं।

थारै खातर मामी काई लायो ?

लायो तो काई कोनी।

धोळो टोपी चप्पल काई तो लायो हुसी तू तो मामी रै धावरण रा इत्ता कोड करता हो ?

हरियो म्हारै मैंडो सिरक र कानिया-मानिया ज्यूं बोल्यो– मामी मीठो लुबायो।"

इत्तो कैयो र मायन मीठै रै नाव सू हरियै रै डावै हात मायै कीडी चडगी। पली तो हरिय फूक सू उडावण री कोसीस करी पण मीठो खायोडै हरियै रै हात सू जद कीडी चडभिप हुवण लागगी तो बी बीचरगै हात सू चळसै री वेय र कीडी नै धाम पुगाय दी।

फेर हरियो बोल्यो– मामै रो बेटो म्हारै सू मो घणो राखै। मनै कैवै– हरिया तू आयग्यो ? आव बैठ जीम माएसा। म्हारै सू मो है मो। मा है तम घम घम सैमार।

हरियै रो मारसो बोल सपस्ट तो कोनी पण इसी मासम पडी कै बो कोई बीत ऊंचा विचार परगट करणा चावतो हो पण सारै साकळ कर गई लगयो।

फेर बोल्यो– हूं माम रै बेटै नै धमो सुवाऊं। टाबर देखै हियो भर कियो टाबर देखै हियो भर कियो। हरियै इण कैवत नै बीस बार कैय-कैय र सागळ याद करण री चेस्टा करी पण बीनै याद नईं आयी–

टाबर देखै हिया बूढो देखै कियो।"

इसी-सी'क बात नै बळी बळी बार घोट-घोट'र कैवण मैं हरिय आघी घटा गमायदी। मनै जरूरी काम सूं कचेड़ी जावणो भी हो पण हरिय नै किया केऊं कै अब तूं बोलती बंध राख अर क बो सावाजी सभा मे भाषण देवै ज्यूं मूढो बणायोड़ो हो। हरियै बात नै घोटी जणी तरै जे हूं घोटणी सरू करदूं तो बे कैसो– 'सिकार रो माथो खराब हुयग्यो दीसै। अर बिना घोटै हरिय री भाव री बात रो साणी मगसो उतरै कोनी।

हरियो बोल्यो– म्हारै बाप कैयो– 'तू नानाणै ना जा। नानाणै जाऊ तो किसो थारै बाप रो धन खाऊं हूं!"

मैं पूछ्यो– अरे नानाणै जावण सूं कैण पाल्यो तनै?

तो बोल्यो– 'म्हारै बाप।

फेर बोल्यो– "कदेई-कदेई हूं बैठ्यो-बैठ्यो रोवण लाग जाऊं तो मामै रो बेटो कैवै– हरिया! तू रोवै क्यूं? बो म्हारै मूंडै रै मूढो चिपावै। मो हूं, मो तण मन पण

सैसार !

मैं पूछयो थारो मार्ई किसो बडो है ? तो बोल्यो– म्हारै सूं थोडो छोटो है। मैं फेर पूछयो– 'किता बरसा रो है? तो झट कैयो– तीन बरसा रो। हरिये सूं थोडो-सा'क छोटो अर तीन बरसा रो ! तीन छोड'र च्यार-पाच रो तो बाकी नाव ई लेवै कोनी।

हरियो सालगढ मे नोकरी खातर गयो जिकै री भी बी थाव बात सुणायी– जद हू सालगढ में बडन लाग्यो तो सिपाई कैयो– माय कठै जावै बिना पूछे ? हूं बोल्यो– 'अन्नदाता कनै जाऊं हू मिलण खातर। सिपाईडो बोल्यो– अन्नदाता सूं मिलण खातर पैली मूंडो खाएो सूं धोइमा। अन्नदाता सूं मिलण माळी सोबगणा इसी हुवै कांई ? आ सुण र मनै आयगी रीस ! मै कैयो– सिपाईडा ! थार गाम मायै मारू तो हूं बप्पड अर मास नसडी परनै म्हाखूलो। नालायक गधा हरामी !

मै पूछयो– हरिया ! तै सिपाई नै सुणाय'र इमा कैय दियो ?

हरियो बोल्यो– सुणायो नई तो कांई हुवै मै म्हारै मन म तो कैयो'क !

हरिये रो पुराण तो अखूट है पण हाल हरियो टाबर है। अबार टाबरपण में इतो मणो बडो हुयां फेर बात !

लैरी

आप मन में सो जाणो के लैरी घणनाम्यो सांड हुवै ज्यूं मच रैयो है पण थे ऊपर सूं कैय दयो– आजकल तो चकम्यो दीसै लैरी– तो लैरी आ सूम जासी के बूकिया मुगदर जिसा आला भर काठा है सायळ्या हाथी री टाम्बा सूं बाट नईं पेट रै आगै आळो एक भरबो बाय राख्यो हुवै घर खाती घणमावती भरबी सूं सटकायोड़ी पड़ी है। लैरी कैवी– थका आपेई बीरा लापण नै सुराक कठै ? बिराम-पिस्ता रो तो नांव ई लेवणो पाप है। घी-दूध म खोट सिवाय दूजी बात कोनी। बौपारी भलेई कित्ता ई इमानदार हुवो मेळ करयां बिना रैय ई नईं सकै। गारमिन्ट टैक्स सभा-समाय'र बौपारयां सूं धन भेळा करै अर वे आपानै लूटै। और कांई कर आपण ? पेट आळी पाटी तो बाबज सूं रैया। पण आ बौपारयां रै हका बखनी। मठै नईं तो ठाकुरजी रै भरै। घ जनता नै घी री जागा चर चुकावै। आजकल बीरा ! गिरी बार माल्या बळण लाग जाव– ओ सगळो बोटियै घी री मिलावट रो परताप है।

सेरी कदेई-सी'क ई हां में हां रळावे मई जद तो कैवे जिकी बात रो काट करणो सीख्योड़ो है। के कैसो- ई बामड़ा तो सरीर री मित्या काढ नांखी- 'तो आप बालर्ड री इमी पैरवी सरू करसी जाणै सोल एजंट आप ई है- म्हरे बालर्ड म विटामिन है ओ सीसमंथ इर्ध में बिना मेळ-सेळ रो मिले ई सूं घी री सगळी कम्या पूरी हुवे अो तो सुद्ध बनास्पती घी है गुणकारण रो तो इण में मवसैम ई कोनी।

वे हिरण कांधा हुवे जिसी डाकर बाजती हुवे सी सू मानखे रा हाथ-पाग सिरता हुवे म्हाया पछे टाबरिया रा दांत कट-कट बोलता हुवे अर पाणी बरफ बण र जमतो हुवे इमै मौसम म भी आप कैसो- मैरी आज तो सरदी मोकळी मायमी तो मैरी कैसी- कठै सी है सोवणो मौसम है- इया मेंप र कोट उतार देसी। चोकी ताळ मे कमीज खोल देसी अर एक गिजी में घूमण लाग जासी। कोई सोमावे तो मिजी भी खोलणो कोई बडी बात कोनी निरी बार खोल्या करै।

मम्बाई-कलकत्ते में बिना लिफ्ट वाळी माळे मयवा माड़ी मे जावण सू आप नै ताव चढ जावे। अो बीस मर बै पगोथिया। एक-एक पगोथियो गढ जीतण रै

बराबर है। पणो रगड़ो तो इण बात रो है के मोकळी बाड्यां री माळ इती साकड़ी हुवै के जद मैरी वडतो उतरती हुवै तो माळ में बीजो मिनख-लुगाई नईं मावै। मगळो रस्तो मैरी खातर खाली छोड़णो पड़। ऊपर मीचे सोग भेळा हुयोड़ा वेग-वेग'र हंसता रवै। दूबळा मरदास करै- 'भगवान! ज ई चरबी माय सू थोड़ी म्हांरै खानी भर देवतो तो म्हे भी मिनख दीसता माग आवता पर मरी रा बांभ सू मारो छूटतो। माळ खतम हुयां पछे जाग मैरी हियाळ री चढ़ाई करती हुवै ज्यू सगळां रै सामा जोवै। गामा मियाळ मे भी पसीनै सू धामायार हुजावै। माम फूल्योड़ा धाप-पूण चट सू आंवतो पाछो मागो टिकावै धाव तद धाप कामरी बात सब करण जोगा हुवै हापगी म चाड़ तो कैवणियो कैवे पर कांई सुणनिया सुण ?

इण कारण जिका घरां प्रथमा दफ्तरां में लिफ्ट साम्योड़ा है बठै ज घटा भर भी मडीकणो पड़ तो मैरी मे कबूल है पाम्नू हियाळै री चढ़ाई नीमू हुवै ?

मैरी जद मांचे मावे बैठै तो देखण वाळो जाणै कै ईग ऊरड़ा पाणा मावे ई जामी पण मैरी माव ताई कन्हैई दावण ई तोड़ी कोनी। हां, जाडी मूं जाडी ईंमां

पट्टी-मायली

कुण जाणै त थोंम्या फाटत बादल री गोद मायं'र हरी भरी करी ? कुण जाणै तू मायड री कूंखा भरी छाती सूं धरी धमक साथ पळगी नई हुयी ? कुण जाणे के तूं सात बीरा री सोनल बाई ही तो ?

कुण जाणे हरख कोड सूं गाजा-बाजै सूं थारो ब्याव हुयो तो ? कुण जाणै इसरी सगळा रो साथ छोड'र बाई सिध जासीए मेयम्मो टोळी माय सूं टाळ बोयसकी हर बासी ए' गावते-गावते मा रो गळो भरीजग्या हुय घर री मीन घपबीच म छोड दियो हुवे तो ?

कुण जाणे सासू-सुसरा मासरै रो सिणगार कर समसी हुवे तो ? कुण जाणे मान्हो-मो देवरियो एक पग रै ताण ऊभो हाजरी भरतो हो तो ? कुण जाणे मायडजी रै हिवड़े रो हार बण्योड़ी ही तो ।

कुण जाणै पाड़-पाड़ोसण्या री थापळ रो पधार ही तो ? कुण जाणे पटी म कोळा-बिरणज करणिया रै कोळां म ठक पुगावती तो ? कुण जाणे तू काई ही कुण जाणे तू कुण ही ।

मैं तने दिल्ली म मावस्टो बाईमराप रो सामली पट्टी माय देखी । दिल्ली री इसो बट-बळतो तावड़ा जिण रै डर सूं दुपारै सड़क माथै मूडा कावता काळजा काप तै सेण कर लियो हो । भाटा सूं चिण्योड़ी पट्टी माय दर्द मार्ग वठै तू बिना टाट-बोरी गीदी-गूदड़ो राली-सीरख हाथ भरती बैठी रैवती ऊपर छैया माड रो माव नई । तावड़ा सीधो थारै सगळै डील माथै पड़तो कारण डील बचण साक गामा भी थारै कनै हा नइ । पट्टी माळी ! मनै इचरज मा है कै इसी गरमी मू भी तू मरी किया कोनी !

दिल्ली म सियाळै रो सी भी लोका सू झालो कोनी । चेस्टर सू मेंम हुयोड़ा मैमसाब सायबजी सू लट'र हाल है तो ई सरदी सू मैळा-मैळा हुयोड़ा घर तू पट्टी माळी ! बिना गाभै सफा उघाड़ी इसै मी म इया मठी रैवती थारो डील काठ रो है ! काळो कूठ है प्राण बामरो !

थारै सामली पट्टी माथै मोची रवड़ रै टायर री चप्पल्या बणावता घर माकामस टुकड़ा-कातरिया उठनी बेळा बठैई छोड जावता । तू वानै भेळा करती घर घाधी रात हुया वानै बगाय'र बूणी रै सायेरै रात रो सी काटती । टायर रो घुमो थारी मास्या मे जावतो पेट म जावतो फेफड़ा मे काळा जमावतो पण पट्टीमाळी तोई !

तू मरी गाती !

थारो निमळो काळो डील जिको टायर र धुमें भर सूरज र तीख तावड़ सू पौर भी काळो हुयग्यो हो पामळया माय धम्योड़ी छातो धूनयोड़ी माथ ऊपर धाछा धाछा र गटा पण सगळा काळा धोळे रो काम नइ सनै कदई पल्सो बिछाया देखी नी ना तू कठैई मागण मै गई पण पट्टी मापसी ! फेर भी तूं किया कामा नै माड़ो दयनी था ठा नईं पडी ।

थार काळ कमा पर मवमाणी माथ्या सू हसी ठा पडती क थारी मोम्या तीस-पचीस रै नैड़ी ही पण फेर भी फ्लाफन हुमाश हजार मिनख-लुगाया रै सदर माथ कर निकळण पर भी थारा मन कनई दुनिया री जिमम्या दाल्नर थुसती नइ सगाया ।

सारली धर्मशाला मे थारी निग करण सार ई हु निम्सी गया पट्टी माळो ! कै तू कुण है । मालस्री रे सामनी पट्टी माथे पठे मरदाना पिसाबघर बिम्योड़ा है घठ थारी जागा तनै जोयी पण जद तूं माथी कोनी तो वठे मुगन बिड़ी लिया बैठ्यै एक मुगणी नै पूछ्यो कै पट्टी माळी कठै गयी । सामन इजिपसियन बैटरी माळे री दुकान माथै निगे करी मोम्या मै पूछ्यो मई बा टायर री

कातर भेजावती जिकी कठै गयी ? पण पट्टी मायली ! काई तनै मोळख मई सक्यो मर ना मनै सचळो दे सक्यो। मनै मोकळी मूबळ मायी कै तू मीवी जित मैं तनै मसू नी पूछ्यो ! जे पूछतो तो सायद तू सगळी बात सावळ बताय दयती कै तू कुण ही मर थारी इसी दसा किया हुयी। पण पद मे पूछ्यो कोनी तो भो दोस म्हारो है। बोर थारे सू तो हू इती ई माफी चाऊं कै थारो नाम मे पट्टी मायली राख्यो इण री रीस ना करे चावे तू इण लोक मैं है अथवा परलोक मे।

सबड़का-कोस

बिरखी=बडोडरो वृद्धि
बिलस्सी=प्रणसमस्त
बींमणी=बळ
बुवा मेंवता=धूमता
बूरिया=बाहु
बूबो=तारत
बेरडू=बालू रेत
देस=धीगा धक
बैरणी पूरपा=बिवमोडी दाढ़ बाल'र
    सगावोडी पूरपा
बेमेवा=परमसिगात
बेमी=बला
बैमी=बछखा री बव माडी रव
बोमा-बोमा=पूरपाव

भ

भवर बाई साव=राजा री बीमी
भबीड=टवार
भकाईनो=सकै मू
भणी=चमारी
भवा उरपोटी=हुवा बक्योडी
भर्वे=पाडर
भांप्यो=धड़बड़ायो
माडो=पत्थर
मावो=बैरो
मिडचे ई=घट
मिळगाळ=मिलनसार
मु बाप हू=भूमाम हू
मू डो=मराव माडो
मूत री डीवरी मे=चौबाट
मेळा=समै
मोगळ=(वारणो वरण बावर)
    मावळ

म

मठ मे बैठी मटका करे=घर मे बैठी
    बात बणावै
मरजादा परसोतम=मर्यादा पुरुषोत्तम
मसाणा=श्मशान
महराइगर=मर्मराहगर मसमसी
माडी=बीमबी बामबा लोक
माय मैसप्या=बायमपा
मा ई जावै जिसो=मावो
माईत=मां-बाप
मामना भवरावै=भैईजनी भरावै
मामको=मिमव लोर